UNIVERSAL LIBRARY

OU_180225

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H891 P66K

Accession No. G.H. 3167

Author पिल्लै, ना. स.

Title कवि - श्री भारती : तमिल 1962

This book should be returned on or before the date last marked below.

कवि-श्री माला

*** तमिल ***

कवि :

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

सम्पादक–अनुवादक

क. म. शिवराम शर्मा

"भारत सरकार की ओर से भेंट"

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री :
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण—३०००
मई, १९६२
मूल्य—रु. २/-
● ● ●

मुद्रक :
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस,
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा अपने कार्य कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी-गद्यानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निश्चय करना एक कठिन कार्य है, फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है, उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चुनाव किया गया है, उनका चुनाव करते समय सन् १९२० से पूर्वका साहित्य और १९२० से बादका साहित्य--इस तरहसे एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२० के पूर्वके तथा १९२० के बादके साहित्यमें प्रवाहित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका अलगाव-सा पाया जाता है।

श्री क. म. शिवरामजी शर्माने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यको चुनने, काव्यांशको सम्पादित तथा अनूदित कर सारी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। संग्रहकी आवरण डिजाइनको बनवा देनेमें श्री व्ही. एन. अडारकरजी (डीन, सर जे. जे. इन्स्टीटयूट आफ अप्लाईड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है, उसके लिए समिति सभीकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त छपाई तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे जिन-जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है, प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

मन्त्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

अनुक्रमणिका

पृष्ठांक

तमिल-साहित्य-परिचय [सन् १९२० से आज तक] १

कवि-परिचय २१

काव्य-सञ्चय ३३

कवि-श्री माला

तमिल

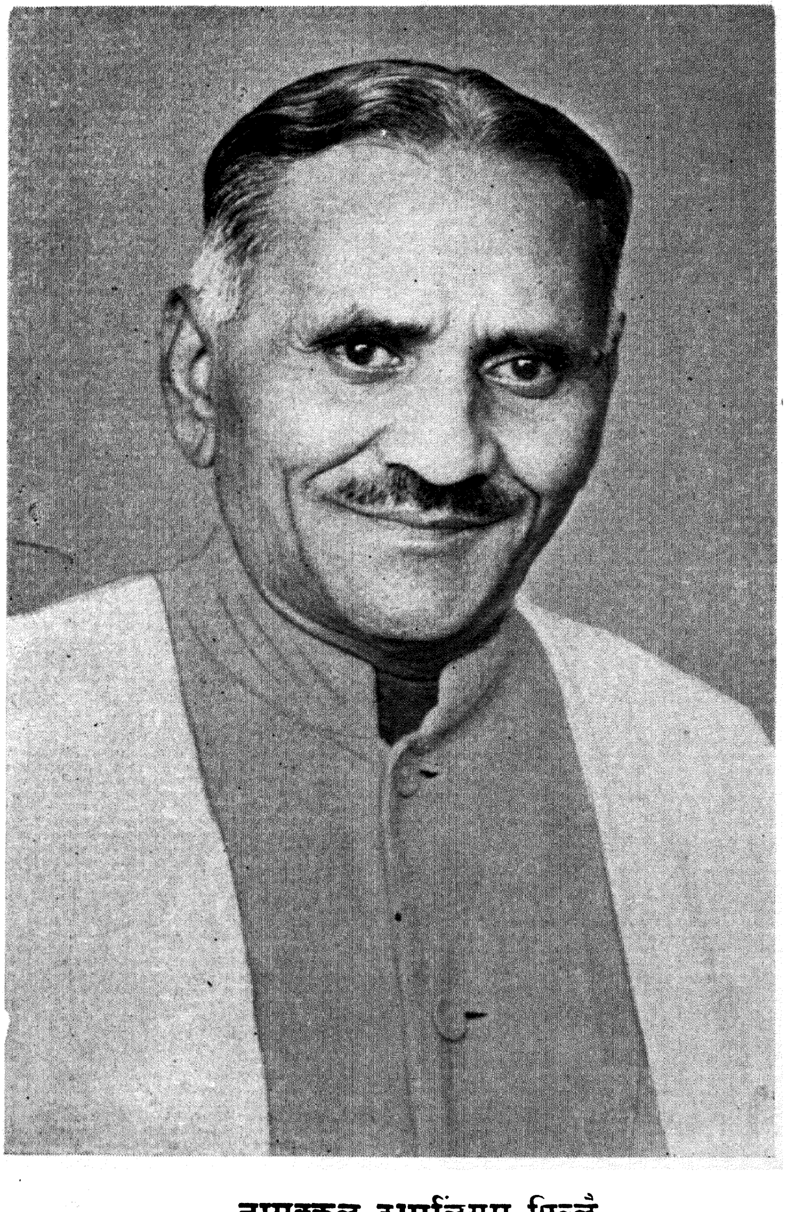

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

तमिल साहित्य परिचय

[१९२० से आजतक]

तमिल भाषा
और
उसका साहित्य

• • •

[प्रारम्भसे सन् १९२० तक के तमिल साहित्यका संक्षिप्त परिचय 'कवि-श्री माला : तमिल–सुब्रह्मण्य भारती' में दिया गया है।]

बीसवी सदीकी तीसरी दशाब्दीके आरम्भके साथ साथ दुनिया भरके इतिहासके एक नये युगका आरम्भ हुआ। सन् १९१४ ई. में यूरोपमें एक युद्धका आरम्भ हुआ। अमेरिकाको इस युद्धमें भाग लेना पड़ा और जापानने भी इसमें भाग लिया। इस युद्धका प्रभाव सारे संसारपर पड़ा। इस युद्धके बीचमें ही रूसमें महान विप्लव हुआ। जार नामक एकाधिकारी राजाका पतन हुआ और लेनिनके नेतृत्वमें साम्यवादियोंने शासनका भार उठाया। जर्मनीके कैसर नामक प्रबल राजाका पतन हुआ। अनेकों देशोंके राजा पद-च्युत हो गए।

इस युद्धका प्रभाव भारतपर भी पड़ा। सन् १९१५ में श्रीमती एनी बेसेण्टने "होम रूल" आन्दोलन शुरू किया था। करीब उसी समय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक छह वर्षके कारावासके बाद छूटे। उनका भी समर्थन पाकर श्रीमती एनी बेसेण्टके आन्दोलनने बहुत बड़ा रूप धारण किया। इसी समय दक्षिण आफ्रिकासे गाँधीजी भारत वापस आये। सन् १९१८ में उन्होंने हिन्दीके

प्रचारकी एक विस्तृत योजना बनाई। बंगालमें रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी कीर्ति बढने लगी और उनकी रचनाओंका प्रचार बढने लगा। इन सारी बातोंका परिणाम यह हुआ कि भारतकी सभी भाषाओंके लेखकोंका दृष्टिकोण बदलने लगा।

वैसे ही अँग्रजोंके आगमनके बाद भारतीय भाषाओंमें गद्यकी उन्नति बढ़ने लगी, इन सभी परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि भारतीय लेखकोंका ध्यान राष्ट्रीयता की ओर आकृष्ट हुआ। पुरानी भक्ति-धाराकी गति मन्द पड़ी और देश-भक्तिकी धारा तेजीसे बहने लगी। यही बात हम तमिल साहित्यमें भी पाते हैं।

तमिल साहित्यकी इस समयकी प्रवृत्तिका परिचय पानेके लिये उस प्रदेशकी एक और विशेषताका परिचय पाना आवश्यक है।

मोटे तौरपर यद्यपि तमिल प्रदेशमें भी चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—मान्य हैं, तो भी अन्य तीन वर्णोंकी अपेक्षा ब्राह्मणका एक विशिष्ट अस्तित्व रहा। बहुधा क्षत्रिय और वैश्य भी शूद्र कहलाए। ब्राह्मणोंने जीवनके सभी क्षेत्रोंमें अधिक उन्नति की थी; राजनैतिक क्षेत्रमें ब्राह्मणेतर इने गिने ही थे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वराज्यका आन्दोलन जब प्रबल होने लगा तब सरकारकी प्रेरणासे ब्राह्मणेतरोंका 'जस्टिस पार्टी" नामसे एक नया दल स्थापित हुआ। यह दल परिस्थिति-वश कुछ समय तक नाम मात्रके लिये ही सबल बना रहा। सन् १९३५ में यह दल काँग्रेस-दल द्वारा बुरी तरह परास्त हुआ और उसका अस्तित्व अब नाम मात्रके लिये रह गया। पर इस दलके प्रभावसे "द्रविड़ कषगम" की स्थापना हुई। "कषगम" का अर्थ है संघ (सभा)। इस संघका तमिल-साहित्यपर बहुत प्रभाव पड़ा।

करीब सन् १९२० तक सार्वजनिक क्षेत्रोंमें तमिल भाषाका प्रयोग बहुत कम होता था। लोग अँग्रजीमें बोलनेमें ही गौरवका अनुभव करते थे। संगीतकी भाषा भी अधिकतर तेलुगु ही थी। दक्षिण भारतमें प्रचलित संगीतकी शैली उत्तर भारतीय संगीतकी शैलीसे भिन्न है। दक्षिण भारतका संगीत "कर्नाटक संगीत" और उत्तर भारतीय संगीत "हिन्दुस्तानी संगीत" के नामसे प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक संगीतका प्रचार दक्षिण भारतके तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषा-क्षेत्रोंकी अपेक्षा तमिल भाषा-क्षेत्रमें अधिक था; फिर भी गीत तेलुगु भाषाके ही होते थे। प्रसिद्ध गीतकारोंकी रचनाएँ अधिकतर तेलुगुमें और कुछ संस्कृतमें रहा करती थीं। इस परिस्थितिका परिणाम यह हुआ कि लोग "तमिल गीतों" की माँग पेश करने लगे। 'संगीत सम्मेलन' की स्थापनाके परिणाम स्वरूप "तमिल संगीत सम्मेलन" की अलगसे स्थापना हुई। यद्यपि इस तरहका भेद-भाव बहुत लोगोंको बुरा लगा तो भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन आन्दोलनोंके कारण तमिल भाषाकी बहुत अधिक उन्नति हुई।

पश्चिमके सम्पर्कने भारतीय भाषाओंपर गहरा प्रभाव डाला। गद्य साहित्यकी धाराका एक नया मार्ग खुला। नये तरहके उपन्यास, कहानियाँ, जीवन-चरित्र यात्रा-वर्णन, आलोचनात्मक रचनाएँ आदिकी सृष्टि होने लगी। नये ढंगके नाटक रचे जाने लगे; कविका मुख्य विषय पहले विशेष रूपसे धार्मिक रहा करता था—अब वह नही रहा।

पहले हम गद्य-साहित्यको लें। प्राचीन कालमे न लिखनेकी सुविधा थी और न लिखित रचना की रक्षाकी सुविधा थी। यही कारण है कि हमारी भाषाओंमें गद्य-साहित्यका आधिक्य नही है। फिर भी यह निश्चित है कि प्राचीन कालसे ही तमिल भाषामे उत्कृष्ट गद्य-रचनाएँ हुई। इतस्तत. सघ कालीन गद्य-साहित्यका उल्लेख पाया जाता है। प्राचीन तमिल प्रान्तीय बौद्धो और जैनोंकी तमिल और संस्कृत मिश्रित "मणि प्रवाळ" शैलीकी गद्य-रचनाएँ प्रसिद्ध है। तमिलकी सबसे पुरानी रचना "तोल काप्पियम" की रचना चोल राजाओके कालकी है। आधुनिक शैलीकी प्रामाणिक गद्य रचनाका आरम्भ १६ वी सदीसे होता है। तमिल भाषाकी सर्व प्रथम छपी पुस्तक सन् १५५४ मे पुर्तगालकी राजधानी लिसबनमे छपी। सन् १५७७ मे कोल्लम (यह आजकल केरल राज्यके अन्तर्गत है) नामक नगर में छपी "तम्बिरान वणक्कम" नामक १६ पृष्ठोंकी पुस्तिका भारतमें मुद्रित सर्व-प्रथम तमिल-पुस्तक है।

अठारहवी सदीमे शिवज्ञान मुनिवर नामक शैव लेखकने "शिवज्ञान बोध" नामक काव्यकी टीका रची। उनके समकालीन बेस्की नामक ईसाई धर्म-प्रचारकने "वेदियर ओषुक्कम" नामक रचना की। उन्नीसवी सदीमे पाश्चात्य ढंगकी शिक्षाका आरम्भ हुआ। उसके लिए अनेक प्रकारकी पुस्तकोंकी आवश्यकता हुई। अतः अन्य भाषाओके साथ-साथ तमिलमें भूगोल, इतिहास, विज्ञान, गणित आदिकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। इस सदीमें मुद्रणालयों (छापाखानों) की संख्या भी बढी।

इस सदीके प्रमुख लेखकोमे रामलिग स्वामी एक है। आप प्रसिद्ध कवि थे और प्राचीन भक्त-कवि परम्पराके अन्तिम कवि माने जाते है। इनकी "मनु मुरै कण्ड वाचकम" और "जीव कारुण्य ओपुक्कम" प्रसिद्ध गद्य-रचनाएँ है। ताण्डव राय मुदलियार नामक लेखक संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तेलुगु आदि कई भाषाके विद्वान थे। इनकी 'कथा-मंजरी' नामक कहानियोंका सग्रह एक प्रसिद्ध रचना है। इन्होने 'पंचतन्त्र' का तमिल भाषामे अनुवाद किया था। "सभापति नावलर" ने "द्रविड प्रकाशिका" नामक पुस्तक रचकर साहित्यके इतिहासकी परम्परा चलाई। "वीरा सामी चेट्टियार" की 'विनोद-रस-मंजरी" एक प्रसिद्ध रचना है। इसमे कम्बन, औवै, पुगषेन्दि जैसे प्रसिद्ध प्राचीन साहित्य-कारोंका जीवन-वृत्तान्त पाया जाता है।

वेद नायकम पिळ्ळैने आधुनिक ढंगके "प्रताप मुदलियार चरित्तिरम" नामक सर्व प्रथम उपन्यास की रचना की। इन्हींका अनुकरण करके राजम अय्यरने 'कमलाम्बाल चरित्तिरम' नामक उपन्यास रचा।

बीसवीं सदीमें गद्य साहित्यकी बहुत अधिक उन्नति हुई। इस सदीमें साहित्यकी गतिमे भारी परिवर्तन तो हुआ ही, साथ साथ देशकी स्थितिमें और सामाजिक सगठनमे भी परिवर्तन हुआ। समाचार-पत्र, सिनेमा और रेडियोंके कारण जनताकी विचार-धारा बदल गई। इस सदीके पूर्व केवल पढे लिखे लोग ही साहित्यका आस्वादन कर सकते थे। रेडियो और सिनेमाके प्रभावसे अपढ़ लोगोंको भी साहित्यके रसास्वादनका अवसर प्राप्त हुआ। इधर जनतामे शिक्षाका प्रचार बढ़ने लगा और परिणाम स्वरूप पढ़े-लिखे लोगोंकी सख्या बहुत बढ़ी। इसलिए साहित्यका क्षेत्र सीमित न रहकर अब विस्तृत हो गया। विशेष रूपसे स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद जबसे वयस्क मताधिकार प्राप्त हुआ तबसे सामान्य जनताका ध्यान शिक्षाकी ओर तथा अन्य अनेक प्रकारके विषयोंकी ओर जाने लगा।

साहित्यके पुनरुद्धारका काम कई प्राचीन रचनाओंके प्रकाशनके साथ आरम्भ हुआ। इस क्षेत्रमे स्वर्गीय महामहोपाध्याय उ. वें. स्वामिनाथ अय्यरकी सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय हैं। आपने तमिल प्रदेश भरमें घूम-घमकर कई उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओंका पता लगाया; उन रचनाओंका प्रकाशन हुआ और कई लोगोंने उन प्राचीन रचनाओंकी सरल टीकाएँ लिखी। कई प्रकाशकोंने उन रचनाओंके सस्ते सस्करण निकाले। अँग्रेजीकी शिक्षा प्राप्त कई विद्वानोंने अँग्रेजी तथा अन्य भाषाओंकी उत्कृष्ट रचनाओंका तमिलमें अनुवाद किया। भाषाकी उन्नतिको ही अपना ध्येय मानकर कई संस्थाएँ खड़ी हुई और लेखकोंके संघ स्थापित हुए।

बीसवी सदीको तमिल गद्य-साहित्यका स्वर्ण-युग माना जा सकता है। इस समय देशकी परिस्थितिमे, समाज-रचनामे और साहित्यकी शैलियोंमे बड़े परिवर्तन हुए। पश्चिमी शिक्षा, विज्ञानकी प्रगति आदिके कारण पुरानी रूढ़ियों एव परम्परागत विश्वासोंका नाश होने लगा। पत्रिकाओं, आकाशवाणी और सिनेमाओंने जनतामे विचारकी एकता लानेमे सफलता पाई। राजनैतिक प्रचार, विभिन्न दलोंके सघर्ष, निर्वाचन आदिने सामान्य अपढ़ लोगोंको भी शक्ति-सम्पन्न कर दिया। इन परिस्थितियोंमे चिन्तन-धारा ही बदलने लगी। इस कालमें सामान्य साहित्यकी सर्जनाका उद्देश्य ही सामान्य जनहित रहा। रचनाओंमें सरलता, स्पष्टता और माधुर्यका आगमन हुआ।

तमिल प्रदेशका प्राचीन साहित्य ताड़ पत्रोंपर लिखा गया था। ताड़के पत्तेपर लौह-लेखनीसे लिखनेका क्रम तमिल प्रदेशमें यद्यपि बहुत कम होने लगा है तो भी अभीतक पूरी तरहसे समाप्त नहीं हुआ है। ताड़-पत्र सैकड़ों वर्ष सुरक्षित

रखा जा सकता है। ऐसे ताड़ पत्रोंसे ही स्वर्गीय महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरने प्राचीन तमिल महा-काव्योंका पता लगाकर उन्हें प्रकाशित किया था। उनके बाद अनेक विद्वान अन्यान्य रचनाओंकी खोजमे लगे। फलतः कई प्राचीनतम तमिल-ग्रन्थ प्रकाशित हुए। कई ग्रन्थोंकी भाषा जटिल होनेके कारण उनकी सरल सुबोध शैलीमे व्याख्याएँ एवं भूमिकाएँ लिखी गई। प्राचीनतम तमिल-काव्योके अनूठे दृश्योंको गद्यमें देकर पुस्तकके रूपमे प्रकाशित किया गया।

बीसवी सदीके आरम्भमें सी. वै. दामोदरम पिल्लैने कई प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। उ. वें. स्वामिनाथ अय्यरकी तरह श्री वैयापुरी पिल्लै नामक विद्वानने जीवनभर प्राचीन ताड़-पत्रोंकी खोज करके अनेक प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। प्राचीन काव्योंके टीकाकारोमें पिन्नत्तूर नारायण स्वामि अय्यर, ना. मु. वेंकटस्वामि नाट्टार, औवै दुरैस्वामि पिल्लै आदि प्रसिद्ध है। मु. कदिरेशन चेट्टियारने "तिरुवाचकम" नामक भक्ति-ग्रन्थकी टीका लिखी। आर. के. षण्मुखम चेट्टियारने नवीन रीतिसे शिलप्पधिकारम नामक प्राचीन महाकाव्यके "पुहार" नामक काण्डकी टीका रची।

कई विद्वानोंने प्राचीन संघ कालीन रचनाओंका संक्षिप्त सारांश लिखा है। ऐसे लेखकोंमे मु. वरदराजनार और कि. वा. जगन्नाथके नाम उल्लेखनीय है।

कई विद्वान लेखकोंने उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओके आधारपर तत्कालीन गतिविधियोंका परिचय कराया है। डाक्टर मु. वरदराजनारकी "तिरुवळ्ळुवर या जीवन प्रकाश", टी. पी. मीनाक्षि सुन्दरनार कृत "वळ्ळुवर-दृष्ट-देश और काम", रा. पि. सेतु पिल्लै कृत "ऊरुम पेरुम" (नाम और धाम), तथा पेरिय सामि 'दूरन' कृत 'भारति तमिष' आदि ऐसी रचनाएँ है।

समालोचना-साहित्यकी परम्परा प्रसिद्ध देशभक्त स्वर्गीय व. वें. सु. अय्यरने चलाई थी। अ. मुत्तु शिवन, अ. श. ज्ञान सम्बन्ध, रा. श्री. देशिकन, चिदम्बर रघुनाथ, आचार्य श्रीनिवास राघवन आदि उत्कृष्ट समालोचक है।

पत्र पत्रिकाओंमे सर्वोच्च स्थान "स्वदेश मित्रन" का है। सन् १८८२ ई. में जी. सुब्रह्मण्य अय्यर नामक प्रसिद्ध देश-भक्तने इस पत्रका आरम्भ किया था। इस पत्रको चलानेमें आपको असंख्य कठिनाइयाँ उठानी पड़ी। इसके बाद 'इन्दिया' नामक साप्ताहिक पत्र निकला। इसके सम्पादक सुब्रह्मण्य भारती थे। अपने राजनैतिक विचारोंके कारण यह पत्र तत्कालीन अँग्रेजी शासकोंके क्रोधका पात्र बना। इस पत्रके बाद भारतीने पाण्डिचेरीमें विजया, सूर्योदय, कर्म-योगि-आदि पत्र निकाले। पर कोई पत्र दीर्घ-कालीन न रहा।

सन् १८९६ में लोकोपकारी नामक साप्ताहिक पत्र निकलने लगा। शुरूमें इस पत्रमें केवल धार्मिक चर्चा रहती थी; पर सन् १९२२ मे श्री परलि. सु. नेल्लयप्पर इसके सम्पादक बने, तबसे उस पत्रमे राजनैतिक चर्चा भी होने लगी।

श्री नेल्लयप्पर तमिल प्रदेशके प्रसिद्ध पत्रकार है। आप स्वर्गीय कवि सुब्रह्मण्य भारतीके साथ थे। इस सदीके दूसरे दशकमें वी. ओ. चिदम्बरम पिल्लै नामक प्रसिद्ध देश भक्तने भारत और सिंहलके बीच स्वदेशी जहाज चलाकर देशभरमें स्वदेशी आन्दोलनका बल बढ़ाया था। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें सरकारके क्रोध का पात्र बनना पड़ा। इस सिलसिलेमें श्री. नेल्लय्यप्परको २० सालकी आयुमे कारावासका दण्ड भुगतना पड़ा। फिर पचास सालकी आयुमें आप गाँधीजीके आन्दोलनमे जेल गए। तमिल भाषाके प्रसिद्ध साहित्यकारके नामसे प्रसिद्धि प्राप्त स्वर्गीय रा. कृष्णमूर्तिको साहित्य-क्षेत्रमे लानेका श्रेय आप ही को है। आप अत्यन्त नम्र स्वभावके, मिलनसार और हँसमुख हैं।

सन् १९१६-१९१७ मे जब श्रीमती एनी बेसण्टका आन्दोलन जोरोंपर था तब 'देश भक्तन' नामक एक दैनिक पत्र निकला। तिरु वी. के. नामसे प्रसिद्ध श्री वी. कल्याण सुन्दर मुदलियार इस पत्रके सम्पादक थे। श्री मुदलियार मदरास के वेसली कालेजके तमिल भाषाके प्राध्यापक थे। राजनैतिक आन्दोलनमे भाग लेनेके उद्देश्यसे आपने प्राध्यापकका पद त्याग दिया। कुछ दिन इस पत्रका सम्पादन करनेके बाद आप इस पदसे हट गए। तब स्वर्गीय व. वें. सु. अय्यर इस पत्रके सम्पादक हुए। श्री अय्यर इग्लैण्डमे वीर सावरकरके साथी थे। सरकार आपको कैद करना चाहती थी, पर रूप और नाम बदलकर श्री अय्यर महोदय सरकारके पञ्जेसे बचकर पाण्डिचेरी आ पहुँचे। वहाँ अरविन्द बाबू और सुब्रह्मण्य भारतीके साथ रहने लगे। १९१९ मे जब नया शासन विधान अमलमे आया तब अँग्रेज सरकारने राजनैतिक कैदियोंको मुक्त किया। उस समय भारती और अय्यर पाण्डिचेरीसे मद्रास आ पहुँचे। इसी समय गाँधीजी सक्रिय राजनैतिक आन्दोलनमें भाग लेने लगे थे। अय्यरपर गाँधीजीका बड़ा प्रभाव पड़ा। आपने आतंकवादको छोड़कर गाँधीजीका अहिंसा और सत्यका मार्ग अपनाया।

'देश-भक्तन' पत्रका एक लेख आक्षेप जनक माना गया। परिणामतः सरकार पत्रपर कार्रवाई चलाने लगी। लेखके लिखनेमे या प्रकाशनार्थ पत्रमे स्थान देनेमे श्री अय्यरका हाथ नही था। फिर भी आपने घोषित किया कि सम्पादकके नाते सारा उत्तर दायित्व मै अपने ऊपर लेता हूँ। उन्होंने उस लेखके लेखकका पता बतानेसे भी इनकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उन्हें उस लेखको पत्रमे प्रकाशित करनेके कारण जेल जाना पड़ा।

उनके बाद कुछ दिनो तक परलि. सु. नेल्लयप्पर इस पत्रका सम्पादन करते रहे। उस समयकी राजनैतिक परिस्थितिमे यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका।

"देश-भक्तन" से अलग होनेके बाद श्री कल्याण सुन्दर मुदलियार (तिरु. वि. क.) ने 'नवशक्ति' नामक साप्ताहिक पत्र चलाया। कुछ समय तक 'कल्कि' नामक रा. कृष्णमूर्ति इस पत्रके उप-सम्पादक थे।

गाँधीजीके आन्दोलनके समय मद्रासमें 'स्वराज्य' नामक अँग्रेजी दैनिक पत्र स्वर्गीय आन्ध्र-केसरी टी. प्रकाशम्‌के संचालनमे चल रहा था। स्वर्गीय प्रकाशम्‌ने उस पत्रका तमिल संस्करण निकालनेका निश्चय किया। तमिल स्वराज्य दैनिक पत्रका सम्पादन पहले योगी शुद्धानन्द भारती करते थे। उनके बाद स्वर्गीय एम. एस. सुब्रह्मण्य अय्यर उसके सम्पादक हुए। तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितिमे स्वराज्यके दोनों संस्करण अल्पकालीन रहे।

तमिल प्रदेशके डाक्टर पी. वरदराजुलु नायुडु एक प्रसिद्ध देश-भक्त थे। आप एनी बेसण्टके होम-रूल आन्दोलनके समयमे ही प्रसिद्ध हो गए थे। आप "दाक्षिणात्य तिलक" कहलाते थ। आपका 'तमिल नाडु' साप्ताहिक पत्र बड़ा लोक-प्रिय था। कुछ समय तक डाक्टर नायुडुने इस पत्रका दैनिक संस्करण मद्रास शहरमे निकाला।

राजाजीने 'विमोचनम' नामक मासिक पत्र चलाया था। राजाजीने तिरुचेगोड़मे एक गाँधी-आश्रम भी स्थापित किया था और वहाँपर रचनात्मक कार्यक्रमका प्रबन्ध कर रखा था। उसी सिलसिलेमे मद्यपान निषेध सम्बन्धी आन्दोलनके लिए यह मासिक पत्र निकाला गया। राजाजी इसके सम्पादक थे और कल्कि कृष्णमूर्ति सम्पादन कार्यमे उनकी सहायता करते थे।

गाँधीजीके आन्दोलनके समय प्रकाशित होनेवाले "सुतंतिरशंगु" (स्वतन्त्र-शंख) नामक पत्रका लोगोंपर बहुत अधिक प्रभाव था। आठ पृष्ठोंका यह दैनिक पत्र पैसे-पैसेमे बिकता था। सरकारने कई बार इसको रोका। कुछ समय दबे रहनेके बाद यह शंख फिर मुखरित हो उठता था। इसमे प्रकाशित करनेके लिए बापूजी 'हरिजन' या 'नवजीवन' के लेखके प्रूफ पहले ही भेज दिया करते थे और वे लेख तमिलमे अनूदित होकर स्वतन्त्र-शंख मे प्रकाशित होते थे। कई नौजवान इस पत्रके सचालनमे बड़े उत्साहके साथ सहयोग देते थे। इन नवयुवकोंको सरकार खूब सताती थी। इस पत्रके कार्यालयमें एक भोजन-शालाका प्रबन्ध था। पत्रका जो कार्यकर्ता सरकारकी सजा पाकर जेल जाता उसके परिवारके खाने-पीनेका प्रबन्ध उस भोजन-शालामे होता था। अपने अल्प कालके जीवनमें इसने तमिल प्रदेशके लोगोंको बहुत अधिक प्रभावित किया था।

'मणिक्कोड़ी' नामक पाक्षिक पत्रका तमिल पत्र-साहित्यमे ऊँचा स्थान रहा। यद्यपि यह दीर्घ कालीन नही रहा तो भी नामी साहित्यकार इसके सम्पादक रहे। आनन्द बोधिनी, प्रचण्ड विकटन आदि कई वर्षोंसे साहित्यकी सेवा करनेवाले पत्र है।

तमिल पत्रकारोंमे श्री टी. एस. चोक्क लिंगमका बड़ा आदर-पूर्ण स्थान है। आप 'मणिक्कोड़ी" के सम्पादक थे। इसके बाद 'गाँधी' नामक साप्ताहिक पत्रके सम्पादक बने। इसके बाद 'दिन मणि' नामक प्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादक

बने। कुछ समय बाद इस पत्रको भी छोड़कर "दिनसरि" नामक दैनिक पत्र निकालने लगे पर यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। इस समय तमिल भाषाके आठ दस दैनिक पत्र है; इन सबमे "सुदेश मित्तिरन" (स्वदेश-मित्र) और "दिन-मणि" उच्च श्रेणीके है।

तमिल भाषाके कई साप्ताहिक पत्र है, पर सबमे अधिक लोकप्रिय साप्ताहिक 'आनन्द विकटन', 'कल्कि' और 'कुमुदम है। आनन्द विकटन बहुत पुराना पत्र है। करीब पचास वर्ष पूर्व उसका आरम्भ हुआ था। पर करीब तीस वर्ष हुए, श्री एस. एस. वासनने उसका सारा भार अपने ऊपर लिया। तबसे इस साप्ताहिक पत्रकी बहुत उन्नति हुई। उन्हें स्वर्गीय कल्कि कृष्णमूर्तिका सहयोग मिला। दस पन्द्रह वर्ष तक आनन्द विकटनका सम्पादन करनेके बाद कल्कि कृष्णमूर्तिने श्री. टी. सदाशिवनका सहयोग पाकर 'कल्कि' नामक साप्ताहिक पत्र शुरू किया।

यहाँपर 'कल्कि' नामकी कहानी बताना अप्रासंगिक होनेपर भी अनुचित नही मानी जाएगी। तमिल बर्णमालाके स्वरोमे ऋ अक्षर नही है। 'कृष्ण मूर्ति' शब्द 'किरुष्णमूर्ति" लिखा जाता है। 'रा किरुष्णमूर्ति' बहुधा अपने लेखोंमे अपना नाम "रा. कि." लिखा करते थे। आपकी पत्नीका नाम "कल्याणी" है। पत्नीके नामके प्रथमाक्षर 'कल्' और अपने नामका प्रथमाक्षर 'कि' जोड़कर वे अपने लेखोमे अपना 'कल्कि' नाम देने लगे'। यह नाम स्थाई हो गया और उनके नए पत्रका नाम भी यही हुआ।

'कलैमगळ' उत्तम श्रेणीका मासिक-पत्र है। इसके सम्पादक कि. वा. जगन्नाथन है। तमिल भाषामे अन्य अनेकों साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र निकल रहे है। इतना बतलाना अवश्य आवश्यक है कि शायद ही कोई भारतीय भाषा है जिसमे इतनी अधिक सख्यामे इतनी दक्षताके साथ पत्र प्रकाशित होते हों। विशेष महत्त्वकी बात यह है कि हर पत्रके ग्राहकोंकी सख्या भी बहुत अधिक है। तमिल पत्रोंकी एक और विशेषता यह है कि वे साहित्यकारों को खूब प्रोत्साहित करते है। 'कलैमगळ' पत्रकी ओरसे सर्वोत्तम उपन्यासकारको प्रति वर्ष १००० रुपएका पुरस्कार दिया जाता है। 'आनन्द विकटन' ने अभी कुछ महीनों पहले उत्तम नाटककारो और एकांकी-कारोंमे करीब पचीस हजार रुपए पुरस्कार रूपमे बाँटे थे। समय-समयपर पत्रिकाओंमे लघु-कथा, उपन्यास, नाटक आदि की स्पर्धाएँ चला करती है और अच्छी रकमोंका पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

"धर्मपुर आधीनम" नामक शैव मठका मुख पत्र मासिक "ज्ञान सम्बन्धम" तमिल और शैव धर्मकी उन्नतिके उद्देश्यसे चलाया जाता है। करन्दै तमिल सघका 'तमिष पोषिल" मासिक और मरै मलै अडिगळ नामसे प्रसिद्ध स्वामी वेदाचलका मासिक पत्र "ज्ञान सागरम" तमिल भाषाकी बड़ी सेवा कर रहे है।

कहानीकार तमिलमें अनेक है। हर एककी अपनी अपनी विशेषता है। यह कहना कठिन है कि कौन सर्व-श्रेष्ठ कहानीकार है।

स्वर्गीय श्री. व. वें. सु. अय्यर ही आधुनिक ढगकी कहानियोंके सर्व प्रथम लेखक है। आपकी "कुळत्तंगरै अरशमरम" (तगड़ा तीरका पीपल) आदि कई कहानियाँ प्रसिद्ध है। अन्य कहानीकारोंमे कु. प. राजगोपालन, बी. एस. रामय्या, सोमु, दूरन, विन्दन, जेगशिर्पियन, की. वा. जगन्नाथन, तं. ना. कुमार स्वामी, ति. ज. रा., बी. एम. कण्णन, आरुमुगम, गुह प्रिया आदि प्रमुख कहानीकार है। हास्य-रसात्मक कहानियाँ लिखनेमे कल्कि, सुकि, नाडोडि आदि प्रसिद्ध है। एल. एस. रामामृतमकी तत्त्वार्थ-पूर्ण कहानियाँ प्रसिद्ध है। राजाजीने अपनी राजनैतिक कहानियोंसे तमिल-साहित्यकी सेवा की है। अखिलनकी कहानियोंका हिन्दी, उर्दू, कन्नड़, तेलुगु, अँग्रेजी आदि भाषाओंमे अनुवाद हुआ है। 'पुदुमैपित्तन' नामक कहानी-कारने 'मोपासाँ' नामक फ्रांसीसी कहानीकारकी शैलीपर कहानियाँ लिखी है।

तमिल भाषाका सर्व प्रथम उपन्यास वेदनायकम पिळ्ळैका 'प्रताप मुदलियार चरित्तिरम' है। इनके बाद बी. राजम अय्यरने 'कमलाम्बाल चरित्तिरम' और पी. माधवय्याने 'पद्मावती चरित्तिरम' नामक उपन्यास लिखा। वडुवूर दुरै-स्वामी अय्यंगार, आरणी कुप्पुस्वामि मुदलियार और कोदैनायकि अम्मालने अनेक उपन्यास लिखे है। पर इन उपन्यासोंमे जीवन-तत्त्व-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इनको अँग्रेजीके रेनाल्ड्सके उपन्यासोकी अथवा हिन्दीके चन्द्रकान्ता, भूतनाथ जैसे उपन्यासोंकी श्रेणीके मान सकते है। अखिलन, बी. एम. कण्णन, लक्ष्मी आदि के उपन्यासोमे जीवनका सजीव वर्णन है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखनेकी परम्परा तमिल साहित्यमें स्वर्गीय कल्किने चलायी। 'शिवकामियिन शपथम्, 'पोन्नियिन शेल्वन' आदि इसी कोटिके उपन्यास है। बगला, मराठी, हिन्दी आदि भाषाओंके उत्कृष्ट उपन्यासोंका अनुवाद तमिलमे हुआ है। ऐसे अनुवादकारोंमें का. श्री. श्री. और तं. ना. कुमार स्वामि प्रमुख है। डाक्टर मु. वरदराजनार और कु. राजवेलु नई शैलीके उपन्यासकार है।

जीवन-चरित्र :

इस सदीमे तमिल भाषामे जीवन-चरित्र सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। डाक्टर महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरने सरल शैलीमें अपने गुरु मीनाक्षिसुँदरम् पिल्लैकी विस्तृत जीवनी लिखी है। डाक्टर मु. वरदराजनारने महात्मा गाधी, रवीद्रनाथ ठाकुर और बर्नार्ड शा आदिकी जीवनी लिखी है। अब्दुल रहीमने कई विदेशी विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी है। चिदम्बर रघुनाथका "पुदुमै पित्तनकी जीवनी, प्रसिद्ध देशभक्त नेता म. पो. शि. कृत 'कप्पलोट्टिय तमिषन' तथा 'वीर पाण्डिय कट्ट बोम्मन और न. संजीवी कृत 'मरुदिरुवर'

की जीवनी प्रसिद्ध है। अनवरत विमायकम पिल्लै और सोमसुंदर देशिकरने कई तमिल विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी है।

आत्मचरित्र सम्बन्धी भी कई पुस्तके तमिलमे लिखी गई है। डाक्टर महा-महोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरका "एन चरितै", (मेरा चरित्र) नामक्कल राम-लिगम पिल्लैका 'एन. कदै' (मेरी कथा), स्वर्गीय टी. एस. एस. राजनका "निनैवु अलैगळ" (स्मृति की लहरे) और तिरु. वि. क. का "वाषकै कुरिप्पु-गळ" (जीवनकी घटनाएं) प्रसिद्ध है। अन्य भाषाओंके प्रमुख आत्म-चरित्रोंका अनुवाद भी तमिलमे हुआ है।

रेडियोने तमिल भाषाकी बडी सेवा की है। समय समयपर रेडियोपर नाटक खेले जाते है। ये नाटक रेडियोपर दृश्य-काव्य न रहकर श्रव्य मात्र हो जाते है। कई विद्वानोके आलोचनात्मक भाषण हुआ करते है।

नाटक-साहित्य :

प्राचीन तमिल-साहित्यमे काव्यके तीन भेद माने गए है "इयल", "इशै" और "नाडगम"। इनको मोटे तौरपर हम छन्द, गीत और नाटक मान सकते है। प्राचीन तमिल साहित्यमे नाटक सम्बन्धी कई विस्तृत रचनाएँ पाई जाती है। आज केरलकी प्रसिद्ध "कथकळि" का वर्णन प्राचीन तमिल साहित्यमे पाया जाता है। दक्षिणकी कन्नड, तेलुगु, तमिल और मलयालम चारों भाषाओंका मूल स्रोत एक ही है। इनमें तमिलको छोड़कर अन्य तीनों भाषाओंने संस्कृतको अधिक उदारताके साथ अपनाया। मलयालम और तमिल करीब एक हजार वर्ष पूर्व तक अभिन्न मानी जाती थी।

पल्लवकालके बाद महाराजाओके चरित्रके आधारपर रचित कई काव्य-मय नाटक खेले गए। "राज राज विजयम" एक ऐसा नाटक है जो तजौरके प्रसिद्ध मन्दिरमें खेला गया। कुलोत्तुंगचोळ नाडगम" एक ऐसा ही और नाटक है। सन् १११९ ई. मे कमलाय भट्टरने "पूम्बुलियूर नाडगम" नामक नाटक रचा। अन्य अनेक नाटकोंका उल्लेख पाया जाता है। पर वे नाटक उपलब्ध नही हैं। इतना निश्चित है कि खेलके योग्य नाटकोंकी रचनाएँ दसवी सदीके पहले ही होने लगी थीं।

प्राचीन कालमे नृत्य भी एक प्रकारका नाटक ही माना गया था। केरल प्रान्तीय कथकळि सचमुच मूक नाटक है। मद्रास शहरके अड्यार नामक मोहल्लेमें श्रीमती रुक्मिणी अरुण्डेलने कलाक्षेत्र स्थापित किया है जहाँ नृत्य और संगीतकी शिक्षा दी जाती है। नृत्यमें "कुट्राल कुरवजि" नामक विशेष प्रकार का नृत्य वहाँ सिखाया जाता है। इस कुट्राल कुरवंजीकी रचना त्रिकूट राजप्प कविरायरने सत्रहवीं सदीमे की थी। इसकी गिनती तमिलके नाटक साहित्यमे होती है। ऐसे ही

नोण्डिनाटक और मुक्कूडर पळ्ळु नामक नृत्य-विशेष नाटक साहित्यमे के अन्तर्गत है। इन नाटकोंमे सामान्य जनताका जीवन बड़ी खूबीके साथ चित्रित हुआ है।

अरुणाचल कविरायर कृत 'राम नाटक', रामचद्र कविरायर कृत 'भारत विलासम' और "शकुन्तला विसालम" तथा गोपालकृष्ण भारतीयार कृत "इयर्कै नायनार" अठारहवी सदीके प्रसिद्ध नाटक है। इन नाटकोंकी शैली गीति-काव्य शैली है।

उन्नीसवी सदीमे करीब ५०० नाटक रचे गए जिनमे सौ छपे हुए है। इन नाटकोके चार विभाग माने जा सकते है। १. काल्पनिक "मदुरै वीरन विलासम", "आरवल्ली शूरवल्ली नाटक", "नल्लतगा नाटक", "कात्तव-रायन नाटक", "पवळक्कोडि नाटक", "सावित्री नाटक", "मीनाक्षी नाटक", "वळ्ळी नाटक" आदि इस श्रेणीके नाटक है। इन नाटकोंकी कथा-वस्तु कल्पित है। अन्तिम तीन नाटकोमे स्त्रीकी महिमाका वर्णन हुआ है।

२ पौराणिक नाटक : इस श्रेणीके नाटक "श्री महाभारत विलासम", "हरिश्चद्र विलासम", "शकुन्तला विलासम", "नल दमयन्ती नाटकम", "द्रौपदी वस्त्रापहरण", प्रल्हाद चरित्र, आदि है। तमिलके "पेरिय पुराणम" तिरुविळैयाड पुराणम आदि पुराणोंके आधारपर भी नाटक रचे गए है।

३ ऐतिहासिक नाटक:—इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों या घटनाओं पर आधारित नाटक "शोष विलासम" "देशिग राज नाटकम" आदि है। श्री टी. लक्ष्मण पिल्लैका "रवि वर्मन" नामक नाटक भी इसी श्रेणीका है।

४ सामाजिक नाटक: इन नाटकोमे समाजमे प्रचलित बुरी प्रथाओं पर प्रकाश डालकर समाज सुधारकी आवश्यकता बताई गई है। काशी विश्वनाथ मुदालियार कृत नाटक ब्रह्म समाजके सिद्धान्तोके प्रचार की दृष्टिसे रचे गए थे। इनका रचा हुआ "डम्बाचारी विलासम" नामक एक नाटक है जिसमें वेश्याओंके जालमें पड़कर बरबाद होनेवाले धनिकोंका सुन्दर चित्रण हुआ है। यही सर्व प्रथम सामाजिक नाटक माना जाता है।

अँग्रेजी शिक्षाके प्रचारके साथ साथ तमिल लोगोंका ध्यान अँग्रेजी नाटकोंकी ओर गया। इनमे शेक्सपियर के कई नाटकोंका तमिलमे, अनुवाद हुआ। मालूम पड़ता है कि उस प्रसिद्ध नाटककारका 'सिम्बलीन' नामक नाटक तमिल विद्वानोंको बहुत पसन्द आया। जलज लोचन चेट्टियारने इस नाटकका "सर-सांगी" नामसे और लक्ष्मण पिल्लैने सत्यवती नामसे अनुवाद किया है। शंकर दास स्वामीने भी इस नाटक का अनुवाद किया है।

आचार्य सुँदरम् पिल्लैने लार्ड लिट्टन कृत "गुप्त मार्ग" (The Secret way) नामक कथा पर आधारित "मनोनमर्णीयम" नामक नाटक रचा। यह खेलनेके उद्देश्यसे नहीं लिखा गया, इसमें काव्यकी सारी विशेषताएँ पाई जाती हैं।

तमिलमें कई संस्कृत नाटकोंका भी अनुवाद हुआ है। वी. के. सूर्य-नारायण शास्त्रीने ऐसे कई नाटकोंका अनुवाद किया है। उन्होंने नाटक शास्त्रपर एक पुस्तक लिखी है। उनके 'रूपावती' और 'कलावती' नामक दो स्वतन्त्र नाटक भी है। इनकी रचनाओंकी भाषा स्वाभाविक और सरल नही है। उसमें कुछ कृत्रिमता है।

शकर दास स्वामी उन्नीसवीं सदीके प्रसिद्ध नाटककार थे। उन्होंने कई प्राचीन नाटकोंका सम्पादन किया। कई स्वतंत्र नाटक लिखे; कई नाटक-मण्डलियोके मार्ग-दर्शक रहे और स्वयं नाटकोंमे भाग लिया करते थे।

पम्मल सम्बन्ध मुदलियार तमिल भाषाके बहुत प्रसिद्ध नाटककार है। अभी हालमें सरकारने तथा तमिल भाषा-भाषी जनताने इस अस्सी वर्षसे अधिक आयुके नाटककार का अभिनन्दन किया था। पिछले पैसठ वर्षोसे आप नाटकोंकी रचनाएँ कर रहे है। इन्हीकी प्रेरणासे सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर, वी. सी. गोपाल रत्नम, स्वर्गीय आर. के. षण्मुखम चेट्टी, स्वर्गीय सत्यमूर्ति जैसे सज्जन नाटककी ओर आकृष्ट हुए और नाटक खेलनेमे कुशल कलाकार हुए। इन्हीके प्रयत्नोंसे मद्रासमे नाटक-कला-समर्थक सुगुण विलास सभा नामक प्रसिद्ध सस्था स्थापित हुई।

आधुनिक तमिल नाटक-साहित्यकी चार अवस्थाएँ मानी गई है: १. पश्चिमका अनुकरणकर गद्यात्मक नाटक रचना; २. उत्कृष्ट काव्यात्मक नाटक रचना (जैसे मनोन्मणीय नाटक); ३. नाटक शास्त्रपर आधारित नाटकोंकी रचना और ४. नाटक लिखनेके बाद स्वयं उसका अभिनय करने के उद्देश्यसे नाटक रचना।

इधर राजनैतिक आन्दोलनके समर्थनमें कई नाटक रचे गए। कदरिन वेट्रि (खद्दरकी जीत), देशीय कोड़ी (राष्ट्रीय झंडा), बम्बई मेल, आदि ऐसे नाटक है।

सुदूर दक्षिणके तिरुनेल्वेली जिलेमे अठारहवीं सदीमें कट्ट बोम्मन नामक एक वीर देश-भक्त हुआ जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनीका विरोध कर मृत्यु दण्डकी सजा पाई। उसके चरित्रपर आधारित "वीर पाण्डिय कट्ट बोम्मन" नामक नाटक आज कल बड़ा लोकप्रिय बना हुआ है।

सामाजिक बुराइयोंकी ओर ध्यान आकृष्ट करनेवाले कई नाटक रचे गए है।

एकांकी नाटकोंकी भी तमिल भाषामें बहुत अच्छी उन्नति हुई है। अभी पिछले सितम्बर (१९६१ ई) में मद्रासके प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र आनन्द विकट ने नाटक साहित्यपर २५००० रुपएका पुरस्कार वितरण किया। नाटकपर रु. १२,५००, और ५०००) तथा २५००) के तीन पुरस्कार और एकांकी नाटकपर रु.

२५००, रु. १५०० और रु. १००० के तीन पुरस्कार दिये गए। प्रतिवर्ष विभिन्न केन्द्रोंमे कई प्रदर्शिनियाँ होती है और हर प्रदर्शनीमें नाटकका कार्यक्रम अवश्य रहता है।

कविताएँ :

महाकाव्य और खण्डकाव्यके समान तमिल काव्यके पेरुङ्गाप्पियम और शिरु काप्पियम नामक दो भेद माने गए है। पेरुङ्गाप्पियममें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका प्रतिपादन रहता है; ईश वन्दना, नम्रता-प्रदर्शन या आगके विषयका परिचय इन तीनमेसे एकके साथ काव्यका आरम्भ होता है। इसमें पहाड़, समुद्र, देश और नगरका वर्णन रहता है। इसका नायक उत्तम श्रेणीका होता है और उसके महान् कार्योका काव्यमे विस्तृत वर्णन रहता है। शिलप्पधिकारम, कम्ब रामायण आदि पेरुङ्गाप्पियम है।

ऊपर्युक्त चार पुरुषार्थोमे जहाँ एक या अधिकका लोप हो वह शिरु-काप्पियम है।

शिरुकाप्पियम अनेक प्रकारके है। जैसे आट्रुप्पडै, कलम्बकम, उला, परणि, पिळ्ळै तमिल, पळ्ळुप्पाट्टु और कुरवञ्जि।

आट्रुप्पडै काव्यका विषय यह रहता है कि संकटमें पड़े दानीसे दान प्राप्त करनेवाला कैसे अर्थाकांक्षीको समझाता है कि कहाँ कैसे जाकर किससे क्या पाया और उसको भी वैसे ही दान प्राप्त करनेका मार्ग दिखाता है।

'कलम्बकम' शब्दसे मिलावटका बोध होता है। इसमे अनेक प्रकारके छन्दोमे अनेक प्रकारके विषयोंका प्रतिपादन होता है।

उला नामक काव्यमे यह बताया जाता है कि विद्वत्ता, धन, पौरुष, प्रेम दान आदि गुणोंसे युक्त नायकके टहलने निकलने पर कैसे अनेक युवतियाँ उससे प्रेम करने लगती है।

परणि नामक काव्य करीब करीब हिन्दीके रासोके समान है। कहा गया है कि युद्धक्षेत्रमे एक हजार हाथियोंको मारकर विजय पानेवाले वीरका यश गाने वाला लघु-काव्य परणि है।

पिळ्ळै तमिष मे शिशुओंका वर्णन रहता है। इसमे नायकके बचपनका वर्णन रहता है। इस काव्यको "पिळ्ळै पाट्टु" या "पिळ्ळै कवि" भी कहते है। प्रसिद्ध वैष्णव भक्त-कवि पेरियाल्वारकी रचनाओंमे शिशु लीलाका बहुत सुन्दर वर्णन पाया जाता है। कही कही तो श्री कृष्णके बचपनके वर्णनमे सूरदासके और पेरि-याल्वारके पद एक दूसरेके भाषान्तरसे प्रतीत होते है।

पळ्ळुपाट्ट किसान-गीत है। इसमें किसान और उसकी दो पत्नियोंके बीचमें पैदा होनेवाले संघर्षोका वर्णन रहता है।

उत्तर भारतके 'बनजारा' के समान दक्षिण तमिल प्रदेशका 'कुरवन' होता है। "कुरवञ्जि" काव्य मे "कुरत्ति" (बनजारिन) के वियोगिनी (विवाहके पूर्व नायकका गुणगान सुनकर उसीको पति बनानेका निश्चय करके उसके वियोगमे दुखी रहनेवाली) की हथेली देखकर उसे आश्वासन देनेका वर्णन रहता है।

आधुनिक काव्य-धारामे यद्यपि ऊपर वर्णित शैलियोंका अभावसा पाया गया है तो भी यह नही कहा जा सकता कि य शैलियां एकदम उठ गई ह। कहा जा सकता है कि कम्बके बाद तमिल भाषामे कोई महाकाव्य रचा नही गया। पर कवियोंकी कोई कमी नही रही। उन लोगोंका वर्णनीय विषय या तो ईश्वर या कोई राजा महाराजा होता था। अधिकतर कवियोंका उद्देश्य धनार्जन था। बीसवी सदीके पूर्वके इन कवियोंकी परम्पराओंके आधारपर दो श्रेणियां थीं, प्राचीन परम्पराके अनुगामी और नवीन मार्गके अनुगामी।

अठारहवी सदीके तायुमान स्वामी, शिवज्ञान मुनिवर, कच्चियप्पर आदि प्राचीन परम्पराके कवि थे। तायुमान केवल अपना उद्धार नही, जीव मात्रका उद्धार चाहते थे। ईश्वरसे उनकी प्रार्थना थी कि दैव सभी जीवोंको मेरे ही जीव सम मानकर उन सब पर दया करे। भगवानकी पूजा करने फूल तोड़ने जाते है तो उन्हें मालूम पड़ता है कि ईश्वर की ही बनाई ओसकी बूंदसे अलंकृत सुन्दर पुष्प भी ईश्वरका बनाया जीव ही है और फूल तोड़ बिना ही वापस चले जाते है। अब वे अपना ही फूल रचते है :—

नेञ्जमें कोइल, निनैवे सुगंदम, अन्बे।
मञ्जन नीर पूशै कोळ्ळ वाराय परापरमे॥

"हे ईश्वर, मन ही मंदिर है, चेतना ही सुगंध है, प्रेम ही पवित्र जल है, पूजा ग्रहण करने आओ।"

उन्नीसवी सदीके मीनाक्षि सुंदरम पिळ्ळै, रामलिंग अडिगळ, आदि भी प्राचीन परम्पराके कवि है।

यद्यपि बीसवीं सदीमे कविताका एक नया ही दृष्टिकोण देखनेमे आता है तो भी प्राचीन परम्परा बराबर चली ही आती है। रामनाथपुरमके स्वर्गीय रा. राघव अय्यंगार ऐसे ही एक कवि है। उनकी "पारिकथा", "शाकुन्तलम" आदि प्रसिद्ध रचनाएँ है। उन्होंने भगवद्गीताका पद्यात्मक अनुवाद किया था।

वी. पी. सुब्रह्मण्य मुदलियार, सोमसुन्दर भारती आदि इस सदीके प्राचीन परम्पराके कवि है।

प्राचीन परम्पराके कवियोंका उद्देश्य अपना पाण्डित्य प्रदर्शन मात्र था। उनकी कविताओंका रसास्वादन पढ़-लिखे लोग ही कर सकते थे। जब से पाश्चात्य लोगोंका सम्पर्क बढ़ा तबसे लोगोंका ध्यान सामान्य जनताकी ओर जाने लगा।

जनताकी भाषामें जनताके ही विषयको लेकर रचनाएँ होने लगीं। इसीका परिणाम यह हुआ कि पळ्ळु, कुरवंचि आदि साहित्यकी रचना होने लगी। यह परम्परा सत्रहवी सदीसे ही चलने लगी। उन्नीसवीं सदीके वेदनायकम पिल्लै इस परम्पराके प्रमुख कवि है। आधुनिक ढंगके सर्व प्रथम उपन्यास "प्रताप मुदलियार चरित्तिरम" की रचना आपने ही की थी। वे ईसाई थे। उनके विचारोंपर अन्य उत्कृष्ट कवियोंका प्रभाव पड़ा था।

कैयिले नाम पिडिप्पदु जप मालै।
पक्कात्तिल वैप्पुदुवो कन्नक्कोलै॥
मेय्यागत्तिनम पडिप्पदु वर्म नूलै।
मेलुम मेलुम नमक्कु दुन्मार्क्कवेलै॥१॥
ओरु पेण वेण्डाम एन्रु कोळवोम सन्नियासम।
ऊरिल उळ्ळ पेण्गळ मीदेल्लाम नेशम॥
परुगप्पशि इल्लाद पोदुपवासम।
पशित्ताल ओरु पानै परुक्कैक्कु नाशम॥२॥
उळ्ळत्तिन अषुक्कै एन्नाळुम कषुवोम।
उडलै कषुव नीरिल अडिक्कडि विषुवोम॥
कळ्ळत्तन मागच्चन्निदिमुन्ने अषुवोम।
काशुक्कु नायैयुम कै कट्ट तोषुवोम॥३॥

[हाथमे तो हम जप-माला ग्रहण करते है पर बगलमे रखते है सेंध लगानेके औजार। यद्यपि धर्मग्रन्थोंको पढ़ते है फिर भी हमारी कुमार्गी प्रवृत्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है॥१॥

एक स्त्री पसन्द नही आई तो संन्यास ग्रहण कर लिया; पर प्यार करने लगे नगर भरकी स्त्रियोंसे। जब भूख नही लगती तब तो उपवास कर लेते है और जब भूख लगती है तब खूब खा लेते है॥२॥

मनका मैल कभी दूर नहीं करते पर तनका मैल दूर करनेके लिए बार-बार पानीमे डुबकियाँ लगाते है। विग्रहके सामने तो फूट फूटकर रोते है पर एक-एक पाईके लिये गए बीतेके सामन भी हाथ जोड़कर गुलामी करते है॥३॥]

इस बीसवी सदीके चार महान् कवि सुब्रह्मण्यम भारती, भारतीदास, कवि मणि देशिक विनायकम् पिल्लै और नामक्कल रामलिंगम पिल्लै है। इनमें भारती की चर्चा अन्यत्र हो ही चुकी है। नामक्कल रामलिंगम पिल्लैकी चर्चा इसी पुस्तकमें आगे होगी। इनके अतिरिक्त "भारतीदास" क्रान्तिकारी कवि है। इनकी एक उत्कृष्ट रचना है "पुरट्चि कवि" जिसका अर्थ है "क्रान्तिकारी कवि"। इस रचनाके आधारपर इनका नाम ही क्रान्तिकारी कवि पड़ गया। इनकी रचनाएँ है—"संजीवि

पर्वंदत्तिन सारल" (संजीव पर्वतका साबु) सुतंततिरम (स्वतंत्रता) सहोदरत्व आदि साम्यवादी कविताएँ और "एदिरपारा मुत्तम" (अप्रत्याशित चुम्बन) इरण्डुवीडु (दो घर) कुटुम्ब विळक्कु (कुटुम्बका दीपक) अषगिन शिरिप्पु (सौन्दर्यका हास्य) तमिषच्चियिन कत्ति (तमिल-स्त्रीकी तलवार) आदि खण्ड काव्य।

सुब्रह्मण्य भारतीकी प्रेरणापर इन्होंने "एंगगु काणिनुम शक्तियड़ा" (जिधर देखा उधर शक्ति है रे) नामक कविता रची—तभीसे इनका भारतीदास नाम पड़ा।

कविमणि देशिक विनायकम पिल्लैका तमिल काव्य-जगत्मे महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाओंसे उनके सरल एवं कोमल हृदयका परिचय प्राप्त होता है। उनकी कई प्रकारकी रचनाएं हैं। पर उनके बाल गीत अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं। ये गीत बड़े सरल, मधुर और कोमल होते हैं।

दाहमेन्रु वन्दोर्कु तण्णीर अळियामल
आहमंगळ ओदि निट्रल अषगामो? अरमामो?
शार्वियिट्टु पूट्ट मिट्टु चन्निदियिल कावलि ट्टु
देवी इरुक्कुम कोइलै नीर शिरैचालै याक्कलामो?

[प्यासेको पानी तो नही दे पर वेदोका पठन करता रहे, यह क्या शोभाकी बात है? क्या यही धर्म है? चाभी लगाकर ताला बन्दकर दे और पहरेदार नियुक्त करे और यों देवीके वास-स्थल मन्दिरको कारागार बना दे, क्या यह ठीक है?]

इनकी एक और रचना "आशिय ज्योति" (Light of Asia) है। यह अँग्रेजी काव्यके आधारपर रची गई है। इन्होंने उमर खय्यामके (अँग्रेजी अनुवाद) काव्यका अनुवाद किया है।

वेय्यिर केट्र निषलुण्डु
वीशुम तेन्रर काट्रुण्डु।
कैयिर कम्बन कवि युण्डु
कलशम निरैय मदुवुण्डु।
दैवगीतम पा उण्डु
तेरिन्दु पाडा नी युण्डु।
वैयम तनि लिव्वन मिन्नि
वाषुम स्वर्गम वेरुळदो?

[धूपके अनुकूल छाया है; मलय-मारुतका बहाव है; हाथमें कम्बन (प्रसिद्ध तमिल कवि) का काव्य है; कलशा भर मधु है; मधुर राग युक्त दैवी गीत है और समझ कर गानेवाली तू है; इन सबसे बढ़ संसारमें क्या कोई स्वर्ग है?]

कविमणिकी कविताएँ संगीत मय है।

इस सदीके कुछ अन्य कवियोंका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है :

कम्बदासन : इनकी कविताओंमें गतियुक्त भाव भरा हुआ है। हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय और कवि मणि देशिक विनायकम पिल्लैने इस कविकी बड़ी प्रशंसा की है। इनकी शैली भारतीदासकी अनुवर्तिनी है।

वाणिदासन : ये भी भारतीदासकी शैलीपर लिखने वाले कवि है। तमिषच्चि, कोडिमुल्लै, तोडुवानम, एषिलोवियम आदि इनकी रचनायें है।

अषगरशन भी भारतीदासकी परम्पराके कवि है। आकर्षक शब्द-सञ्चय और उत्साहवर्धक कल्पनाएँ इनकी कविताओंकी विशेषताएँ है।

योगी शुद्धानन्द भारतीका स्थान आधुनिक तमिल कवियोंमें ऊँचा है। आप सन् १९२६–१९२७ में "स्वराज्य" नामक तमिल दैनिक पत्रके सम्पादक थे। इनपर श्री रमण ऋषि और योगी अरविन्दका बड़ा प्रभाव पड़ा है। इनके मधुर गीत बड़े लोकप्रिय है।

सिनेमाकी उन्नतिके साथ उसके योग्य गीतोंकी रचना बढ़ने लगी। कई उत्कृष्ट कवियोंके द्वारा उत्तम गीत रचे गए जो अर्थ-पुष्टि और पद-लालित्यके कारण लोकप्रिय बने। ऐसे कवियोमे पाप नाशम शिवम, उडुमलै नारायण कवि, कण्णदास आदि प्रमुख है।

तमिल साहित्यकी उन्नतिको ही अपना लक्ष्य बनाकर चलनेवाली अनेक सस्थाएँ है। प्राचीन कालका 'तमिल सघ' प्रसिद्ध ही है। प्रथम और द्वितीय सघके समुद्रमे विलीन हो जानेपर तृतीय संघकी स्थापना मदुरा नगरमे हुई। पाण्डय राजाओके पतनके बाद इस सघका भी अस्तित्व नही रहा। उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्धमे पाण्डित्तुरै तेवरने मदुरा नगरमे तमिल सघकी स्थापना की। तमिल भाषाकी यह ऐसी ही संस्था है जैसी हिन्दीकी नागरी-प्रचारिणी सभा अथवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन है। इस सघकी ओरसे तमिल भाषाकी परीक्षाएँ ली जाती है। इस संघका मुखपत्र "शेन्दामिष" (ठेठ तमिल या शुद्ध तमिल) है। इस पत्रका तमिल साहित्य क्षेत्रमें बड़ा आदरपूर्ण स्थान है।

तजाऊर जिलेके "धर्मपुरम आधीनम", "तिरुवाडुदुरै आधीनम", "तिरुप्पनैन्दाल काशीवासी मडम" और अन्य कई प्राचीन शैव और वैष्णव धर्म प्रचारक मठोंकी भाषा सम्बन्धी सेवाएँ बड़ी महत्वपूर्ण है। राजा महाराजा और जमीदारोंके न रह जानेपर सरकारने साहित्यकारोंको प्रोत्साहित करनेका भार अपने ऊपर लिया है। पर साहित्यकारोंको इन प्राचीन मठोंका प्रोत्साहन अब भी मिलता है।

मद्राससे करीब डेढ़ सौ मील दक्षिणकी ओर "चिदम्बरम" नामक प्रसिद्ध क्षेत्र है। यहाँ भगवान शिवजी "नटराज" के रूपमे विराजमान है। प्रसिद्ध नन्द नामक अछूत सन्त अपने आत्म-बलसे यहीके भगवानके दर्शन पानेमें अनेक कठिनाइयाँ

पार करनेके बाद सफल हुए। इस नगरमें श्री अण्णामलै चेट्टियार नामक धन वैश्य जातके प्रसिद्ध दानीने अपने ही प्रयत्नसे "अण्णामलै विश्व विद्यालय" की स्थापना की। यह विश्वविद्यालय तमिल भाषाकी उन्नतिके लिए प्रयत्नशील है।

मद्रास राज्यसे जब आन्ध्र और केरल राज्य अलग हुए तबसे वह तमिल भाषा-भाषी राज्य बन गया। अब राज्यकी ओरसे शासन सम्बन्धी कार्य और कालेजोंकी उच्च पढ़ाईका माध्यम तमिल भाषाको ही बनानेका प्रबन्ध किया जा रहा है। यदि सभी राज्योंके सारे कार्य अपनी ही भाषाके माध्यमसे चलने लगे तो हिन्दीको राज्य-भाषा बनानेके सिए विशेष परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं रहेगी। जबतक राज्योंमे अँग्रेजीका महत्व रहेगा तभीतक केन्द्रकी भाषा भी अँग्रेजी रहेगी। तमिल प्रदेशमें ही हिन्दीका विरोध कुछ अधिक सबल है। इसका कारण यह है कि वहाँ अन्य राज्योंकी अपेक्षा अँग्रेजी भाषाका प्रचार अधिक है। यदि राज्यके अन्दर तमिल भाषाको उसके योग्य गौरवका स्थान प्राप्त हो जाय तो अँग्रेजीका मोह आप ही छूट जायगा और हिन्दीकी उपयोगिता मालूम हो जाएगी। हर्षकी बात है कि तमिलको राज्य भाषा बनानेका प्रयत्न मदरास राज्यमें शुरू हो गया है। अब तमिलका भविष्य राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषाकी उन्नति सुनिश्चित है।

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

[कवि-परिचय]

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

● ● ●

तमिल भाषाके आजकलके कवियोंमें श्री रामलिंगम पिल्लैका स्थान बहुत ऊँचा है। मद्रास राज्य सरकारने उन्हें 'राज-कवि' नियुक्त किया था। इस महान् कविका परिचय स्वर्गीय 'कल्कि' ने एक बार यों दिया था: "श्री रामलिंगम पिल्लै उत्तम कवि हैं, सच्चे देशभक्त हैं। देशके लिए उन्होंने महान् त्याग किया और कारावासकी सजा भुगती। आपका चरित्र अति उज्वल है। आप मित्रोंके प्रेम-पात्र हैं और छल प्रपञ्चसे अपरिचित हैं। आप धन या कीर्तिके लोभी नहीं हैं और आडम्बरसे घृणा करते हैं।"

इस कविवरका जीवन-चरित बहुत ही रोचक है। काव्यकलामें तो इस कविवरने बहुत ही अच्छा नाम पाया है, चित्रकलामें भी ये सिद्ध हस्त हैं। इनके जन्मकी कथा ही कलापूर्ण है।

इनके पिताका नाम वेंकटराम पिल्लै था। वे दक्षिण आर्काट नामके जिले के निवासी थे। केवल तीसरी श्रेणी तककी शिक्षा पाकर बड़ी कठिनाईसे अपना जीवन-यापन करते थे। उस जिलेमें अकाल पड़ा तो उन्हें अपना गाँव छोड़कर 'सेलम' नगर चला जाना पड़ा। वहाँ उन्हें सिपाहीका काम मिला। कुछ ही दिनोंमें हेड कान्स्टेबल बन गए। कुछ समय तक पुलिस इंसपेक्टरका काम भी किया था।

ईसवी सन् १८८८ के अक्टूबर की १९ तारीख को कविवरका जन्म हुआ। कहा जाता है कि रामेश्वरम् स्थित भगवान शंकरकी प्रसादीके फलस्वरूप

आपका रामलिंगम नामकरण हुआ। नामक्कल कविवरके निवास स्थानका नाम है। आप "नामक्कल कविवर" नामसे ही प्रसिद्ध है। "पिल्लै" जाति सूचक शब्द है।

कविवरकी माताने अपने पुत्रका बड़े प्रेमके साथ पालन किया और अच्छी आदतें सिखाई। अपने साथ पुत्रको मन्दिरमें ले जाती और उससे कहलाती थीं: 'हे भगवन्! [हमे सद्बुद्धि दो; हमारी रक्षा करो।" प्रतिदिन कमसे कम तीन बार उससे कहलाती थी" मैं झूठ नही बोलूंगा; दुष्ट नहीं बनूँगा।" मातासे प्राप्त इस शिक्षाके सुसंस्कारका प्रभाव कविपर पड़ना स्वाभाविक ही था। इस शिक्षाको कवि आज तक नही भूले। गान्धीजीके सत्य और अहिंसा नामक दो महान् तत्वोंकी भूमिका अपढ़ माताने कविवरके बचपनमे ही तैयार कर दी थी।

अन्ध विश्वासका उन्मूलन :

जिस समय कविवरका जन्म हुआ, देश भरमें—विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें—अज्ञानका अन्धकार व्याप्त था। भूत, प्रेत, पिशाच आदिपर लोगोंका विश्वास था। उन भूत आदिको खुश करनेके लिए न जाने कितनी बकरियाँ, भैसें, मुर्गियाँ और अन्य जीवोंकी बलि चढ़ाई जाती थीं। कविकी माँ इन बातोंका खण्डन करती थीं। एक गाँवमे वेंकटराम पिल्लैके निवास स्थानके पास घना जंगल था जिसमें महुएके पेड़ अधिक थे। ऐसा माना जाता था कि उस वनमें एक बहुत बड़े महुएके पेड़पर पिशाचका निवास था। उसको प्रसन्न रखनके लिए बार-बार बलिदान-युक्त पूजाएँ हुआ करती थीं। कविकी माँ अम्मणी अम्माके कहनेसे पूजाका यह क्रम बन्द कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पिशाचने पहले एक नवयुवती पर आक्रमण किया। वह युवती इतनी डर गई कि उसे तेज बुखार आ गया। कुछ दिनोंके बाद बहुत खर्चीले पूजापाठका प्रबन्ध हुआ तब कही वह स्वस्थ हुई। इससे लोगोंका फिर पिशाचपर विश्वास बढ़ने लगा। कुछ दिन बाद पिशाचने अम्मणी अम्मापर ही आक्रमण किया। अम्मणी अम्माके हाथमें एक लोहेका शूल था—उसने पिशाचके सिरपर जोरसे मारा। पिशाच किसी तरह छूटकर भाग गया। पुलिस बड़ी तत्परतासे खोजने लगी तो एक चोरोंके दलका पता लगा; पर पिशाचके आकारका कोई व्यक्ति नही मिला। संयोग वश कुछ दिन बाद अम्मणी अम्मा पड़ोसके गाँवकी हाटमें गई थीं; वहाँ पिशाचके आकारका एक व्यक्ति उन्हें दिखाई पड़ा। वह अपने सिरपरका घाव छिपानेका बहुत प्रयत्नकर रहा था। यह बात उन्होंने अपने पतिसे कही। वह आदमी पकड़ा गया। मालूम हुआ कि स्थानीय ओझाकी प्रेरणासे वही लोगोंको डराया करता था जिससे लोग पिशाचको प्रसन्न करनेके लिए पूजा, बलि आदिका बराबर प्रबन्ध करते रहें।

लड़कपन :

दक्षिण भारतका तिरुपति--बालाजी-क्षेत्र बड़ा प्रसिद्ध है। तमिल प्रदेशके प्राय: सभी परिवारोंमें इस क्षेत्रके प्रति बडी श्रद्धा रहती है।

तमिल और केरल प्रदेशोंमें सौरमान वर्ष चलता है। जब सूर्य कन्या राशिमें रहता है तब वह मास तमिलमें 'पुरट्टाशि' कहलाता है। यह करीब-करीब भाद्रपद-आश्विनके महीनोंमे पड़ता है। इस महीनेके प्रत्येक शनिवारके दिन तिरुपति के भगवानकी विशेष पूजा होती है। पूजाका एक क्रम यह है कि प्रति शनिवारको घरके बालक घर घर जाकर भिक्षा मांगते है। उस मासके अन्तिम शनिवारके दिन भिक्षामे प्राप्त सामग्रीसे ब्राह्मण–भोज कराया जाता है।

तमिल प्रदेशमें शैव और वैष्णव ये दो शाखाएँ है। शैव लोग माथेपर विभूति लगाते है। वैष्णव लोग तिलक (जिसमे दो खड़ी सफेद लकीरोंके बीचमें एक लाल लकीर रहती है) लगाते है। यह तिलक "नामम" कहलाता है। प्रति-शनिवारको भिक्षाके लिए निकलनेवाले शैव बालक भी "नामम" धारण करते हैं।

जब कवि रामलिंगम पिल्लै पाँच छह वर्षके बालक थे तब वे भी उस मासके शनिवारके दिनोंमे भिक्षा माँगने "नामम" धारण करके जाया करते थे। एक शनिवारके दिन उनके पिता किसीसे कुछ बातें कर रहे थे; बालक रामलिंगम भिक्षाटनके बाद अपने घर आया। पिताको देखकर उसके मनमें आया कि कुछ तमाशा दिखाया जाय। वह आड़में खड़ा होकर "गोपाल गोविन्द" का नारा लगाने लगा। (उस नारेसे गृहिणियाँ समझ जाती है कि मामूली भिखारी नहीं किसी भले घरका ही व्यक्ति भिक्षाके लिए आया है।) दो तीन बार बालकने आवाज दी तो पिताने कहा: "जाओ बेटा! घरमें सब काममे लगे है।" उन्हें पता नही था कि अपने ही पुत्रको बेटा कहकर सम्बोधन कर रहे थे। इसी बीचमे रामलिंगमकी बहन एक पात्रमें चावल लिये आ पहुँची। अपने भाईको देखकर वह भी आश्चर्यमें पड़ गई। उसने पिताका ध्यान उस ओर आकर्षित किया। अपने पुत्रके मजाकसे वे बहुत प्रसन्न हुए। वे स्वयं शैव थे---पुत्रको लेकर घरके अन्दर गए। अपनी पत्नीसे कहा "नामम धारण करनेकी प्रथा तो तुम्हारे घर की है, यह क्या है रामलिंगमके माथेपर भी तुमने नामम लगा दिया।" पत्नीने जवाब दिया: "मै क्यों लगाने लगी। यह तो खुद आपके पुत्रकी करामात है।" यह सुनकर वेंकटराम पिल्लैने अपने पुत्रके माथेका वह तिलक मिटाकर उसके स्थानपर भस्म लगा दी। पर बालक रामलिंगम इस पर बहुत रोने लगा। अन्तमे पिल्लैजीने बालकको वही तिलक लगा लेनेकी अनुमति दी।

प्रारम्भिक-शिक्षा :

कविकी शिक्षाका आरम्भ नामक्कल नामक नगरकी एक प्रारम्भिक पाठशालामें हुआ। बचपनसे ही उनका चित्रकलासे बड़ा प्रेम था। प्रारम्भिक वर्गोंमें एक बार अध्यापक गणित सिखा रहे थे। कविवर गणितमें कच्चे थे। उस

विषयमे उनकी अभिरुचि नहीं थी। इसलिए वे अध्यापक की पढ़ाई पर ध्यान न देकर अपनी पट्टी पर किसी नाटक कम्पनीके विज्ञापनकी नकल कर रहे थे। कुछ देर बाद जब अध्यापक छात्रोंकी पट्टियाँ जाँचने लगे तब रामलिगमने अत्यन्त सकोचके साथ अपनी चित्र वाली पट्टी दिखाई। जब अध्यापकने जोर का तमाचा लगाया तभी उसको अपनी भूलका बोध हुआ। यद्यपि पढ़ाईपर ध्यान न देनेके कारण अध्यापकने अपने छात्रको दण्ड दिया तो भी छात्रकी चित्र बनानेकी कुशलतासे वे प्रसन्न भी हुए। वे अपने छात्रको चित्र बनानेके लिए प्रोत्साहन देने लगे।

वर्गमे चित्र बनानेकी कविकी यह आदत बहुत दिनो तक बनी रही। जब आप हाईस्कूलमे पढते थे तब स्कूलके प्रधानाध्यापक ही गणित पढ़ाते थे। गणितकी ओर सदा ही रामलिगमकी अभिरुचि बहुत कम रही। एक बार अध्यापक बोर्डपर गणित समझा रहे थे और इधर रामलिगम अपनी कापीमे अध्यापकका व्यंग्य चित्र बना रहे थे। अध्यापकका ध्यान उस ओर गया तो वे बहुत रुष्ट हुए। उन्होंने रामलिगम को कड़ी सजा दी। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिए कवि की यह प्रवृत्ति दब-सी गयी। पर कालेजमे सम्मिलित होनेके बाद यह प्रवृत्ति फिर जागृत हुई। एक बार प्रिंसिपलने छात्रोंको एक लेख लिखनेको कहा। रामलिगम अपने लेखको शीघ्र ही पूरा करके चित्र बनाने लग गये। अन्य सभी छात्र लेख लिखनेमें ही लग हुए थे। इस ओर जब प्रिंसिपलका ध्यान गया तो रामलिगमके लेख और चित्र दोनोसे वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रामलिगमको चित्रकला सम्बन्धी पुस्तक पुरस्कारके रूपमे दी।

कलाप्रेमका दुष्परिणाम :

इस चित्र सम्बन्धी आदतका एक भयंकर परिणाम भी निकला। कविका वेंकटवरदन नामक एक साथी था। उसके पिताका देहान्त हो गया था इसलिए वह कोयम्बत्तूरमें अपने मामाके यहाँ रहता था। कविवरकी पढ़ाई भी कोयम्बतूरमें ही हुई। दोनो एक ही विद्यालयमे पढ़ते थे; दोनोंमे घनी मित्रता हो गई। दोनों एक दूसरेके घर आया-जाया करते थे। कविवर तो अपने मित्रके यहाँ प्रति दिन घण्टों रह जाते थे। वेंकट वरदनकी ममेरी बहन सीता नामकी लड़की बार बार कविवरसे मिला करती थी। तमिल प्रदेशकी लड़कियोंको जमीनपर आटेसे चित्र बनानेका बड़ा शौक है। इसके लिए विशेष अवसरोंपर चावलका आटा ही लिया जाता है पर प्रति-दिनके उपयोगमे चूनेकी बुकनी काम आती है। कविवरका चित्रकलासे विशेष प्रेम था। इसलिए सीता कविवरसे अनेक चित्र बनानेका अभ्यास करने लगी। इस कारणसे उन दोनोंमें घनिष्ठता बढ़ गई। एक दिन कविवर दूसरी मंजिलपर बैठे अपने मित्रकी प्रतीक्षा कर रहे थे। यह लड़की ऊपर गई और रामलिंगमको अकेला देखकर चुपकेसे उनकी दोनों आँखें उसने अपने हाथोंसे ढंक दी। इतनेमें सयोगसे उस लड़कीकी माँ भी वहाँ आ पहुँची। अपनी लड़कीकी यह करतूत उसे बहुत बुरी लगी। उसने अपना

सारा गुस्सा कविवरपर उतारा और उनकी सारी पुस्तकें उठाकर बाहर फेंक दी और उन्हें घरमे आनेसे मना कर दिया। वेंकट वरदनने बहुत समझाया। पर उस देवीका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

उस घटनाके बाद रामलिगमको सीतासे मिलनेका कोई अवसर नही मिला। करीब पन्द्रह साल बीते। रामलिगम प्रसिद्ध कवि बन गए। एक दिन त्रिचिनापल्लि जंक्शनपर वे किसी गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक उन्हें किसीने "राम-लिगम मामा" कहकर पुकारा। (तमिल प्रदेशमे अपरिचित बड़ोंको "मामा" कहकर पुकारनेकी रीति है।) रामलिगम पहचान नही सके कि पुकारने वाली विधवा कौन है। विधवा ने अपना परिचय दिया कि वही सीता थी। उसके दो बच्चे थे। उसके अनुरोधपर कवि उसके घर गए, और दो दिन वहाँ रहकर अपने घर लौटे।

आजीविकाका प्रश्न :

सन् १९०७ ई. में कविवर मैट्रिक परीक्षामे उत्तीर्ण हुए और १९०८–१९०९ में त्रिचिनापल्लि शहरके एस. पी. जी. कालेजमे एफ. ए. की पढ़ाई पूरी की। सन् १९०९ मे उनके कानमें दर्द होने लगा। चिकित्साके लिए वे मद्रास गए। इस चिकित्सामे उनके कानका दर्द तो दूर हुआ पर सुननेकी शक्ति क्षीण हो गई। इस कारणसे उन्हें पढाई छोड़नी पड़ी। अब रामलिगम नौजवान हो गए थे और घरपर बेकार बैठ रहना उनके लिए उचित नहीं था। उनके पिताकी बड़ी इच्छा थी कि उन्हें पुलिस विभागमे नौकरी मिले। इसके लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। पर रामलिगमको वह काम पसन्द नही आया। वे चुपचाप घर छोड़कर चले गए। बड़ी कठिनाईके साथ उनके पिताने उनका पता लगाया। घर आनेके बाद पिताके अनुरोधसे उन्होंने स्थानीय तहसीलदारके कार्यालयमे गुमाश्ताके पदपर काम करना शुरू किया। पर स्वतन्त्र प्रवृत्तिके इस नवयुवकके लिए सरकारी कार्यालयका बन्धनमय जीवन सह्य नही हुआ। कुछ ही दिनोंमें उन्होंने वह काम भी छोड़ दिया। कुछ दिनों तक वे स्थानीय प्रारम्भिक पाठशालाके अध्यापक बने रहे, पर वहाँ भी उनका मन प्रसन्न नही रहा।

कविने चित्र बनानेका अभ्यास जारी रखा। उसमे उन्होंने अच्छी उन्नति की। जब वे सरकारी कार्यालयमे काम करते थे तब भी अपना काम शीघ्र पूरा करके अपने साथियोंके व्यंग्य चित्र बनाया करते थे। उनके भूतपूर्व एक अध्यापक जब अपनी सेवाओंसे अवकाश प्राप्तकर जाने लगे तब उनके प्राचीन छात्रोंने उनका सम्मान करनेका निश्चय किया। उनका चित्र बनानेका काम कविवरको सौंपा गया। उन्होंने चित्र बनाया और उनका बनाया हुआ वह चित्र स्थानीय म्युनिसिपल मण्डपमें लगाया गया।

एक बार एक अँग्रेज अधिकारी उस मण्डपमे वह चित्र देखकर बहुत प्रभावित हुआ। चित्रकारका पता लगाकर उसने उसे अपने पास बुलाया और उससे एक चित्र

बनानेका अनुरोध किया। उस अधिकारीका एक बच्चा था जिसका करीब चार महीने पूर्व देहान्त हो गया था। उस मृत बच्चेका एक फोटो था। अधिकारीकी इच्छा थी कि कविवर उस फोटोके आधारपर एक चित्र बनायें जिसमें वह बच्चा सजीव-सा दिखाई पड़े। उन्होंने पचास रुपएका पारिश्रमिक देनेका वादा किया। कविवरने चित्र बनाया। चित्रको देखकर अधिकारी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी थैली खोल कर उसमें जितने रुपये थे वे सब रामलिंगमको दे दिये।

इस घटनाके बाद कविवरने चित्रकलाको ही अपनी आजीविकाका साधन बनाया।

उत्तर भारतकी यात्रा :

श्री पा. वे. माणिक्क नायक्कर नामक उच्च सरकारी पदाधिकारी कविवरके मित्र थे। सन् १९११ ई. में पचम जार्ज महाराजका राज्याभिषेक महोत्सव दिल्लीमें मनाया गया था। अपने मित्र माणिक्क नायक्करकी प्रेरणापर कविवरने प्रदर्शिनीमें अपने चित्र भेजे और स्वयं भी उस मित्रके साथ दरबारमे गए। कविवरके चित्रोंमे एक चित्र था जिसमें यह दिखाया गया था कि बादशाह पंचम जार्ज गम्भीर मुद्रामे बैठे हुए थे और उनके सिरपर भारत-माता मुकुट रख रही थी। यह चित्र बहुत उत्तम माना गया। स्वयं बादशाहने उसकी बड़ी तारीफ की थी। इसपर कविको पुरस्कार तो मिला ही साथ साथ उनकी कीर्ति भी बढ़ी और फलतः उनके चित्रोंकी माँग बहुत बढ़ी।

दिल्लीके समारोहके बाद श्री पिल्लैजीने अपने मित्रके साथ उत्तर-भारत भरका भ्रमण किया। सीमा प्रान्तमें पठानोंके हाथ उन्हें कुछ कष्ट भी उठाना पड़ा। काशी, प्रयाग, गया आदि तीर्थोंमे जाकर उन्होंने विधिवत पूजा आदि कार्य किए।

गीत-रचना :

तमिल प्रदेशमें सदा ही नाटकको प्रोत्साहन मिलता आया है। नगरोंमें रङ्ग-मञ्चपर खेले जानेवाले नाटक तो है ही; अनपढ़ ग्रामीण भी बड़ी तैयारीके बाद नाटक खेला करते है। यह खेल करीब-करीब रातभर हुआ करता है। यह अक्सर मैदानमें खेला जाता है। केवल पात्रोंका रूपरंग रहता है, पर न रङ्ग-मञ्च रहता है और न परदा। मैंने एक नाटक देखा जिसमे भीम और जरासन्धकी लड़ाई थी। कभी भीम जरासन्धका पीछा करता करता करीब सौ दो सौ गज आगे बढ़ जाता और सारा दर्शक-वृन्द उसके साथ-साथ आगे बढ़ता; उतनी दूर जानेके बाद जब जरासन्ध कुछ प्रबल होता तब वह भीमका पीछा करने लगता और दर्शक वृन्द फिर उसके साथ-साथ चलते। यथा स्थान पहुँचनेपर फिर नाटककी कथा आगे बढ़ती।

श्रीरामलिंगम पिल्लै शास्त्र-सम्मत नाटकके बड़े प्रेमी थे। तमिल देशमें अनेक कुशल नाटक अभिनेता हो गए है। उनमें किट्टप्पा नामक एक अभिनेता बहुत

ही प्रसिद्ध हुआ। वह छह सात वर्षकी अल्प आयुमे ही नाटक खेलने लगा। उसका कण्ठ अत्यन्त मधुर था और उसके संगीतकी सब लोग प्रशसा करते थे। वह अपने नाटक-मण्डलके साथ नामक्कल (कवि रामलिगम पिल्लै जिस नगरके निवासी थे) आ पहुँचा। उसके नाटकोके लिए उपयुक्त गीत श्री पिल्लैजी रचा करते थे और किट्टप्पा उन्हें गाया करता था। खेदकी बात है कि कविवरके इन गीतोका सकलन नही हुआ। कविवरका ध्यान नाटक रचनाकी ओर नही गया।

विवाह :

श्री पिल्लै जब तिरुचिरापल्ली नगरमें कालेजके इण्टरमीडियट वर्गमे पढ़ते थे तब उनका विवाह हुआ। उनके पिताकी बहुत दिनोसे बड़ी इच्छा थी कि अपने पुत्रका विवाह शीघ्र सम्पन्न कर लें। उन्होंने अपने पुत्रके योग्य एक कन्या भी देख रखी थी। पर कवि विवाह करना नही चाहते थे। एक बार इस बातपर वे घर भी छोडकर चले गए। पर अन्तमे उन्हें विवश होकर अपने पिताकी बात माननी पड़ी-और उमी कन्यासे उनका विवाह हुआ। विवाहके कुछ समय तक अपनी पत्नीके प्रति कविका रूखा बर्ताव था। पर उस साध्वीकी सहनशीलताने उनपर इतना प्रभाव डाला कि कवि अपने रूखेपनपर पछताने लगे और अपनी पत्नीसे प्रेमका व्यवहार करने लगे।

विवाहके कई वर्ष बाद तक उनके कोई सन्तान नहीं हुई। लोगोंने उन्हें बहुत समझाया कि वे दूसरा विवाह कर लें। स्वयं उनकी पत्नीने उनसे इस आशयकी प्रार्थना की। उस समय कविकी साली विवाह योग्य हो गई ; कविकी पत्नीका आग्रह था कि वे उस युवतीसे बिवाह कर लें। कवि इस बातके लिए तैयार नहीं हुए। दैवेच्छा प्रबल है। कुछ समय बाद अचानक कविकी पत्नीका देहान्त हो गया। इस घटनासे कवि बहुत व्याकुल हुए। लोग डरने लगे कि कहीं इस बातका कविके मनपर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

कुछ समय बाद कविका मन स्वस्थ हुआ। उन्होंने पत्नीकी इच्छा पूरी करनेका निश्चय किया। अपनी सालीसे उन्होंने विवाह कर लिया। पहली पत्नीका नाम "मुत्तम्मा" था और दूसरीका "सौन्दरम", पर अपनी पहली पत्नीकी स्मृतिमें उन्होंने दूसरीका "मुत्तु सौन्दरम्" नामकरण किया। कविके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ है। बड़ी पुत्रीका नाम 'मुत्तु' रखा।

राजनैतिक क्षेत्रमें :

सन् १९०६–७ से श्री पिल्लैजी राजनीतिकी ओर आकृष्ट हुए। वंग-भंगने देश भरको विक्षुब्ध कर दिया था। श्री पिल्लैजी भी इस घटनासे प्रभावित हुए। तिलक महाराज, लाजपतराय आदिके भक्त बन गए। सन् १९१६–१७ में वे श्रीमती एनी बेसण्टके आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेने लगे। अपने एक धनी मित्रके सहयोगसे

उन्होंने त्रिचिनापल्लीमें एक राजनैतिक सम्मेलन कराया जिसमें श्रीमती बेसण्टका प्रभावोत्पादक भाषण हुआ। उस सम्मेलनमें एक प्रदर्शिनीका भी प्रबन्ध किया गया था। उसमें कविवरके चित्र प्रदर्शित हुए। इन चित्रोंकी बड़ी प्रशंसा हुई। स्वयं श्रीमती बेसण्टने कुछ चित्र खरीद लिए।

गान्धी-भक्ति :

काशी विश्वविद्यालयके प्रारम्भिक समारोहके अवसरपर गान्धीजीने राजा महाराजाओंके फिजूलखर्चीका खण्डन करते हुए एक भाषण दिया था। इसका प्रभाव कवि श्री रामलिंगम पर पड़ा। उनका दृढ़ विश्वास हो गया कि यह स्पष्ट वक्ता ही भारतका उद्धार कर सकता है। तबसे आप गान्धीजीके भक्त बन गए। गान्धीजीके विचारोंका प्रचार करने लगे। सत्याग्रह आन्दोलनमें आपने एक वर्षका कारावास भी भोगा है।

राजकवि :

स्वतन्त्रताके पूर्व हमारे देशमें अनेक धनी जमींदार, राजा और महाराजा थे जो कलाकारोंका आदर करते थे। इन राजा-महाराजाओंका समर्थन संगीत, साहित्य आदि कलाओंकी उन्नतिका साधन बना हुआ था। पर स्वतन्त्रताके बाद उन राजा-महाराजाओंका अस्तित्व ही जब नहीं रह गया तब सरकारने ही कला और कलाकारों को प्रोत्साहन देनेका भार अपने ऊपर ले लिया। मद्रासकी सरकारने राज-कवि नियुक्त करनेका निश्चय किया। उन दिनों मद्रास राज्यके अन्तर्गत तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषा-भाषी क्षेत्र थे। सरकारने चारों भाषाओंके राज-कवि नियुक्त किए। श्री रामलिंगम पिल्लै तमिल भाषाके राज-कवि नियुक्त किए गए।

इस समय कविजी मद्रासकी लेजिस्लेटिव कौंसिलके सदस्य हैं।

राजाजीकी सम्मति :

कवि रामलिंगम पिल्लैकी कविताओंकी विशेषता यह है कि वे अत्यन्त सरल और साथ साथ अत्यधिक प्रभावोत्पादक हैं। उनकी कविताओंको सुनकर 'नमक सत्याग्रह' के दिनोंमें राजाजीने कहा था : "मुझे बड़ी चिन्ता थी कि इस समय कवि भारती नहीं रहे। पर वह कमी आपने (कवि पिल्लैने) दूर कर दी।"

भारतीकी सम्मति :

श्री पिल्लै एक बार कवि सुब्रह्मण्य भारतीसे मिलने गए। उन दिनों श्री पिल्लैकी कीर्ति बढ़ी नहीं थी। भारतीने कहा कि वे कोई गीत सुनाये। श्री पिल्लैने एक छन्द सुनाया। यह नाटकीय मंचपर गानेके लिए रचा गया था। इसमें श्री रामचन्द्रके वनवासके समयका वर्णन था। छन्दका पहला चरण यह है :

तम्मरशॆ षिरर आळा विट्टु विट्टु
ताम बणंगि कै कट्टि निन्र पेरुम।

[अर्थात् "अपना राज्य अन्योंको दे कर स्वय नम्र होकर रहनेकी शोभा।"]

यह पहला चरण सुनते ही भारती बोल उठे : "क्या कहा 'अपना राज्य अन्योको देकर स्वय नम्र होकर रहनेकी शोभा" वाह! वाह! हमारे देशकी अबकी स्थितिका कितना सुन्दर चित्रण है! तुम निस्सदेह प्रतिमा शाली हो। तुम्हारी कविताएँ अवश्य लोकप्रिय बनेगी।"

कविका व्यक्तित्व :

श्री रामलिगम पिल्लै अत्यन्त नम्र स्वभावके है। अहंभाव तो उनमें नाम मात्रके लिए भी नही है। उनकी दृष्टिमे सब मनुष्य समान है। न कोई किसीसे बड़ा है न कोई छोटा। इस समभावका बीजारोपण उनके बचपनमे ही हुआ था। कविवरकी माता वैष्णव परिवारकी थीं और पिता शैव परिवारके थे। इस कारणसे कविके मनमे दोनोंकी समताका भाव जागृत हुआ।

मुसलिम परिवारसे मेल :

कवि जिस समय तीन चार सालके बच्चे थे तब उनकी माता सर्किल इंस्पेक्टर (दारोगा) के घर जाया करती थी। दारोगा मुस्लिम थे और उनकी पत्नीसे कविकी माँ बार-बार मिला करती थी। तब अपने बच्चेको भी साथ ले जाया करती थी। उस मुस्लिम महिलाका उस बच्चेमे बड़ा प्रेम हो गया। वह उसको अपने ही यहाँ खिलाया-पिलाया और सुलाया करती थी। यहाँ तक कि जब वह बच्चा अठारह वर्षका नौजवान बन गया तब भी बिना किसी रोक-टोकके उस परिवारमें जाया करता था---तो मानो उस परिवारका ही अंग बन गया। आजकल भी दक्षिण भारतके मुस्लिम परिवारोंमें पर्दा प्रचलित है। उन दिनो तो कड़ाईसे पर्दा प्रथाका पालन होता था। इस अनुभवका ही परिणाम है कि कविको सर्व धर्म समानत्वका सिद्धान्त ग्राह्य हुआ।

कविका "एन कन्दै" (मेरी कथा) नामक आत्म-चरित्र उनकी एक उत्कृष्ट रचना है। इनकी गद्य-रचनाएँ भी कम नही है। "मलैक्कळ्ळन" (पहाड़ी डाकू) और "अन्बुशय्द अर्पुदम" (प्रेमकी करामात) इनके उपन्यास हैं। "अवनुम अवळुम" वह (पुरुष) और वह (स्त्री) नामक कविता की कथा वस्तु अत्यन्त रोचक है। इनकी "तिरुक्कुरळ पुदु उरै" नामक तिरुक्कुरलकी टीका अत्यन्त लोक प्रिय है। "तमिषन इदयम" (तमिल-वालेका हृदय), "शगोलि (शंख ध्वनि), "कवितांजलि", "गाँधी अंजलि", "तमिष तेन" (तामिल-मधु) आदि कविताएँ अत्युत्तम श्रेणीकी है।

इनकी कवितायें स्वभावतः ही रागात्मक है। इसी कारण जनता इनको आसानीसे अपनाती है। संगीतके कारण साहित्यिक महत्वका-अर्थ पुष्टिका कोई लोप नही होता।

तमिषन एन्रोरु इनमुण्डु
तनिये अवर्को रु गुणमुण्डु।
अमिष्दम अवनुडै वषियागुम
अन्बे अवनुडै मोषियागुम॥

"तमिल वाला नामक एक समूह है--उसका एक विशिष्ट गुण है। उसका मार्ग अमृतमय है। प्रेम ही उसकी वाणी है।"

उनमे उत्साह पैदा करनेकी अपार शक्ति है :--

तमिषनेण्रु शोल्लडा
तलै निमिन्र्दु निल्लडा

["कहो : मै तमिलियन हूँ। अपना सिर ऊँचा किए खड़े रहो।"]

इसमे सन्देह नहीं कि कविकी कृतियोंने तमिल प्रदेशके लोगोंको---विशष रूपसे छात्रोंको---बहुत प्रभावित किया है।

कविके मनोभावको समझनेके लिअे उनका एक पद्य यहाँ उद्धृत करना अनुचित नही होगा।

इसमें गाँधीजीके विषयमे कवि सबसे कहता है---

कुत्तीट्टि ओरु पुरत्तिल कुत्तवेण्डुम
कोडारि ओरु पुरत्तें पिळक्कवेण्डुम।
रत्तम वरत्तडियाल रत्त मुण्डाक्कि
नाल पुरमुम पलर उदैत्तु नलिय तिट्ट॥
अत्तनैयुम नान पोरुत्ते अहिंसै कात्तुम
अनैवरैयुम अदैप्पोल नडक्कच्चोल्लि।
ओत्तु मुहम मलर्न्दुदट्टिल शिरिप्पिनोडुम
उयिर तुरन्वाल अदुवे एन उयर्न्द आशै॥

[एक ओर तो मुझपर भाला चोट पहुँचाता रहे, दूसरी ओर मेरे शरीरको कुल्हाड़ी तोड़ती रहे, चारों ओरसे गालियाँ सुनाते हुए लोग इतनी लातें मारे और लाठीका ऐसा प्रयोग करें कि मेरे शरीरसे खून निकल पड़े। इन सबको सहकर मै हँसता हुआ अहिंसाका पालन करूं और सबको ऐसे ही करनेका उपदेश देकर मुख प्रसन्न रखूं। ओठोंपर हँसी लाऊँ और मृत्युको प्राप्त करूँ---यही मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।]

• • •

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

[काव्य-सञ्चय]

१. सूरियन वरुवदु याराले ?

सूरियन वरुवदु याराले ?
चन्दिरन तिरिवदुम याराले ?
कारिरुळ वानिल मिनमिनि पोल
कण्णिर पडुवना अवै एन्ना ?
पेरिडि मिन्नल एदानाले ?
पेरु मषै पेय्वदु एवराले ?
यारिदर्केल्लाम अदिकारी ?
अदै नाम एण्णिड वेण्डावो ? ।।१।।

तण्णीर विषुन्ददुम विदै यिन्री
तरैयिल मुळैत्तिडुम पुल एदु ?
मण्णिल पोट्टदु विदै योन्रु
मरञ्जेडि यावदु याराले ?
कण्णिल तेरिया शिशुवै एल्लाम
करुविल वळर्पदु यार वेलै ?
एण्णि पार्तॆल इदर्केल्लाम
एदो ओरु विशै इरुक्कुमन्रो ? ।।२।।

एत्तनै मिरुगम ! एत्तनै मीन !
एत्तनै ऊर्वना परप्पना पार !
एत्तनै पूच्चिगळ पुषु वर्गगळ !
एण्णत्तोलैया चेडि कोडिगळ !
एत्तनै निरंगळ उरुवंगळ !
एल्ला वट्रैयुम एण्णुंगाल
अत्तनैयुम तर ओरु कर्तन
यारो एङ्गो इरुप्पदु मेय ।। ३ ।

१. सूर्य आता किससे है ?

सूर्य किससे (प्रेरित होकर) आता है ? चन्द्र किससे आता है ? घोर अन्धकार पूर्ण आकाशमें जुगनू जैसे दिखाई पड़नेवाले क्या हैं ? भयंकर बिजलीका चमकना और गरजना किसके कारण होते हैं ? वर्षा किसके कारण होती है ? इन सबका मूल कर्ता कौन है ? क्या इस बातपर हमें सोचना नहीं है ? ।।१।।

ज्यों ही पानी पड़ता है त्यों ही जमीनसे बिना बीजके भी घास उगने लगती है––यह किसके कारण होता है ? मिट्टीमें जो एक बीज बोएँ तो वह पेड़ या पौधेके रूपमें किसके कारण परिणत होता है ? दृष्टिगोचर न होनेवाले शिशुओंका गर्भमें पालन करनेवाला कौन है ? अगर सोचो तो क्या यह नही विदित होता कि इन सबका एक मूल कारण है ? ।।२।।

कितने जानवर है ! कितनी मछलियाँ हैं ? कितने रेंगनेवाले जीव और कितने उड़नेवाले जीव है ? कितने कीड़े-मकोड़े हैं ? असंख्य पेड़-पौधे और लताएँ है । कितने रंग और कितने रूप हैं ? इन सब पर विचार करो तो विदित हो जाएगा कि इन सबका जन्मदाता एक कर्ता अवश्य कोई होगा ।।३।।

अल्ला वेन्बार शिला पेरगळ
अरन अरि एन्बार शिला पेरगळ
वल्लान अवन परा मण्डलत्तिल
वाषुम् तन्दै एन्बारगळ !
शोल्लाल विळंगा, 'निर्वाणम्'
, एन्रुम शिला पेर शोल्वारगळ
एल्लामिप्पडि पल पेशुम
एदो ओरु पोरुळ इरुविकरादे ।।४।।

अन्दप्पोरुळै नाम निनैत्ते ।
अनैवरुम अन्बायकुलाविडुवोम्
एन्दप्पडियाय एवर अदनै
एप्पडि तोषुदाल नमक्केन्ना ?
निन्दै पिररै पेशामल
निनैविलुम केडुदल शेय्यामल
वन्दिप्पोम अदै वणंगिडुवोम
वाषवोम सुगमाय वाषन्दिडुवोम ।।५।।

———————

कुछ लोग उसको 'अल्ला' कहते हैं; कुछ लोग हर या हरि कहते हैं। कुछ लोग उसको परम मण्डल वासी समर्थ पिता कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह अकथनीय निर्वाण है। अनेक लोग इन रीतियोंसे जिसका वर्णन करते हैं वह कोई तो अवश्य ही है ।।४।।

उस परम तत्त्वका स्मरण कर हम सब प्रेम-पूर्वक रहें। कोई उसे चाहे जैसे माने——हमें इससे क्या मतलब? बिना पर-निन्दा किए, मनसे भी अन्योंकी बुराई किए बिना हम उसकी वन्दना करें और सुख-पूर्वक रहें ।।५।।

२. तमिषरिन पेरुमै

तमिषा उनक्किदु तरुणम वाय्त्तदु
　　दरणिक्केल्लाम वषि काट्टा ।
'अमुदाम एन मोषि ; अर मे एन वषि
　　अन्बे उयर निलै' एन्रु शोलुम् ।।१।।

शैवमुम वैणमुम शमणमुम बौद्दमुम
　　तषैत्तदु शेषित्तदु तमिष नाट्टिल ।
वैयग मुषुवदुम वणंगिडुम गुणंगळै
　　वाष्न्दवर उन्नुडै मुन्नोर्गळ ।।२।।

एंगो पिरन्दवर बुद्दर पेरुमैयै
　　एत्तिप्पणिन्दवर तमिष नाट्टार ।
इंगे अंगे एन्र वुरैवुगळै
　　एन्रुम पिरित्तिलर तमिष नाट्टार ।।३।।

एशु तमिषाररलर एन्र कारणत्ताल
　　इगष्न्दु विडुवदिलै तमिष नाट्टार ।
पेशुम तमिषरुळ किरुस्तुवै पोट्रुम
　　पेरुमैयुडैय वर्गळ पला पेर्गळ ।।४।।

महमदु पिरन्ददु मट्रोरु देशम अवर
　　महिमै विळंगुमिन्द तमिष नाट्टिल ।
अहमगिष्न्दनु दिनम नागूर आण्डवनै
　　आरार तोषुगिरार अरियायो ? ।।५।।

२. तमिल भाषा-भाषीकी महिमा

हे तमिल भाई ! "अमृत मेरी भाषा है, धर्म मेरा मार्ग है और प्रेम मेरा जीवन लक्ष्य है" कहकर सारे संसारको मार्ग दिखानेका तुम्हें यह अवसर मिला है ।।१।।

शैव और वैष्णव, श्रमण (जैन) और बौद्ध धर्म तमिल प्रदेशमें पनपे । तुम्हारे पूर्वज उन उत्तम गुणोंसे युक्त जीवन बिताते थे जिनका सारा संसार कद्र करता है ।।२।।

जो बुद्ध न जाने कहाँ पैदा हुए उनको आदरके साथ तमिल प्रदेशने माना । तमिल देशवालोंने कभी यहाँ-वहाँका अन्तर नहीं माना ।।३।।

ईसा मसीह तमिल प्रदेशके नहीं, इस कारणसे तमिल लोगोंने उनकी उपेक्षा नहीं की । तमिल भाषा-भाषियोंमें ईसाको माननेवाले अनेक हैं ।।४।।

मुहम्मद साहबका जन्म तो किसी अन्य देशमें हुआ, उनकी बड़ाई होती है तमिल प्रदेशमें । क्या तुम नहीं जानते कि नागूरके भगवानकी प्रफुल्ल मन होकर प्रतिदिन कौन आराधना करते हैं ? * ।।५।।

---

* तमिल प्रदेशके तजौर जिलेमें नागूर नामक नगरमें एक मसजिद है जहाँ हिन्दू और कुछ ईसाई लोग भी बड़ी श्रद्धाके साथ जाया करते है ।

उलगिन मद मेलाम ओव्वोरु कालत्तिल
ओडि पुगुन्ददिन्द तमिष नाट्टिल।
कलहम शिरुदुमिन्रि कट्टि यणैत्तवट्टै
कात्तु वळर्त्तवर्गळ तमिष नाट्टार ॥६॥

तन्नुयिर् नोय्पिनुम पिरर कोलै अञ्जिडुम
दरुमम वळर्त्तवर्गळ तमिष नाट्टार।
मन्नुयिर यावैयुम तन्नुयिर एन्रिडल
मण्डि किडप्पदुन्नन तमिष मोषिये ॥७॥

कोल्ला विरदमे नल्लार वषियेन्रु
कूरि नडन्द वुन्नन कुलामुन्नोर।
एल्ला विदत्तिलुम एवरुम मदित्तिडुम
एट्र मुडैयदुन इल्लरा माम ॥८॥

उलगम मुषुवदुम कलहम उरुदु पार
उन पेरुम कडमैगळ पल उण्डु।
विलगुम पडि शेयुम वेरि कोण्ड पेच्चेल्लाम
विलक्क विषित्तेषुवाय् तमिषा ॥९॥

इन्दिय ताय मनम नोन्दु किडक्कैयिल
इन मुरै पेशुगिन्रार ! इषिवागुम।
अन्दपेरियवळिन अडिमै विलंगरुत्तुन
अन्बै निलै निरुत्तकिलमेलाम ॥१०॥

तमिषगम वाषग नल तमिष मोषि वळर्न्दम्मै
ताँगिडुम इन्दियत्ताय तवमपलिक्क
कुमिषुम नुरैयुमेन्नक्कडि मनिदरेलाम
कोञ्जिकुल विडुवोम कुवलयत्तिल ॥११॥

———

संसारके सब धर्म समय समयपर आकर तमिल प्रदेशमें समा गए। तमिल भाषा भाषियोंने किसी प्रकारके झगड़ेके बिना उन्हें गले लगाकर अपनाया ॥६॥

तमिल देशवालोंने ऐसे धर्मका पालन किया जिसमें अपनी जान चाहे दे देनी पड़े पर पर-हत्यासे दूर रहना पड़ता था। तुम्हारी तमिल भाषा ही है जिसमें यह उपदेश बार-बार मिलता है कि तुम्हारे ही प्राणके समान सभी जीवोंके प्राण हैं ॥७॥

तुम्हारे पूर्वज मानते थे कि न मारनेका व्रत ही सज्जनोंके योग्य है। तुम्हारा गृहस्थ धर्म ऐसा है कि सब लोग सब तरहसे उसकी प्रशंसा करते हैं ॥८॥

दुनिया भरमें झगड़ा-फसाद बढ़ रहा है। तुम्हारे महान् कर्तव्य कई हैं। हे तमिल भाई! लोगोंको अलग-अलग करनेवाली (लोगोंमें फूट डालनेवाली) उत्तेजक बातोंको रोकनेका प्रयत्न करो ॥९॥

भारतमाताका मन तो दुखी है और हम जाति-भेदकी बातें करें—यह तो बुरा है। उस आदरणीय माताकी दासताकी बेड़ियोंको काटकर संसार भरमें प्रेम भाव स्थापित करो ॥१०॥

तमिल प्रदेशकी जय हो। तमिल भाषाकी वृद्धि हो। हमें धारण करनेवाली भारतमाताका तप सफल हो। बुदबुदे और फेनके समान इस संसारके सभी मनुष्य हिल मिलकर रहें ॥११॥

---

३. पुगषावोण्णा करुणै जोति

मत बेद माच्चरियम मरैया वेण्डुम
        मनिदरेलाम ओरु कुलामाय वाषा वेण्डुम
विदम वेरु निरम वेरु विनैगळवेराम
        विकर्पमेलाम ओरु कडवुळ विळैयाट्टेन्ग
निदमान मेय्यरिविन निलैय मागि
        निरैवान पेरुंगरुणै जोति काट्टुम
पति यागुम मोहन दास करमचंद गाँदि
        तिरु नामम एन्रेन्रुम पारिल वाषगा ।।१।।

आयुदंगळ मिगच्चिरंद हिटलर एंगे ?
        अवन तुणैवन मुसलोनि अहंतै एंगे ?
माय मिगुम पोर पुरिन्द टोजो एंगे ?
        मानिलत्तै शीर कुलैत्तु मरैन्दार अन्रो !
पेय पुगुन्द पिणक्काडाय उलगैकण्डुम
        पिन्नुम अन्द पोर वेरियै पेशालामो ?
तायरिन्द अन्बिनैये उरुवाय ताँगुम
        तवशि एंगळ गाँदि शोलुम शान्ति कोळवोम ।।२।।

इन्ब तुन्बम एव्वुयिर्कुम ओन्रे एन्रे
        ई, एरुम्बु, पुषुक्कळुक्कुम इरक्कम काट्टि ।
अन्बु वषि वाषन्दवर्गळ तमिषर नामे
        अरुळ मिगुन्द ओरु नाडु तमिष नाडागुम ।
मुन्बिरुन्द तमिषरिन्नर शेर्त्तु वैत्त
        मूदरिवे मोहनदास करमचंद गाँदि ।
नम्बनिवन चरित्तिरमे उलगै काक्क
        नामेल्लाम कडवुळिडम नयन्दु केटपोम ।।३।।

३. अवर्णनीय करुणा ज्योति

"मतभेद, मात्सर्य आदि मिट जाएँ; मनुष्य सभी एक परिवारके-से होकर रहें; जाति-भेद, वर्ण-भेद और कर्म-भेद नामक सभी भेद-भावना भगवानकी लीलाके ही प्रकट रूप हैं;" इन सत्य ज्ञानोंसे पूर्ण महान् करुणाकी ज्योति फैलानेवाले मोहनदास करमचन्द गांधीका नाम सारे संसारमें फैला रहे ।।१।।

जिसके हथियार अत्युत्तम थे वह हिटलर कहाँ है? उसके साथी मुसोलिनीका अहंकार कहाँ है? मायामय युद्ध करनेवाला तोजो कहाँ है? वे लोग तो इस पृथ्वीको बरबाद करके नष्ट हो गए। इस संसारको भूत-प्रेत पूर्ण स्मशानवत् पाकर भी क्या युद्धकी बात चलाई जाए? मातृ-प्रेम ही मूर्तिमान होकर आया हो ऐसे हमारे तपस्वी गांधीकी शान्तिको हम अपनावें ।।२।।

हम तमिल भाषा-भाषी ही हैं जो सदासे मानते आए कि सुख दुःख जीव मात्रके लिए एक से होते हैं और मक्खी-चीटी और कीड़ोंके प्रति भी दयापूर्ण वर्ताव करते थे। कृपापूर्ण एक प्रदेश तमिल प्रदेश है। तमिल देशके ज्ञानी पूर्वजोंकी पक्की बुद्धिमत्ताको ही गांधीने अपनाया है। हम ईश्वरसे प्रार्थना करें ऐसे गांधीका चरित्र संसारकी रक्षा करे ।।३।।

कोल्लामै पोय्यामै इरण्डुम शेन्द
　　कूट्टु रवे मेय ज्ञान गुणमाम एन्र
नल्लण्मै अरम वळर्त्त तमिष नाडोन्रे
　　नानिलत्तिल अमैदि मिक्क नाडाम एन्रुम ।
वल्लाण्मै नमक्कुवरा वाषन्दु शेन्र
　　वळ्ळुवने मरुबडियुम वन्दान् एन्र ।
चोल्लाणै पुगषवोण्णा करुणै जोति
　　शुद्दन एंगळ गाँदि महान नामम वाषगा ।।४।।

अणु गुण्डु विट्टैगळुम अणुगा वोण्णा
　　अप्पालुक्कप्पालाम अरिवाय निर्कुम ।
इणैयट्र पेरुंगरुणै एल्लाम वल्ला
　　इरैवनैये मुच्चाग इषुत्तु पेशि ।
तुणै कोण्डु अवनरुळै तोडर्न्द गाँदि
　　तूयवने इन्दियत्ताय जोति यागुम ।
अणै कण्डु मद वैरियै अडक्कि तेक्क
　　अवन वषिये मक्कळुक्कु अमैदल वेण्डुम ।।५।।

शान्त वषि उलगामेलाम पोट्र वेण्डुम
　　सत्तियत्तै अरियणैयिल एट्र वेण्डुम ।
मान्दरुक्कुळ पोरवेरिगळ मरैय वेण्डुम
　　मक्कळिडम अन्बरंगळ निरैय वेण्डुम ।
शोर्न्दुषलुम एषै एलाम सुगिक्क वेण्डुम
　　शुद्दर्गळे अरशाट्चि वगिक्क वेण्डुम ।
गाँदि महान तिरु नामम वाषा वेण्डुम
　　कडवुळेन्र पेरुंकरुणै काक्क वेण्डुम ।।६।।

———

इस संसारमें तमिल देश ही वह शान्ति पूर्ण प्रदेश है जो इस तत्त्वपर आधारित धर्मका पालन करता आया कि न मारना और असत्य न बोलना नामक दो गुणोंका संयोग ही सत्य ज्ञानका मार्ग है। हममें सदाचार लानेके लिए ही जो हुए थे ऐसे वळ्ळुवर (प्रसिद्ध तमिल सन्त कवि) ही फिरसे उत्पन्न हुए हों—ऐसे वचनोंमे अवर्णनीय करुणाकी ज्योति, पवित्र गांधीजीकी जय हो ॥४॥

अणुबमकी भी विद्या जिसके पास पहुँच नहीं सकती, जो परे-से-परे ज्ञानमय हैं और जो असमान अपार करुणा-मूर्ति हैं उस सर्व समर्थ परमात्माको अपनी साँस बनाकर बोलनेवाले, उसीका सहारा लेने वाले और उसकी कृपा प्राप्त पवित्र गान्धी ही भारतकी ज्योति है। बाँधनेका मर्म जानकर धार्मिक द्वेषको बाँधने (वशमे रखने) के लिए उन्हीं गांधीका मार्ग अपनाना लोगोंके लिए आवश्यक है ॥५॥

गांधी मार्गका सारा संसार आदर करे। सत्यको सिंहासनारूढ़ करें। मनुष्योंके बीचसे लड़ाई दूर हो जाए। लोगोंमें प्रेम और धर्म बढ़े। दीन-दरिद्र सुखी हों। पवित्र लोग ही राज्य-शासन करें। महान् गांधीके पवित्र नामकी जय हो। करुणामय भगवान सबकी रक्षा करें ॥६॥

———

४. कत्तियिन्रि रत्तमिन्रि

कत्तियिन्रि रत्तमिन्रि
यु‍द्दमोन्रु वरुगुदु।
सत्तियत्तिन नित्तियत्तै
नम्बुम यारुम शेरुवीर ।। (कत्ति) ।।१।।
ओण्डियण्डि गुण्डु विट्टिङ्
गुयिर परित्त लिन्रिये।
मण्डलत्तिल कण्डिरादा
शण्डै योन्रु पुदुमैये ।। (कत्ति) ।।२।।
कुदिरै इल्लै यानै इल्लै
कोल्लुम आशै इल्लैये।
एदिरि एन्रु यारुमिल्लै
एट्रुम आशै इल्लदाय ।। (कत्ति)।।३।।
कोपमिल्लै तापमिल्लै
शापम कूरलिल्लैये।
पापमाना शेय्गै योन्रुम
पण्णुमाशै इल्लैये ।। (कत्ति)।।४।।
कण्डदिल्लै केट्टदिल्लै
शण्डैयिन्द मादिरी।
पण्डु शेय्द पुण्णियम दान
पलित्तदे नाम पार्कवे ।। कत्ति) ।।५।।
गाँदि एन्र शान्त मूर्ति
तेरन्दु काट्टुम शेन्नेरी।
मान्दरुक्कुळ तीमै कुन्र
वायन्द देयव् मार्गमे ।। (कत्ति) ।।६।।

४. बिना तलवार या रक्तके

[यह कविता उस समय रची गई थी जब 'नमक सत्याग्रह' का आरम्भ हो रहा था। इस कविताने लोगोंमे उत्साह पैदा किया और घर-घर-इस कविताका प्रचार होने लगा था।]

खड्गरहित और रक्तरहित एक युद्ध आ रहा है। सत्यकी नित्यतापर विश्वास करने वाले सब लोग उसमें सम्मिलित हों ।।१।।

(लुक-छिपकर) पास पहुँचकर गोली चलाने और प्राण हरण करनेका यहाँ कोई काम नही। यह अभूतपूर्व एक नया ही युद्ध है ।।२।।

इसमें न घोड़ा है न हाथी है। किसीको मारनेकी इच्छा नहीं है। यहाँ कोई विरोधी नहीं है। प्रहार करनेकी कोई इच्छा नहीं है ।।३।।

यहाँ कोप नही है, ताप नहीं है, शाप देना नहीं है। पाप युक्त कोई काम करनेकी इच्छा नहीं है ।।४।।

ऐसा युद्ध न कभी देखा न सुना। हमारा पूर्व-कृत पुण्य सफल हुआ कि हमें यह देखनेका अवसर मिला ।।५।।

गांधी नामक शान्त मूर्तिने (अनेक मार्गोमें) चुनकर हमें यह मार्ग दिखाया है। मनुष्यकी बुराईको नष्ट करनेके लिए सृष्ट यह दैवी मार्ग है ।।६।।

५. शंगोलि

शंगोली एषुन्ददु शंकट मषिन्ददु
दैरियम कोळ्वाय् तमिष मगने ॥१॥

कंगुलुम कषिन्दिदम कदिरोळि पोषिन्दिडुम
कवलै एलाम विडु तमिष मगने ॥२॥

कूरिरुळ मरैन्दिडुम कुळिर्वदु कुरैन्दिडुम
कुरुगि पडुत्तिडल इनि वेण्डा ॥३॥

पेररुळ शुरन्दिडुम पेरु वषि तिरन्दिडुम
पेदमै विडुवाय तमिष मगने ॥४॥

तिरुट्टुगळ नोंगिडुम तीयन नडुंगिडुम
दीनर्कबयक्कुरल शंगोशै ॥५॥

इरुट्टिनिर शेय्दिडुम यावैयुम मरैन्दिडुम
एषुन्दु कडन मुडि तमिष मगने ॥६॥

शूदरुम कुडियरुम शुरुक्केनबयप्पडुम
सुदन्दिर शंगोलि केट् कुदड़ा ॥७॥

वेदमुम कलैगळुम विट्टैगळ विळंगिड
विडिन्दिडुम संजलम विट्टिडुवाय ॥८॥

मंगळ शंगोलि मगिष तर केट्कुदु
मयक्कम विट्टेषुन्दिनि मरै पाडु ॥९॥

एंगनुम याविनुम इरुन्दरुळ कडवुळुम
इरुक्कुदु बयमिलै एषुन्दिरड़ा ॥१०॥

---

५. शंख ध्वनि

शंखध्वनि हुई। संकट दूर हुआ। हे तमिल-पुत्र, धीरज धरो ॥१॥

अन्धकारका नाश करनेवाली सूर्यकी किरणें फैलेंगी। हे तमिल-पुत्र! सब चिन्ताएँ छोड़ो ॥२॥

घना अन्धकार नष्ट हो जाएगा। सर्दी नष्ट हो जाएगी। सिमटकर लेटनेकी अब आवश्यकता नहीं है ॥३॥

एक महान् मार्ग खुलेगा जहाँसे होकर अपार कृपाकी धारा बहेगी; हे तमिल-पुत्र! दीनता छोड़ो ॥४॥

चोरी भाग जाएगी! बुराई भयभीत हो जाएगी। शंखध्वनि दीनोंको अभयदान देती है ॥५॥

अन्धकारमें जो कुछ किया जाता है वह सब नष्ट हो जाएगा। हे तमिल-पुत्र! उठो, अपना कर्तव्य पूरा करो ॥६॥

वह शंखध्वनि सुनाई पड़ती है जिसको सुनकर जुआरी और पियक्कड़ बहुत भयभीत हो जाएँगे ॥७॥

अब वह दिन निकलेगा जब वेद, कलाएँ और विद्याएँ बढ़ेंगी। चञ्चलता छोड़ो ॥८॥

आनन्द-दायक मंगल शंखध्वनि सुनाई पड़ती है। मोह छोड़कर उठो और वेद-गान करो ॥९॥

सर्व-व्यापी एवं सबमें समाए रहनेवाले भगवानके रहते किसी बातका डर नहीं, उठो ॥१०॥

६. मक्कट चेल्वम

पेट्रिडुम शेल्वत्तेल्लाम
    पेरियदु मक्कट् चेल्वम ।
उट्रिडुम इन्बत्तेल्लाम ।
    उयर्न्ददु मक्कळिन्बम ।।
मट्रिदै उलगिलेन्द
    मनिदनुम मरुक्कोणादु ।
शट्रिदै मदित्तु नामुम
    सरिवरा नडप्पो मागा ।।१।।

शिरन्दिडुम इन्बमाना
    शिशुवदु नमक्कु वन्दु ।
पिरन्दिडु मुन्नुम पिन्नुम
    नाम शेय्युम पिषैगळाले ।
अरुन्दव कुषन्दै इन्बम
    अनुबविप्पदर्कु मुन्नाल ।
इरन्दिडुम अदनैप्पोला
    इन्नोरु तुन्बमुण्डो ।।२।।

उरुविनिर्कुरैन्द देन्रुम
    उडल मिग मेलिन्द देन्रुम ।
अरिविनिर्कुरैन्द देन्रुम
    अषगिनै इषन्ददेन्रुम ।।
पिरविियिन कुरैगळेल्लाम
    पेट्रवर कुट्रत्ताले
करुविनिल् अमैन्द दल्लार
    कडबुळिन कुट्रमुण्डो ? ।।३।।

६. सन्तान भाग्य

प्राप्य सभी सम्पदाओंमें सन्तानकी सम्पत्ति सर्व श्रेष्ठ है। प्राप्य सभी सुखोंमें पुत्र-सुख उत्तम है। इस बातका कोई किसी तरहसे खण्डन नहीं कर सकता। हम भी इसको मानकर उचित जीवन बिताएँ ॥१॥

उत्तम सुख देनेवाला शिशु हमारे यहाँ जन्म प्राप्त करनेके पूर्व ही या पैदा होनेके बाद, हमारी ही त्रुटियोंसे हमारे वात्सल्य-सुख पानेके पहले ही मर जाता है—इससे बढ़कर दुखकी कौन सी बात हो सकती है ॥२॥

आकारका छोटा है, तन बड़ा दुबला है, बुद्धिकी कमी है, सौन्दर्यकी हानि आदि जो जन्म जात कमियाँ हैं वे माँ-बापकी त्रुटिसे ही गर्भमें ही शिशुमें आ जाती हैं। इन कमियोंमें भगवानका कोई दोष नहीं है ॥३॥

विदि विलक्करिन्दु वाष्न्दु
विमलनै मनत्तुळेण्णि ।
मदियिनै कोण्डु शुद्द
मार्गत्तिल निन्रु नामुम ।।
पुदलवरै पेट्रु मट्रुम
बुद्दियाय वळर्पो मानाल ।
इदमुरा वन्द मक्कळ
इळमैयिल इरप्पदुण्डो ? ।।४।।

वित्तिनै पोट्रि तृवुम
विळै निलम पषुदु पार्त्तु ।
शुट्रिडुम मिरुग वासै
तुर्ईत्तिडा वेलि शुट्रि ।।
पत्तियिर्कात्तु पण्णै
पयिरदु शैय्दुविट्टाल ।
शोत्तैयाय शोर्गैयागा
तोन्रुमो शेन्नेल शेल्वम ।।५।

विधि-निषेधका ज्ञान पाकर तदनुसार जीवन चलाए, परम-पवित्र भगवानका ध्यान करके सदबुद्धिसे शुद्धाचरण करे और सन्तान प्राप्तकर बुद्धि पूर्वक उसका पालन करे तो सुख देनेवाले शिशु अल्पायुमें क्यों मरेंगे ? ।।४।।

जहाँ बीज बोना है उस जमीनको ठीक-ठाक कर, जानवर चर न जाएँ, इस उद्देश्यसे चारों ओर घेरा डालकर यदि श्रद्धापूर्वक खेती की जाए तो शस्य खराब क्यों होगा ? ।।५।।

७. ओरु मरुंदु

दैय्वत्तनमिक्क मानिड् जन्मम
तीमै वळर्त्तु तिगैप्पदु एन्ने !
कैयिल कडंगोलै करुविगळ कोण्डु
कण्णिल वेरिकोण्ड पावैं मरुण्डु ।।
वेय्यिर्पुषुवेन्नवे तुडि तुडिप्पोम
वेदनै पोंगुम मनम पडुम पाडुम ।
वैयत्तिल एंगुम मनिदर्गळ यारुम
वाष्क्कैयिन इन्बम इषन्दनर पारुम ।।१।।

अन्बिर्केन्रे वन्द मनिदप्पिरप्पे
आररि वुळ्ळदेन्बार्गळ शिरप्पे ।
'तुन्बत्तुक्के मुट्रुम अरिवै शेलुत्ति
शुट्रु मडिक्किरार ऊरै कोळुत्ति ।।
इन्बम अडैन्दवर यारैयुम काणोम
एदुक्कु मक्कळै कोल्लुवर वीणे ।'
एनबत्तै माट्र मरुन्देन्न वेन्रे
एंगुवर यारुम अरिज्ञर्गळ इन्रे ।।२।।

कोञ्जिक्कुलावुदल मक्कळ मरन्दार
कूडिप्पषगुदल कूडक्कुरैन्दार ।
अञ्जि नडुंगि ओदुंगु गिन्रार्गळ
आगायम पार्त्तुप्पदुंगुगिन्रार्गळ ।
वंजनैयट्र वलिमैयिल्लामल
वानत्तिल वन्दे एदिर्क निल्लामल ।
कुंजुकुषन्दैगळ पेण्गळै कोल्वार
गोरत्तै वीरत्तिन पोरेन्रु शोल्वार ।।३।।

७. एक दवा

देवांश-युक्त मानव बुराइयोंमें फँसकर दुखी क्यों है? हाथोंमें हत्याके हथियार लिये आँखोंमें नशा रखता है। धूपमें तड़पनेवाले कीड़के समान तड़पता है और वेदनापूर्ण व्यथित-मन रहता है। संसारके सभी मनुष्य जीवनके सुखसे वञ्चित हैं ॥१॥

कहते हैं कि प्रेमका प्रदर्शन करनेके लिए ही मानव-जन्मकी सृष्टि हुई। आजके सभी विज्ञ इस चिन्तामें डूबे हैं कि (अनजान मनुष्य) बुराईमें ही अपनी सारी बुद्धि लगाकर आदमियोंको मारते और गाँवोंको जलाते फिरते हैं——फिर भी कोई सुख नहीं पाते। व्यर्थ ही क्यों भाइयोंको मारते हैं? क्या इसकी कोई दवा (इसको दूर करनेका उपाय) नहीं है? ॥२॥

लोग प्रेमालाप करना भूल गए हैं। उनके हिल मिलकर रहनेकी रीति नहीं रही। एक दूसरेसे डरते हुए अलग-अलग रहते हैं। आकाश देखते हुए (निराश होकर) छिपनेका यत्न करते हैं। न उनमें निष्कपट बल है न खुले मैदानमें उतरनेका साहस। निरीह बच्चोंको और स्त्रियों को मारते हैं। इस घोर-कर्मको 'समर' कहते हैं ॥३॥

वाळुक्कुवाळाम विल्लुक्कु विल्लाम
वर्गैमिक्क आयुदम तीर्न्दिडिल मल्लाम।
आळुक्के आळ निन्रु नेरुक्कु नेराम
आण्मैयुम आट्रलुम शेयवदु पोराम॥
नाळुक्कु नाळवन्दु नळिळरुल दन्निल
नरिपोलुम कुरि तेडुम कळ्ळर्गळेन्नप्।
पालुक्कु वाय् वैक्कुम बालरै कोल्वार
पावत्तै नागरीकम्मेन चोलवार॥४॥

एन्दिरा विट्टैगळ वेणदु कट्रोम
एन्नेन्नमोपला पुदुमैगळ पेट्रोम।
चन्दिरन शेव्वाय मण्डलत्तोडुम
संगदि पेशा वषिगळै तेडुम॥
अंदमिल्लापला शक्तिगळ उट्रुम
अडि तडि शण्डैयें विट्टिड मट्रुम।
तन्दिरम ओन्रु पडित्तिलम ऐयो
दरणियिल मक्कळ तविप्पदु पोय्यो॥५॥

इत्तनै तीमैक्कुम एट्र मरुन्दु
इन्दिय ज्ञानिगळ कण्ड मरुन्दु।
उत्तमर यारुम उवक्कुम मरुन्दु
उलगत्तिल तुन्बम ओषिक्कुम मरुन्दु॥
सत्तियम शान्तम इरण्डु शरक्कै
समनिडै अन्बेनुम तेनिल कुषैत्तु।
पत्तियम देय्व निनै प्पोडुम उण्डाल
पारुक्कुळ पेरुक्कुम पोरिलै कण्डाय॥६॥

इनके औजार भी कैसे हैं---तलवार-तीर जैसे। अगर ये अस्त्र न रहें तो मल्ल-युद्ध हो जाए। एक मनुष्य दूसरेसे भिड़ जाए---पौरुष प्रकट करे---इसका नाम है 'समर'। दिन-प्रति-दिन आधी रातमें लुकी छिपी घात लगानेवाली लोमड़ी जैसे दूध (पीने) के लिए मुँह लगानेवाले शिशुओंकी हत्याको सभ्यता कहते हैं ।।४।।

हमने कितने ही यन्त्रोंकी विद्या खूब पढ़ी; कितनी ही नूतनताएँ पाई। ऐसी अनन्त शक्ति पाई कि चन्द्र और मंगल ग्रहोंसे बातें कर सकें। इतनी शक्ति पाकर भी हम मारपीटको छोड़ देनेका कोई मर्म सीख नहीं सके। दुनियाके सभी दुखी है---यह क्या झूठ है? ।।५।।

इन सब बुराइयोंकी एक दवा है। उस दवाका पता लगाया--भारतीय ज्ञानियोंने। इस दवाकी बड़े बड़े लोग प्रशंसा करते हैं। यह दवा दुनियाके दुखोंको दूर कर देगी। सत्य और शान्ति नामक दो औषधियोंका सम भाग लेकर प्रेम नामक शहदमें घोलो; परमेश्वरका स्मरण नामक पथ्यका पालन करो। इसका सेवन करनेपर देखो लड़ाई नामको भी नहीं रहेगी ।।६।।

------

८. किळियुम वषियम

आदि सुतंतिरत्तै किळिये अडैय वषि तेडु ।
नादन तिरुवडियै किळिये नाडि जयम पाडु ।।१।।

इन्द पेरु निलत्तिल किळिये इच्चै पडि परक्क ।
सोन्दम उनक्किलैयो किळिये शोल्लडि वाय तिरंदु ।।२।।

काट्टिनिले पिरन्दाय किळिये काट्टिनवे परन्दाय ।
कूट्टिनिले किडक्क किळिये कूशलैयो उनक्कु ।।३।।

तंग मणि कूण्डिल किळिये तंगि इरुन्दालुम ।
अंगुचुदन्दिरत्तिन किळिये आनंदमेदुनक्कु ।।४।।

सोन्द मेल्लाम मरन्दु किळिये शुट्रमेल्लाम मरन्दु ।
इन्नदप्पडि इरुक्क किळिये इच्चै कोण्डायो नी ।।५।।

पच्चै मरक्किळै मेल किळिये पाडुदल नी इषन्दाय ।
इच्चै उयिर मेले किळिये इन्नुम एदर्कागा ? ।।६।।

ओडि इरै तेडि किळिये उण्बदु नी मरन्दाय ।
नाडि पिरर कोडुक्क किळिये नाणमिन्निप्पुशित्ताय ।।७।।

काट्टु पषा वर्गैयै किळिये काणुदल नी मरन्दाय ।
पोट्टदै उण्डिरुक्क किळिये बुद्दि मगिषन्दाये ।।८।।

सोन्द मोषि मरन्दाय किळिये शोन्नदु शोल्लु गिन्राय ।
इन्द विदम वाषुम किळिये इन्बमुनक्केदु ? ।।९।।

८. तोता और तरीका

[इस कविताके हर चरणमे 'किळिये' शब्द आता है--जिसका अर्थ है "हे तोते!" तमिल भाषामें तोतेको स्त्री माना जाता है ।]

हे तोते ! अपनी पूर्व स्वतंत्रताको पानेका मार्ग निकालो। परमेश्वरके चरणका आश्रय लेकर जयगीत गाओ ।।१।।

इस विशाल पृथ्वीपर मनमाने उड़नेका क्या तुम्हें अधिकार नहीं है? कहो तो ।।२।।

वनमें पैदा होकर तुम हवाके समान (निर्बाध होकर) उड़ते थे। पिंजड़ेमें बन्द रहते क्या तुम्हें संकोच नहीं होता? ।।३।।

रत्न जड़ित सोनेके पिंजरेमें रहो तो भी वहाँ स्वतन्त्रताका आनन्द कहाँ? ।।४।।

अपनोंको भूल करके, परिवारका त्याग करके यों रहनेकी क्या तुम्हारी इच्छा है? ।।५।।

हरे पेड़ पर बैठे-बैठे गीत गाना तुम्हारे लिए अब साध्य नहीं है। अब अपनी जान पर ममता किस कामकी? ।।६।।

दौड़ धूप कर खाना प्राप्त करनेका क्रम तुम भूल गए। औरोंके आश्रयमें रहकर उनका दिया हुआ (अन्न) तुम निर्लज्ज होकर खाते हो ।।७।।

वनके कई फलोंको देखना (भी) तुम भूल गए। जो कुछ दिया गया उसीको खा लेते हो--इतना-बुद्धि-भ्रष्ट हो गए हो ।।८।।

अपनी निजी बोली भूलकर जो कुछ रटाया जाता है वही रटते हो। ऐसे जीनेमें तुम्हें कौनसा सुख मिलता है? ।।९।।

उन कुलत्तै पषिक्क किळिये उत्तरवानालुम ।
अंगदु शेय दुयिरै किळिये आशैयुडन वहित्ताय ।।१०।।

एण्णमुनक्किरुन्दाल किळिये एत्तनै नेरामाडि ।
कण्णै तिरक्कु मुन्ने किळिये काट्चि सुतंतिरमाम ।।११।।

नल्ल वषि शोल्लुवेन किळिये नाडि तेरिन्दुक्कोळ नी ।
अल्लल वषि विडुत्तु किळिये अन्बिन वषि तेडु ।। ।।१२।।

कूट्टै उडैत्तुवरा किळिये कूडादुन्नाले ।
चेट्टै वषिगळै नी किळिये शेय्दिडुम जातियिल्लै ।।१३।।

शोन्नदै शोल्लादे किळिये शोरिड़ उण्णादे ।
एन्न अषैत्तालुम किळिये एनेन्रु केळादे ।।१४।।

रंग रंगावेन्रु किळिये इंगिदम पेशादे ।
एंगे एंगे एन्रु किळिये एळनाम शोल्लादे ।।१५।।

कोञ्जि मगिषादे किळिये गेञ्जि पुगषादे ।
अञ्जि नडुंगादे किळिये आडि नडक्कादे ।।१६।।

कोण्ड यजमानन किळिये कोपित्तुक्कोण्डालुम ।
आडि उयिर वाष्गा किळिये आगादेन्रु शोल्वाय ।।१७।।

कोल्लुवनेन्नालुम किळिये कोञ्चमुमञ्जादे ।
मेल्लुवमेन्नालुम किळिये मेनि नंडुगादे ।।१८।।

वेट्टुव नेन्नालुम किळिये वेट्टुरै एन्निरुप्पाय ।
कट्टिडा वन्दालुम किळिये शोदनै एन्निरुप्पाय ।।१९।।

अगर आज्ञा हो कि अपने ही कुलकी निन्दा करो तो तुम वैसे ही करके अपने प्राण प्रेम पूर्वक धारण करते हो ।।१०।।

अगर तुम निश्चय मात्र कर लो तो देरी कहाँ ? पलक मारते-मारते स्वतन्त्रता सामने आ जाए ।।११।।

मैं अच्छी बात बताऊँगा, जरा मान लो। दुखका मार्ग छोड़कर प्रेमका मार्ग अपनाओ ।।१२।।

पिंजरा तोड़कर आना तो तुमसे होनेका नहीं ; अनुचित काम करनेवाली जातिके तो तुम नहीं हो ।।१३।।

जो रटाया जाए वह न रटो ; जो खिलाया जाए वह न खाओ ; चाहे जितनी बार बुलाएँ, जवाब न दो ।।१४।।

'रंगा-रंगा* मत बोलो। 'कहाँ-कहाँ' कहकर हँसी का पात्र मत बनो ।।१५।।

चहक कर खुशी न मनाओ। दीन होकर स्तुति न करो। मारे डरके काँपो मत। झूमते न चलो ।।१६।।

तुम्हें जिसने खरीदा वह मालिक रुष्ट हो तो भी कह दो कि अधीन होकर प्राण धारण करना ठीक नहीं है ।।१७।।

यदि वह कहे कि मार डालूँगा तो भी डरना मत। यदि वह कहे कि (कच्चा) चबाऊँगा तो काँपने मत लगो ।।१८।।

यदि वह कहे कि बोटी-बोटी काट डालूँगा तो उसको निरे वचन (धमकी) समझना। यदि तुम्हें बाँधने (बन्धनमें डालने) आए तो अपनी परीक्षा समझो ।।१९।।

---

* अक्सर तोतेको तमिल देश 'रंगा एंगे' रटाया जाता है। 'रंगा' भगवानका नाम है और 'एंगे' का अर्थ है कहाँ ?

शोदनै कालमडि किळियें शोर्न्दिडुवायो नी ?
वेदनैयैप्पोरुत्ताल किळियें वेट्रि युनदागुम ।।२०।।

इन्दप्पडि किडक्क किळियें इयला देन्बदनै ।
उन्नन एजमानन किळियें उणरुम्पडि नडप्पाय ।।२१।।

इप्पडि नी नडन्दार किळियें एण्णियेण्णि पार्ते ।
ओप्पि यजमानन किळियें योचनै शेय्वाण्डि ।।२२।।

कारिय मुन्नाले किळियें काशळ विल्लैयेन्रु ।
वीरियम पेशामल किळियें विट्टिडुवानुनैये ।।२३।।

कोदि शिरगुलर्त्तो किळियें कूशा मल विरित्तु ।
नादन पुगष् पाडि किळियें नाट्रिशैयुम् परप्पाय ।।२४।।

नीण्ड पेरु वानम किळियें नीयदिले परन्दु ।
आण्डवन सन्निधियै किळियें अण्डि सुगमडैवाय ।।२५।।

———

यह तो परीक्षाका समय है--क्या तुम घबड़ाओगे ? यदि संकट सह लो तो विजय तुम्हारी होगी ।।२०।।

तुम ऐसा बर्ताव करो कि तुम्हारा मालिक जान जाए कि यह स्थिति (अधिक समय तक) टिक नहीं सकती ।।२१।।

तुम ऐसा बर्ताव करो तो खूब सोचकर तुम्हारा मालिक कोई मार्ग निकालनेका यत्न करेगा ।।२२।।

वह जान जाएगा कि तुमसे रत्ती भरका भी काम नहीं है और बिना चूँ किए तुम्हें छोड़ देगा ।।२३।।

तुम अपने पर सँवारकर निस्संकोच फैलाओगे और भगवानकी स्तुति गाते हुए चारों ओर उड़ोगे ।।२४।।

अनन्त आकाशमें उड़ते हुए तुम भगवानका सान्निध्य पाकर सुखी होओगे ।।२५।।

---

९. तालाट्टु

आरारो, आरिररो
    अम्मा नी कण्णुरंगु ।
पेरेदो, ऊरेदुवो
    पेट्रवर गळ यारेवरो ।।
शीरारुम कावेरी
    तेवी तिरुवरुळाल ।
वारामल वन्दुदित्त
    मार्मणिये कण्णुरंगु ।।१।।

आषक्करै पुरळुम
    कावेरी आट्रगे ।
एषै पडगोट्टि
    एन कणवन आनालुम ।।
कूषै कुडित्तुरंगुम
    कुडित्तनम दान एन्रालुम ।
कोषैगळ अल्लवम्मा
    कुरैच्चल उनक्केदु मिल्लै ।।२।।

९. लोरी

[कावेरी नदीमें बहता हुआ शिशु मिला। मल्लाहकी पत्नी उसका पालन कर रही है; उसको सुलाती हुई यह लोरी गाती है। तमिल प्रदेशकी लोरीमें 'आरारो, आरिररो' शब्द आरम्भमें अवश्य रहते हैं। इन शब्दोंका भाव यह है कि न मालूम कौन अब (इस वंशमें शिशु होकर) पैदा हुआ है।]

आरारो, आरिररो! माई मेरी! तू सो जा। न जाने तेरा क्या नाम है, कहाँ घर है और माँ-बाँप कौन है। इस उत्तम कावेरी देवीकी कृपासे हमारे लिए अप्राप्य तू उत्तम रत्न हमें मिला; सो जा ॥१॥

मेरा पति खूब गहरी और चौड़ी कावेरीपर (नाव चलानेवाला) गरीव मल्लाह है। हमारा परिवार रूखा-सूखा खाकर सन्तुष्ट होकर सो जानेवाला है। तो भी हम दीन नहीं हैं। तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं रहेगी ॥२॥

नाळै कणक्केण्णि
नल्ल नल्ल शम्बळत्तिल ।
आळै मिरट्टुगिन्न
अदिकारम इल्लैयम्मा ।।
वैळै पोषुदिल्लामल
वैलै शेय्युम जीवनंदान ।
काळि,कुल देयवम
कात्तिडुवाळ कण्णुरंगाय ।।३।।

अदिकारम एन्रु शोल्लि
अनियायम शेयदरियोम ।
सदिक्कार तंदिरत्ताल
सम्पादित्तुण्बदिल्लै ।।
तुदि पाडि पोय पेशि
सुगित्तिरुक्कुम शूदरियोम ।
गदिकेडु वंदु विड
कारणंगळ इल्लैयम्मा ।।४।।

वादु वषक्करियोम
वम्बु तुम्बु शेयदरियोम ।
शूदु पुरिन्दरियोम
पोय शाट्चि शोन्नदिल्लै ।।
नीदि नेरि तवरि
निंदै शोल्ल निन्नदिल्लै ।
एदुम ओरु केडुदि
इंगु वरा ञायमिल्लै ।।५।।

अच्छे वेतनपर दिन गिननेवाले और मातहतोंको डाँटने वाले हम नहीं है। हम हमेशा हर काम करते रहने वाले जीव हैं। काली माई हमारी कुल-देवी है वह रक्षा करेगी, तू सो जा ।।३।।

अधिकारका नाम लेकर हम अन्याय नहीं करते। धोखा घड़ी या षड़यन्त्रसे कमाकर खानेवाले हम नहीं है। हम झूठ-मूठ तारीफ करके सुखी जीवन नहीं बिताते। हमारी दुर्गति कभी नहीं होगी ।।४।।

हम बढ़ बढ़ कर बोलना नहीं जानते; बहस नहीं करते। हम धोखा देना नहीं जानते ; झूठी गवाही कभी नही दी। नीति और न्यायकी भूलकर भी निन्दा नहीं करते है। कोई कारण नहीं कि हमारी कोई बुराई हो ।।५।।

वेलै यिन्रि कूलि कोळ्ळुम
    विद्दैगळै कट्टरियोम।
कूलियिन्रि वेलै कोळ्ळुम
    कोडुम्बावम शेयदरियोम।।
कालैयेन्रुम मालैयेन्रुम
    कालमिन्रि पाडु पट्टु।
नालु पणम वंदालुम
    नल्ल सुकम शेय्दु वैप्पोम ।।६।।

तेडि पुदैत्तु वैत्तु
    वयिरार त्तिन्नामल।
वाडि पशित्तु नोन्दु
    वन्दवरै निन्दै शोल्लि।।
ओडि ओळिन्दु कोळ्ळुम
    उलुत्तरल्ल नाँगळम्मा।
नाडि ओरु तोम्बुवरा
    ञार्यमिल्लै इव्विडत्ते ।।७।।

कोवम मिगुन्दालुम
    कुत्तु शण्डै वन्दालुम।
पावम पषिगळुक्कु
    बयन्दोडंगुम एंगळुक्कु।।
शीवन इरुक्कुमट्टुम
    देहम उदवुम अम्मा।
देवि तुणैयिरुप्पाळ
    तेळ्ळमुदे कण्णुरंगु ।।८।।

हम बिना काम किये पारिश्रमिक लेनेकी विद्या नहीं जानते। बिना पारिश्रमिक दिये काम लेनेका महान पाप हमने कभी नहीं है किया। सुबह हो चाहे शाम खूब मेहनत करते और जो कुछ भी मिलता है उसीमें सुख मनाते हैं ।।६।।

हम वे निकम्मे लोग नहीं है जो पेटभर खाना न खाकर पैसे जमा करते हैं और भूखे प्यासे आनेवाले दीन दुखियोंको भला बुरा सुनाकर छिप जाते हैं। हमारे पास भला दुःख क्यों आएगा ।।७।।

क्रोधके आवेशमें या मारपीटमें भी पाप और बुराईका भय माननेवाले हम लोगोंके शरीर, प्राण रहते बेकार नहीं रहेंगे। देवी हमारी रक्षा करेगी। हे अमृतमयी! सो जा ।।८।।

पळ्ळ पडिप्परियोम
　　पट्टणत्तु पेच्चरियोम ।
वेळ्ळै तुणि यरियोम
　　वीण पिलुक्कु शेयदरियोम ।।
कळ्ळ पिषैप्परियोम
　　कावेरि शाट्चियम्मा ।
उळ्ळ प्डि इंगुनक्के
　　ओरु कुरैयुम इल्लैयम्मा ।।९।।

हम शालाकी .शिक्षा से परिचित नहीं हैं। नगरवासियोंकी वाणी नहीं जानते। शुद्ध वस्त्र हम नहीं जानते ; व्यर्थके बखेड़े हम नहीं जानते। चोरी हम नहीं जानते। कावेरी माकी सौगन्ध है। यहाँ तुझे किसी बातकी कमी नहीं है ॥९॥

१०. अवनुम अवळुम विरुम्बिय नाडु

मन्नवन अेन्र मनिद निल्लै—अंगे
मंदिरि तंदिरि यारुमिल्लै।
शिन्नवर एन्रुम एवरुमिल्लै—पट्टम
तेडि अलैन्दिडुम मक्कळिल्लै ॥ १ ॥

ऊरुक्कु पत्तुप्पेर नल्लवर्गळ—पोदु
योशनै शेय्दिड वल्लवर्गळ।
आरुक्कुम एदिलुम ओरंगळ शेय्यामल
अप्पप्पो तीर्पुगळ शेप्पिडुवार ॥ २ ॥

नल्लवर केट्टवर एन्बदेल्लाम—अंगे
राजांगम पट्टम पदवियल्ल।
शोल्लिल नडत्तैयिल शूरत्तिल दीरत्तिल
शुद्दरेन्रु पलर नत्तुवदे॥ ॥ ३ ॥

कच्चेरी एन्रोरु कट्टिडमुम— अदै
कण्डु नडुंगुदल अंगिल्लैये।
अच्चमिल्लामले यारुम पोरुप्पुडन
अंगंगे नीति नडत्तिडुवार ॥ ४ ॥

वीदिक्कु वीदियोर नीदि स्तलम—पत्तु
वीट्टुक्कु अंगोरु पाळ्ळिक्कूडम।
नीदिक्के ओडि यलैन्दु शेलाविट्टु
निलै केट्टु पोगिर निन्दै यिल्लै ॥ ५ ॥

पळ्ळिप्पडिप्पुक्कु शम्बळम—इन्नुम
परीट्चैक्कु कट्टप्पणामेनवुम
पिळ्ळैगळ पन्दाड, पिन्नुम पणामेन्रु
पिच्चि पिडुंगुदल अंगिल्लैये ॥ ६ ॥

१०. स्त्री और पुरुष (दोनों) का प्रिय देश !

वहाँ राजा नामक एक मनुष्य नहीं है ; मन्त्री या तन्त्री कोई नहीं है। छोटा कोई नहीं हैं, न उपाधिके पीछे भटकने वाले लोग ही। ।।१।।

गाँवके दस जने जो सार्वजनिक (बातोंपर) विचार करनेमें समर्थ हैं, किसीका कोई पक्ष लिए बिना समय समय पर निर्णय करते रहेंगे। ।।२।।

वहाँ अच्छे बुरेका आधार राजकीय उपाधि या पदवी नहीं है; वचनमें, चरित्रमें, शूरतामें और धीरतामें बहुत लोगों द्वारा माना जाना ही आधार बनेगा। ।।३।।

वहाँ न कचहरी (अदालत) नामक कोई इमारत होगी और न कोई उसे देखकर डरेगा। निर्भय होकर सभी अपने अपने दायित्वको जानते हुए नीतिका अनुसरण करते कराते रहेंगे। ।।४।।

हर मार्ग पर एक न्यायालय, हर दस घरपर एक पाठशाला, (यह वहाँका क्रम होगा) न्यायपर इधर-उधर भटककर, (बेहद) खर्च करके बरबाद होनेका क्रम वहाँ नही है। ।।५।।

पाठशालामें पढ़नेके लिए शुल्क, फिर परीक्षाके लिए शुल्क, उसके बाद बालकोंके गेंद खेलनेके लिए और शुल्क, आदि शोषण वहाँ नहीं है। ।।६।।

वैलैयिल्लादवर यारुमिल्लै—मुट्रुम
वीणरुक्कंगे वेलै यिल्लै।
कूलियिल्लादवर यारुमिल्लै—शुम्मा
कुम्बिट्टु तिन्गिन्र कुम्बलिल्लै ॥ ७ ॥

कनुम कुरुडनुम नोण्डि मुडंगळुम
कोञ्ज़म; अवरुक्कुम पंजमिल्लै।
दानम कोडुप्पदेन्रिल्लामल—पोदु
धर्म मेन्रे वैत्तु ताँगिडुवार ॥ ८ ॥

ओप्पि मनंगळित्तेल्लोरुम—अंगे
उंडु उडुत्तु कळित्तिडुवार।
तप्पिदम शेय्दिड़ तोन्रादे—अदन
दण्डनै तन्दिड वेण्डादु ॥ ॥ ९ ॥

वादु वषक्कुक्कु नेरमिल्लै—अंगे
वञ्जित्तु वाषा मुडियादु।
शूदु शेय पंदयम एदु मिल्लै—मुट्रुम
शोम्बिच्चुगिक्क वषियुमिल्लै ॥१०॥

कळ्ळै कुडिप्पदु कूडादु—अंगे
कामा कलगंगळ कण्डदिल्लै।
कोळ्ळै यडित्तिड तेवैयिल्लै—एन्रुम
कोञ्जमुम यारुक्कुम पञ्जमिल्लै ॥११॥

कावेरी नीर वट्रि पोवदिल्लै—ओरु
कालवाय मेस्तिरि एंगुमिल्लै।
कावलुम कट्टुगळ एदुवकंगेप्पोदुम
कळ्ळर बयमेन्र शळ्ळैयिल्लै ॥१२॥

वहाँ कोई बेकार नहीं रहेगा। अयोग्य लोगोंके लिए वहाँ स्थान नहीं है ; यों ही (झूठी) नम्रता प्रदर्शित कर खाने वालोंकी टोली नहीं है। ।।७।।

कुबड़े, अन्धे, लँगड़े, लूले कम हैं। उन्हें भी किसी वातकी कमी नहीं है। वहाँ दान देनेका क्रम नहीं है—सामूहिक (दान) धर्मका प्रबन्ध रहेगा। ।।८।।

सभी सन्तुष्ट और प्रसन्न मनके साथ खा-पहनकर सुखी रहेंगे। न बुराई करनेका विचार होगा न उसका दण्ड देनेकी आवश्यकता रहेगी। ।।९।।

वहाँ तर्क वितर्कके लिए समय नहीं रहेगा धोखा देना असम्भव होगा। जुआ खोरी किसी तरहकी नहीं रहेगी। सुस्त रहकर सुखी होनेका कोई मार्ग नहीं होगा। ।।१०।।

वहाँ मद्य-पान मना है। काम-जनित कलह वहाँ नहीं होता। लूट मारकी कोई आवश्यकता ही नहीं है; किसीको किसी वातकी कोई कमी नहीं है। ।।११।।

कावेरी (नदी) का जल कभी सूखता नहीं है। नहरका मिस्त्री* नामक कोई व्यक्ति नहीं है। कभी भी वहाँ पहरे और बन्धनकी कोई आवश्यकता नहीं है। चोर भयका वहाँ नाम भी नहीं है। ।।१२।।

---

*जहाँ बाँध बनाकर नहरोंमे पानी बहानेका प्रबन्ध रहता है, वही पानीके बहावपर ध्यान रखनेवालोंको नहरका मिस्त्री कहते है।

पण्णैयक्कारर्गळ एल्लारुम— एंगुम
पट्टिणि एनगिर शोल्लेदु ।
गण्णियम अट्रवर यारु मिल्लै—ओरु
कालित्तनम पण्ण एलादु ।।१३।।

कण्डदुम केट्टदुम एप्पडि पोनालुम
कच्चेरिवन्दु पोय शोन्नदु मेय ।
कण्डवर उण्मैयै शोल्लवुम वाय पोत्ति
कै कट्टि निन्रिडुम कष्टमिल्लै ।।१४।।

कोडुत्त प्पणत्तैयुम वाँगुदर्कु—नित्तम
कोर्ट वाशलिल कात्तिरुन्दुम ।
अडुत्तप्पिरविक्कि पोगुम मट्रुम—नोन्दे
अल्लल अडैन्दिड़ा तोल्लैयिल्लै ।।१५।।

दुक्कत्तै शोल्लि अषुवदर्कुम—वेगु
दूरम नडन्दु पिरादु शोल्लि
पक्कत्तिल निन्रवर एनेन्रु केट्कवुम
पट्ट्रु पोवदुम शट्रुमिल्लै ।।१६।।

तोण्डुप्पडादेन्रु शोन्नालुम-अंगे
तोण्डुदल वेण्डि तिरिवादिल्लै ।
वेण्डिय सुगंगळ यावुम पिररै पोल
वेण्डु मट्रुम उण्डु वेरेदर्क ?।।१७।।

कोयिल कुळंगळुम वेणादुण्डु—आनाल
कुम्बिड पोवादिल शण्डैयिल्लै
वायिल जपा तपम वञ्जनैनेञ्जत्तिल
वैत्तु पिषैत्तिड तेवैयिल्लै ।।१८।।

वड्डिक्कि पोड़ा पणमुमिल्लै—अंगे
वड्डिक्कि वड्डि शेय शट्रुमिल्लै ।
पेट्टिक्कि शावियुमिल्लामल—वेरुम
पेच्चिल पुरण्डिडुम नाणयंगळ ।।१९।।

वहाँ सभी खेतीका काम करते हैं—फिर भूखका नाम भी वहाँ कैसे रहेगा? गम्भीरता-शून्य वहाँ कोई नहीं है। छोटापन वहाँ नहीं हो सकता। ॥१३॥

चाहे जो देखा हो या सुना हो पर कचहरी (अदालत) में आकर झूठ भी कहा जाय वह सत्य ही माना जाता है। पर उस देशमें जो कुछ देखा उसे सच-सच कहते किसीको डरनेका कोई कष्ट नहीं उठाना होगा। ॥१४॥

दिया हुआ पैसा वापस पानेके लिए प्रति दिन अदालतमें हाजिरी देनी पड़े और फिर भी अगले जन्मकी प्राप्ति तक तंग हो होकर थकनेकी स्थिति हो ऐसी बात वहाँ नही है। ॥१५॥

अपना दुखड़ा रोनेके लिए (अपने दुखकी बातें सुनानेके लिए) बहुत दूर जाकर कुछ कहो तो भी सुनने वाला चूँ भी न करे ऐसी निर्दय स्थिति वहाँ नहीं है। ॥१६॥

छुओ मत, कहने पर वहाँ कोई छूनेके लिए आतुर होकर नहीं फिरता। सुखके लिए आवश्यक जितने साधन दूसरोंके पास हैं उतने ही अपने पास पाकर कोई असंतुष्ट क्यों होगा? ॥१७॥

मन्दिर और तीर्थ बहुत है पर (पहले कौन करे) ऐसा पूजा-सम्बन्धी झगड़ा नहीं है। मुँहमें राम और बगलमें छुरी रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। ॥१८॥

सूदपर लगानेके लिए किसीके पास पैसा नहीं है। सूदपर सूद लेनेका कानून नहीं है। पेटीकी कोई चाभी नहीं होती। साख जबानपर ही चलती है। ॥१९॥

दानियम तवसम अल्लामल——अंगे
तंगमुम वेळ्ळियुम शेल्वमल्ल ।
नाणयमाट्रेन्न नाटक जालंगळ
नागरिका पित्तलाट्ट मिल्लै ।।२०।।

चित्र कुषन्दैक्कु तालिकट्टि——वेगु
शोग्गिरम तालि अरुत्तालुम ।
वन्नम केडुत्तवन वाष्वै कुलैत्तिडुम
वण्ड वषक्कंगळ कण्डदिल्लै ।।२१।।

नाट्टुक्कु पगैवर यारुमिल्लै——पिरर
नाट्टिन मेल आशैयिल्लाददनाल ।
शूट्टुक्कु शूडुम कोडुत्तिडुवार——पगै
दुष्टर वन्दालुम तुरत्तिडुवोम ।।२२।।

———————

धान्य और अनाज ही वहाँ सम्पत्ति है न कि सोना और चाँदी। सिक्का–परिवर्तन नामक सुसभ्य-धोखाबाजी वहाँ नहीं है। ॥२०॥

छोटीसी बच्चीका मंगल सूत्र बाँध दिया जाए (विवाह कर दिया जाए) वह शीघ्र ही वितन्तु (विधवा) हो जाए और उस अभागिनका जीवन बरबाद कर दिया जाए, ऐसी कुरीति वहाँ नही है। ॥२१॥

देशका कोई शत्रु नहीं है। दूसरोंके देशपर कोई कुदृष्टि नही है। गरम बातोंका गरम जवाब दिया जाएगा और दुष्ट आए तो उन्हें भगा दिया जाएगा। ॥२२॥

———

११. पुत्ताण्डु वाष्त्तुगळ

पुगुन्ददु नमदु वाष्विल
पुदियदोर आण्डिन्नाळे ।
पूशनै पुरिन्दु पोट्रि
ईशनै वणंगि निर्पोम ।।
उगुन्दिडुम तीमै यावुम
ओषिन्दिडुम तुन्बमेल्लाम ।
उयर्न्दिडुम निलैमै कीर्ति
ओंगिडुम कारियत्तिल ।।
मिगुन्दिडुम इन्बम नेञ्जिल
मिदंदिडुम अन्बुम पण्बुम ।
मेविडुम दरुमम दानम
मेविय शुट्रम शूषा ।।
मगिष्न्दिडुम उळ्ळत्तोडु
मनैयरम शिरक्क नींगळ ।
मंगळम पेरुगि वाषा
मनमारा वाष्त्तुगिन्रेन ।।१।।

सत्तियमुम शान्तमुमे तुणैगळाग ।
चन्मार्ग वषि नडक्कुम कोळगै तन्द ।।
उत्तमनाम गाँदियरै उळ्ळ त्तेण्णि ।
उलगाळुम परम्पोरुळै वणंगिनिन्रु ।।
चित्तिरैयाम पुत्ताण्डु तिरुनाळ काणुम ।
शीर मिगुन्द तमिष् तायिन पुगषैपाडि ।।
मेत्त नलम पेरुगि उंगळ कुटुम्ब वाष्कै ।
मेन्मेलुम शिरप्पडैय वाष्त्तुगिन्रेन ।।२।।

———

११. नूतन वर्षकी बधाइयाँ

आजके दिन हमारे जीवनमें एक नए वर्षने प्रवेश किया है। इस अवसरपर हम ईश्वरकी पूजा और प्रशंसा कर उसको सिर नवावें। बुराइयाँ हट जाएँगी, संकट टल जाएँगे, स्थिति उन्नत होगी, कीर्ति फैलेगी, कार्यमें अभिरुचि बढ़ेगी, मनमें प्रेम और संस्कृतिके भाव भरेंगे। दान और धर्मकी वृद्धि होगी। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि प्रिय बन्धु-जनोंके साथ रहते हुए गृहस्थ धर्मका पालन कर आप मंगलमय जीवन बिताएँ। ॥१॥

सत्य और शान्तिका सहारा लेकर सन्मार्गमें प्रवृत्त होनेका मार्ग बताने वाले उत्तम-मनुष्य गान्धीका मनमें स्मरण करके और सर्व लोकका पालन करने वाले परमात्माको सिर नवाकर आज 'चित्तिरै' (चैत्र) मासके नववर्षके शुभ दिनपर उत्तम संस्कार वाली तमिल-माताकी कीर्ति गान करता हुआ मैं आशीर्वाद देता हूँ कि सब तरहका श्रेय पाकर आपका कौटुम्बिक जीवन समृद्धि पाए। ॥२॥

१२. अवळ्

मान एना अवळै चोन्नाल
        मरुळुदल अवळु क्किल्लै ।
मीन विषि उडैयाळेन्नाल
        मीनिल्ले करुमै इल्लै ।।
तेन मोषिक्कुवमै शोन्नाल
        तेविट्टुदल तेनुक्कुण्डु ।
कून पिरै नेट्रि एन्नाल
        कुरै मुगम इरुण्डुप्पोगुम ।।१।।

मयिलेनुम शायलेन्नाल
        तोगै पेण्मयिलुक्किल्लै ।
कुयिलेनुम कुरलाळ एन्नाल
        एषिशै कुयिलुक्किल्लै ।।
वेयिलोळिमेनि येन्नाल
        वेयिलिले वेप्पमुण्डु ।
अयिलेनुम पार्वै एन्नाल
        अषिवित्ति आक्क मिल्लै ।।२।।

१२. वह (स्त्री)

[यह अंश कविकी 'वह' और 'वह' नामक रचनासे उद्धृत है। तमिल भाषामें 'वह' शब्दके तीन रूप है, एक पुरुष सूचक, दूसरा स्त्री सूचक और तीसरा जीव-जन्तु या निर्जीव वस्तु सूचक। केवल मनुष्य जातिके स्त्री-पुरुष सूचक शब्द अलग-अलग है। जीव-जन्तुओंको सूचित करनेवाला शब्द स्त्री और पुरुष जाति दोनोंके लिए प्रयुक्त होता है।]

यदि उसे हिरन* कहा जाय तो उसमें (भय भीत होकर) चौंक उठनेकी आदत नही है। मीन सी आँखों वाली कहा जाए तो मछलीमें कालिमा नहीं है। यदि मधु भाषिणी कहा जाए तो मधुमें तृप्ति पैदा करनेका गुण है। यदि वक्रचन्द्र-तुल्य माथा माना जाए तो शेष मुख प्रकाश विहीन मानना पड़ेगा। ॥१॥

यदि मयूर सी शोभा वाली कहा जाए तो मोरनीके पुच्छ नहीं होता। यदि कोकिल वचनी कहा जाए तो कोयलमें सप्त-स्वर (उच्चारण) की क्षमता नहीं है। धूप सी स्वर्णिम कान्तिवाली कहा जाए तो धूपमें ताप है। तीरसा कटाक्ष माना जाए तो उसमें केवल नाश है, सृष्टि नहीं है। ॥२॥

---

* तमिलमें स्त्रियोंको 'हिरन' या मोर माननेकी प्रथा प्रचलित है।

चन्दिरवदनम एन्राल
चन्दिरन मरुनाळ तेयवान।
अन्दरपेण पोल एन्राल
अवळै नाम पार्तदिल्लै ।।
शेन्दिरु मगळ पोल एन्राल
तिरुविनै कण्डार यारे।
सुन्दर वडिवेन्रालुम
शोल्लिले वलिमै इल्लै ।।३।।

कून्दलै मेगम एन्राल
मेगत्तिल करुमै कोञ्चम।
कान्दळै कैपोलेन्राल
केट्टदे कण्डदिल्लै ।।
मोन्ददुम वाडिप्पोगुम
मुल्लैदान पल्लुक्कोडो ?
एन्दिषै एन्रिट्टालुम
इयर्कैयिन एषिलैपोक्कुम ।।४।।

विरलगळै पवळम एन्राल
वीणैयै मीट्ट लामो
कुरवळै शंकमेन्राल
शंगोलि कुमुरिक्कुवुम ।।
करमदै कमलम एन्राल
मालैयिल कमलम कूम्बुम।
ओरु मरम मूंगलि तोळुक्
कुवमै येन्रुरैक्कलामा ।।५।।

यदि चन्द्र-मुखी कहा जाए तो चन्द्र दूसरे ही दिन घटने लगता है। यदि देवकन्या कहा जाए तो उसको हमने कभी देखा नहीं है। यदि लक्ष्मी-सी कहा जाए तो उसको भी किसने देखा है? यदि सुन्दर आकार वाली कहा जाए तो उन शब्दोंमें पर्याप्त बल नहीं है। ।।३।।

यदि केशोंको मेघ कहा जाय तो मेघकी कालिमा कम है। 'कान्दळै' (नामक) पुष्प तुल्य यदि हाथको कहा जाए तो उस पुष्प का केवल नाम सुना है उसको देखा किसीने नहीं। सूँघते ही मुरझाने वाला कुन्द भला दाँतोंके समान हो सकता है? यदि अलंकृत कहा जाए तो प्राकृतिक शोभाकी हानि होगी। ।।४।।

यदि उँगलियोंको प्रवाल कहा जाए तो उससे भला वीणा बजाई जा सकती है? यदि कण्ठको शंख तुल्य बताया जाए तो शंखकी ध्वनि रुक-रुककर निकलती है। यदि हाथको कमल माना जाए तो संध्याको कमल संकुचित हो जाता है। निरा वृक्ष जो बाँस है उसको कन्धेकी समता देना क्या उचित होगा? ।।५।।

कुमिष् एन मूवकै शोन्नाल
कूमैयुम नेमै यिल्लै।
अमिषदवळ पाडल एन्राल
देवरे अमुदमुण्डार॥
तमिष् एनुम इनिमै एन्राल
तनित्तमिष इप्पोदिल्लै।
कमष् मणम देहम एन्राल
कन्नियिन ताये काण्बाळ॥६॥

पर्पल उवमै शोल्लि
पण्डितर्गळुक्कुक्कूड़।
कर्पनै पुरिन्दिडादा
कट्टुरै पिन्निक्काट्टुम॥
शोर्पला अडुक्क वेण्डाम
शुरुक्कमाय शोल्लप्पोनाल।
अर्पुद अषगु मुट्रुम
इयर्कैयिल अमैन्द नंगै॥७॥

कण्डवर मरक्क माट्टार
केट्टवर काणप्पोवार।
अण्डैयिल पषगिनोर्गळ
अवळै विट्टगला माट्टार॥
पेण्डु गळ वन्दु वन्दु
पेशुदर्काशै कोळवार।
शण्डैयुम शळिप्पुमेल्लाम
शान्तमाम अवळै शार्न्दाल॥८॥

'बुदबुदा' यदि नाकको माना जाए तो उसमें न नुकीलापन है न सीधापन। उसके गीतोंको यदि अमृत-मय कहा जाए तो केवल देवता अमृतके स्वादसे परिचित हैं। यदि तमिष् का माधुर्य माना जाए तो आजकल ठेठ तमिल प्रचलित नहीं है। यदि सुगन्धित शरीर कहा जाए तो केवल उस कन्याकी माँ उस सुगन्धका अनुभव कर सकती है। ॥६॥

अनेक शब्दोंके ढेर लगानेकी कोई आवश्यकता नही जिनसे अनेक उपमाओंसे पूर्ण 'प्रबन्ध' (काव्य) तो तैयार हो जाएँ, पर पण्डितों का भी अनुमान ठीक न बैठे। संक्षेपमें इतना ही कहा जा सकता है कि वह ऐसी नारी थी जिसमें समस्त अद्भुत सौन्दर्य स्वाभाविक रीतिसे समा गया था। ॥७॥

(एक बार भी) देखने वाले भूल नहीं सकते; (उसके बारेमे) सुननेवाले उसको देखने चलते। पास जो रह सके है वे उससे अलग होना नही चाहते। स्त्रियाँ आ-आकर उससे बातें करनेको अतुर होती हैं। झगड़ा-फिसाद भी उसके पास आकर शान्त हो जाता है। ॥८॥

तन्निलुम अरिन्दार मुन्ने
　　तान तनि मडमै ताँगुम ।
नन्नयम इल्ला चोल्लै
　　केट्कवुम नाणम कोळवाळ ।
अन्नियर्कनुम तीमै
　　आट्रिड अच्चम कोळवाळ ।
मन्नवर तवरि नालुम
　　मदित्तिडा पयिर्पु मण्डुम ॥९॥

तनक्कुरुम तन्दै तायर
　　तरुक्किडुम कुषन्दै याग ।
मनक्कुरै ओन्रुमिन्रि
　　मरुट्टुवार एवरु मिन्रि ॥
इनक्कुलै इल्लार तम्मो-
　　डिच्चै पोल ओडि याडि ।
वनक्किळि पोलक्कोञ्जि
　　वळर्न्दवळ वरुमैयिन्रि ॥१०॥

इयर्कैयिन नलमुम नल्लोर
　　इणैप्पिनाल नेर्न्द पण्बुम ।
शेयर्कैयाम पगुप्पु मिवक
　　शैम्मैयाय शेर्न्ददाले ।
मयक्किला अरिवुम नल्लोर
　　मदित्तिडुम पोरुप्पुम वाय्न्दु ।
वियप्पोडुम एवरुम कण्डु
　　विरुप्पुर विळंगि निन्रालळ ॥११॥

अपनेसे बड़ोंके सामने अपनी मूर्खताको प्रकट करनेवाले विनय-हीन वचनोंको वह सुनती हुई भी सहम जाती। परायोंकी भी बुराई करती हुई डरती थी। राजा भी यदि भूल करता तो अपार अतृप्ति जागृत होती। ॥९॥

उसके माँ-बाप उसपर अभिमान करते थे; उसे किसी प्रकारकी मानसिक चिन्ता नही थीं; उसे डराने वाला कोई नहीं था; उच्च वर्गके लोगोंके साथ रह कर वह बिना किसी कष्टका अनुभव किये, वनैले शुकके समान चहकती हुई बढ़ी। ॥१०॥

प्रकृतिका हित और सज्जनोंका सत्संग पाकर वह सुसंस्कृत हुई। आर्जित विद्या आदि भ्रम-विहीन ज्ञान-युक्त और प्रशंसनीय गम्भीरता-युक्त बनी। वह इस प्रकार बढ़ी कि उसको देखने वाले चकित हो जाते थे और उसको चाहने भी लगते थे। ॥११॥

मिदन्दिडुम शेल्वम मिक्क
मेट्टिमै शिरिदुम इल्लै।
अदिन्दोरु वार्तै पेशुम
अहन्दैयुम अरिय माट्टाळ ।।
सुदन्दर इयल्बि नोडु
सुदन्दर पषक्कम शेन्दुम।
इदन्दर कुलविप्पेशि
एवरैयुम सममाय एण्णुम ।।१२।।

पळ्ळियिल पेण्गट् काना
पलगलै कषगन्दन्निल।
ओळ्ळिय मुरैयिर कट्रे
उयर्दर पट्टम पेट्राळ ।।
वेळ्ळैयर नागरीक
विदंगळुम विरुम्बिकट्रु।
कळ्ळमुम कपट मिन्रि
कळैयिला पयिर्पोल मिन्राळ ।।१३।।

उडैगळिल शुद्दम पार्पाळ
उणविले शुद्दम पार्पाळ।
कडै गळिल वाँगुम पण्डम
कायकरि शुद्दम पार्पाळ ।।
नडैमुरै ओषुक्कम काप्पाळ
नावुरै नलत्तै काप्पाळ।
तडैयुर नोन्द पेरै
तायेन ताँगुम तक्काळ ।।१४।।

अपार ऐश्वर्य-युक्त होकर भी अहंभाव विहीन थी। कड़ाईका एक शब्द भी तथा घमण्ड तो वह जानती ही नहीं थी। स्वतन्त्र स्वभावकी और स्वतन्त्र आचार-विचारकी होकर भी सभीको समान मानकर सभीसे हितकर बातें करती थी। ।।१२।।

स्त्रियोंके उच्च महाविद्यालयोंमें उत्तम रीतिकी शिक्षा पाकर उसने उत्तम उपाधि पाई थी। लोगोंकी रीति-रिवाजोंका प्रेमके साथ परिचय पाकर वह निष्कपट स्वभावकी होकर शाखा विहीन सम्यके समान बढ़ने लगी। ।।१३।।

पहनावेमें सफाईका ध्यान रखती थी। खाने-पीनेमें सफाईका ध्यान रखती थी। बाजारोंमें शाक-सब्जी लेती तो उनकी सफाईका ध्यान रखती थी। चाल चलन और बर्तावपर ध्यान रखती थी; मुँहसे निकलनेवाले शब्दोंके हितकर होनेका ध्यान रखती थी। संकट ग्रस्तोंको माताके समान संभालती थी।।१४।।

कुषलोडु वीणै नादम
कुरलोडुम इशैयक्कूट्टि ।
पषुदरप्पाडि केट्पोर
परवशम अडैयच्चेय्वाळ ।।
विषलुर पोषुदु पोक्कुम
वीण सुगम विरुम्ब माट्टाळ ।
एषिलुडै पेण्मैक्कुट्
इरुप्पिडमावाळ एन्बोम ।।१५।।

मादर्गळ संगम कूट्टि
मगळिरदम उरिमै काक्क ।
आदरम तेडुम पेच्चे
अडिक्कडि नडक्कच्चेय्वाळ ।।
तीदुरुम वषक्क मेल्लाम
तीर्न्दिड वेण्डुमेन्रे ।
ओदरुम ऊक्कत्तोडुम
उषैत्तिडुम ओन्रे आशै ।।१६।।

पेण्गळै इगषन्दु मुट्रुम
पेदैगळ एन्रु पेशि ।
पुणकोळ एषुदि वैत्तु
पुरै कोळ शेय्दु वाष्विन ।।
कणगळिल ओन्वै कुत्ति
करित्तिड शेय्दार एन्न
एण कोळ एण्णि एण्णि
एंगुवाळ अदुवे एक्कम ।।१७।।

बाँसुरी और वीणाके नादके साथ अपनी कण्ठ ध्वनि मिलाकर विशुद्ध गीत गाकर सुनने वालोंको वह मुग्ध कर देती थी। व्यर्थकी बातोंमें समय नष्ट करनेवाले अल्प सुखोंकी उसे कभी रुचि नहीं थी। उत्तम स्त्रीत्वका आगार थी वह ।।१५।।

महिलाओंका संघ स्थापित कर महिलाओंके अधिकारकी चर्चा करती थी और उसके अनुकूल आचरण करती थी। उसकी एक मात्र इच्छा यह थी कि सभी बुरी प्रथाओंको दूर करनेके लिए अवर्णनीय उत्साहके साथ परिश्रम किया जाए ।।१६।।

"महिलाओंको तुच्छ बताकर उन्हे निरी निन्दनीय बताने वालोंने ऐसी चोट पहुँचाई जो स्वस्थ न होकर फैलती जाती है ; जीवनके दो नेत्रोंमें से एक को फोड़ डाला।" यों बार बार विचार करती हुई इसी विचारमें मग्न रहा करती थी ।।१७।।

मरुमणम मार्दकिल्लै
मदलैयै विदवैयाक्कि ।
नरुमणप्पूवु मिन्रि
नल्लदोर तुणियुमिन्रि ।।
उरु मणल तेरैप्पोल
ओळित्तिरुन्दोडुंग चेय्युम ।
शिरु मनप्पान्मैये नम
देशत्तिन नाशम एन्बाळ ।।१८।।

कर्पेन पेशुवार्गळ
कर्पिनै पेण्णे काक्क
पर्पल पेण्णै नाडि
पशप्पलाम आणगळ मट्टुम ।।
अर्पुदम आनदागुम
अनियायम इन्द नाट्टिन ।
नर्पदम केडुत्त देन्रु
नाळेलाम नैवाळ नंगै ।।१९।।

नाट्टियम आडच्चेय्दुम
नाडगम नडिक्क चेय्दुम ।
पाट्टियुम पाडचेय्दुम
परत्तैयर कुलमुम पण्णि ।
आट्टिय कदैगळेल्लाम
आडवक्कीन इन्ब ।
वैट्टिये पेण्गळ एन्रु
विरुप्पैये विळक्कुम एन्बाळ ।। २०।।

वह कहा करती थी ; यह संकुचित भाव ही हमारे देशके पतनका मूल कारण है जो विधान करता है कि महिलाओंका पुर्नविवाह नहीं हो सकता; छोटी छोटी लड़कीको भी विधवा होनेपर सुगन्धित फूलसे वञ्चित कर, अच्छे कपड़ोंसे वञ्चित कर रेतमें फँसे रथके समान प्रकाशमय होनेपर भी संकुचित कर दिया जाए ।।१८।।

वह देवी दिनभर यह सोच-सोचकर दुखी होती थी कि सतीत्वका गुण गाते है, पर स्त्रियाँ तो उसकी रक्षा करती रहें और पुरुष अनेक युवतियोंसे मेल बढ़ाकर मनमाना करता रहे—इस देशका यह कैसा अजब का न्याय है ? इसीने देशका नाश कर दिया है ।।१९।।

वह कहा करती थी कि नाच नचाकर, नाटक खेलने देकर, गीत गवाकर, वेश्या बनाकर पुरुषोंने जो कुछ कर दिखाया उससे उनका यही मनोभाव प्रकट होता है कि स्त्री केवल सुख पहुँचाने वाला शिकार (साधन) मात्र है ।।२०।।

अवळ पेयर कमलम एल्लाच्
चेल्वमुम अमैन्दवीट्टिल ।
तवमेन पेट्रोरुक्कुत्
तनि योरु कुषन्दै यावाळ ।।
नव नव नागरीक
नडै युडै इरुबदाण्डु ।
युवतियाय उलगिल नल्ल
कवितै पोल उयर्न्दु निन्नाळ ।।२१।।

उसका नाम कमल था। वह सम्पन्न परिवारमें माँ-बापकी इकलौती पुत्री होकर पैदा हुई मानो उनके तपकी फलीभूत मूर्ति हो। नई सभ्यताके अनुकूल आचरण और अलंकारोंसे युक्त वह बीस सालकी युवती उत्तम कविता-सी बढ़ती गई ॥२१॥

———————

१३. अवन

नीण्डन कैगळ ; आष्न्दु
निमिर्न्ददु अगन्र मार्बु ।
तीण्डिड कल्लैप्पोलत्
तिरण्डन इरण्डु तोळुम ।।
तूण् एनत्तोन्रुम काल्गळ
तुणैतर नडक्कुम पादम ।
आण तगै मुट्रुम तक्क
अळवोडुम अमैयपेट्रान ।।१।।

अरिवोळि वीशुम कणगळ
अरवुरै पेशुम नाक्कु ।
शेरि दरुम शिकैयै वेट्टित्
तिगषतर शीवि विट्टु ।।
चिरिदला पेरिदुम अल्ल
शीरेनुम मूक्किनोडुम ।
कुरिगळुम नेरिगळ यावुम
गुणमुळान एन्रे कूरुम ।।२।।

कण्डवर कळिक्कुम तोट्रम
केट्टवर मदिक्कुम आट्रल ।
अण्डैयिल पषक्क मिल्लार
अडक्कमाय अणुगुवार्गळ ।।
शण्डैगळ अडंगुम कण्डाल
शलिप्पुगळ शळैप्पुकोळ्ळुम ।
तोण्डु शेय एवलाळर
तुणुक्कोडु वणक्कम शेय्वार ।।३।।

१३. वह (पुरुष)

लम्बे हाथ; सुडौल उन्नत विशाल वक्षस्थल, छूनेपर पत्थरसे प्रतीत होनेवाले कन्धे, स्तम्भसे प्रतीत होनेवाले दो पैर, उनका साथ देनेवाले चरण, सब तरहसे पुरुष श्रेष्ठके योग्य सारे अंग उचित प्रमाणके थे। ॥१॥

आँखोंसे बुद्धिमत्ता प्रकट होती थी; जीह्वा धर्मकी चर्चा करती थी; सिरके केश कटे हुए और सुन्दर सँवारे हुए थे, नाक न छोटी थी न बड़ी, सुन्दर थी; उसके सभी रंग और रूप घोषित करते थे कि वह गुणवान था। ॥२॥

देखनेवालोंको सुख प्रदान करनेवाला रूप था। गुण ऐसे थे कि उसका परिचय पानेवाले प्रभावित होकर उसका आदर करते थे; निकट रहनेका जिन्हें अवसर मिला नहीं था वे नम्रताके साथ उसके पास जाते थे। उसके सामने झगड़े फसाद मिट जाते थे। उसके सेवक अभिमानके साथ उसके सामने सिर नवाते थे। ॥३॥

पडिप्पिनिल पट्टम पेट्रान
पन्दुगळ कैयार कालाल।
अडिप्पदिल पदक्कम पेट्रान
अरंगिनिल वेषम पूण्डु।।
नडिप्पदिल परिशु पेट्रान
नाडिय एदैयुम नन्राय।
मुडिप्पदिल मुर्याच मिक्कान
मुट्रिलुम विरुम्ब तक्कान।।४।।

शेल्वरिर शेल्वनेन्र
शिरप्पुळ पिरप्पु वाय्न्दान।
कल्वियिल आशै मिक्कोन
कवितैयिल नेशम मिक्कोन।।
पल्विद कलैगळ वेण्डि
पर्यिचियुम मुर्याच शेय्वान।
नल वषि एन्रत्तक्क
नडै नोडि युडैय नणबन।।५।।

अषगुळ एदैयुम कण्डे
अळविला आशै कोळवान।
पषगिडुम एदिलुम उळ्ळ
अषगैये कण्डु पेशुम।।
एषुदिडुम एषुत्तिलेल्लाम
अषगैये एट्रि पोट्रि।
तोषुदिडुम देय्व मागा
अषगैये तूक्कि वैप्पान।।६।।

पढ़ाईमें उसने उपाधि प्राप्त की; कन्दुक-क्रीड़ामें (हाथसे खेलने और पैरसे खेलनेमें) पुरस्कार पाए; रंगमंचपर नाटक खेलनेमें पुरस्कार पाए। जिसमें ही हाथ लगाता उसीमें मन लगाकर उसे सम्पन्न करता; वह हर तरहसे अनुकरणीय था। ।।४।।

धनिकोंमें धनी माना जाए——ऐसा जन्म उसने पाया। विद्याके प्रति उसका बड़ा प्रेम था। कविताके प्रति बड़ी अभिरुचि थी; अनेक प्रकारकी कलाओंका प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करता था। वह सदाचारी एवं सन्मित्र था। ।।५।।

किसी भी सुन्दर वस्तुपर उसका मन मुग्ध हो जाता था। जिसके भी सम्पर्कमें आता उसके सौन्दर्यपर ही उसका ध्यान जाता। लिखनेमें अक्षरोंकी सुन्दरताको महत्व देता। सौन्दर्यको वह उपास्य देव ही मानता था। ।।६।।

उडैगळिल अषगु पार्पान
　　उण्कलम अषगु पार्पान ।
कुडै तडि पडुक्कै मेजै
　　कुरिच्चियिल अषगु पार्पान ।।
कडैगळिल अषगाय तोन्र
　　कण्डदै येल्लाम वाँगि ।
अडैवुर वीट्टिल एंगुम
　　अलंकरित्तषगु पार्पान ।।७।।

कालैयिल अषगिल पूत्तु
　　काय कनि निरैन्दु काट्टुम ।
शोलैयिन अषगै शोलवान
　　सूरियन शिवन्दु तोन्रुम ।।
मालैयिन अषगै पोट्रि
　　मलैगळिल पडिन्द मेग
चिलैयिन अषगै पोट्रि
　　चित्तिरक्कोलै तोट्टुम ।।८।।

कैच्चिरु 'कामिरा' विल
　　कण्डदैयेल्लाम 'पोटो" ।
इच्चै पोल एडुत्तु वन्दे
　　इरुट्टरै कषुवि पार्पान ।।
अच्चिरु पडत्तिलेल्लाम
　　अषगैये पोरुळाय पेशि ।
मेच्चिडुम नण्बरोडु
　　मिग मिग पोषुदु पोक्कुम ।।९।।

पहनावेमें सुन्दरताका ध्यान रखता था। भोजन-पात्रमें वह सुन्दरताका ध्यान रखता था। छाता, छड़ी, बिस्तर, मेज कुर्सीमें सुन्दरता का ध्यान रखता था। बाजारमें कोई सुन्दर वस्तु देखता तो उसको खरीदता था और उसे घरपर सजाकर रखता और शोभाका आनन्द पाता था। ॥७॥

सवेरे-सवेरे सुन्दर फूल-फलोंसे युक्त होकर शोभा पानेवाले पौधोंका वह गुण गान करता। प्रकृतिकी तूलिकाकी बनी संध्या कालीन लाल-सूर्यकी और पर्वतोंपर जमे बादलके टुकड़ोंकी शोभाका गुण-गान करता था। ॥८॥

हाथमें लिए छोटे "कैमरा" के चित्र (फोटो) खूब निकालकर अन्धेरे कमरेमें उन्हें धोता। उन सभी चित्रोंमें सौन्दर्यको ही महत्व देनेवाले मित्रोंसे वार्तालाप करता हुआ समय बिताता था। ॥९॥

नाटक प्प्पिरियन; नल्ल
नाट्टियक्कलैयिल आशै ।
केडयम कत्तियोडु
केरडिगळ पषग आशै ।
नीडिय नेरम नीरिल
नींदिड निरैय आशै ।
ओडमुम ताने ओट्टि
उलविड उलप्पान उळ्ळम ।।१०।।

वीररगळ कदैयै पोट्रुम
वेट्टियै वियन्दु वाषत्तुम ।
दीरर्गळ मुन्ने वाष्न्दोर
तिरमैयिन शिरप्पै पेशि ।।
शूरर्गळ पला पेर शोन्न
सुदन्दर उरैगळ शोल्लि ।
आरोरु मनिदर्कॅनुम
आण्मैये अषगाम एन्बान ।।११।।

कादले देय्वम एन्बान
कडवुळे कादल एन्बान ।
बूदला वाष्वु मुट्रुम
कादलिर पोरुन्दुम एन्बान ।।
आदलाल कादलेन्नुम
अप्पोरुळ् अडैन्दि लादार ।
शादले मेलाम एन्रु
शाट्रुवान शलिप्पिल्लामल ।।१२।।

नाटकका प्रेमी था। नृत्यमें उसकी अभिरुचि थी। ढाल-तलवार लेकर उनका अभ्यास करता। पानीमें देर तक तैरते रहनेका शौक उसे था। आप ही नाव चलाकर मन बहलाया करता था। ॥१०॥

वीरोंकी कथाकी प्रशंसा करता और उनकी विजयका वर्णन करता। पूर्वकालके वीरोंकी वीरताका गुण-गान करता। कई वीरोंके वचनोंको दुहराता हुआ कहा करता था कि हर मनुष्यमें पौरुष ही प्रधान गुण है। ॥११॥

वह कहा करता था कि प्रेम ही भगवान है और भगवान ही प्रेम है। इस संसारका सारा जीवन प्रेममें समाया हुआ है। इसलिए जिसमें वह महान् प्रेम नहीं है उसका मर जाना ही अच्छा है। ॥१२॥

पेणगळै अषगु देय्व
    पिरिदोरु पिरदि एन्बान ।
पणकोळ पाडि आडि
    पल कलै पयिंचि योडुम ।।
कण गोळुम उडैगळ पूण्डु
    कळि तरुम काट्चि यागा ।
एण्कोळुम इनिमैक्केल्लाम
    इरुप्पिड माग एण्णुम ।।१३।।

पर्पल वषियिल नाट्टिन
    पोदुनलम परिन्दु पेशि ।
शोर्पोषिवाट्रलुळ्ळान
    सुदन्दर आशै यूट्टुम ।।
अर्पुद तिरमैयोडुम
    अरिवुडन अमैवदान
कर्पनै मिगुन्द नल्ल
    कदैगळुम काट्टि चोल्वान ।।१४।।

ऊरेलाम शेषिक्क वेण्डुम
    उयिरेलाम कळिक्क वेण्डुम ।
नेरिला पुदुमै मिक्क
    समुदायम निरुव वेण्डुम ।।
पारेलाम नमदु नाट्टिन
    पेरुम्पुगष परप्पि, मक्कळ ।
पोरेलाम ओडुंग वेण्डुम
    एन्बदे पोषुदुम पेच्चाम ।।१५।।

वह कहा करता था कि स्त्री मात्र सौन्दर्य देवीकी प्रतिमूर्ति है। वह मानता था कि गाने और नाचनेवाली, अनेक कलाओंका अभ्यास करनेवाली, सुन्दर पहनावे पहनकर लोगोंको प्रसन्न करनेवाली युवती हर तरहके माधुर्यका आकर है। ॥१३॥

अनेक प्रकारसे देशके हितकी बातें करनेकी वाक्पटुता उसमें थी; वह ऐसी अजबकी कहानियाँ सुनानेमें समर्थ था जिनसे देश-प्रेमका भाव पैदा होता था और जो कल्पना-पूर्ण और ज्ञान वर्धक थीं। ॥१४॥

उसका एक मात्र कथन यह था कि सारा देश हरा-भरा हो। जीव मात्र सुखी हों। सारे संसारमें हमारे देशकी कीर्ति फैले और आपसकी लड़ाई बन्द हो जाए। ॥१५॥

अडिमैगळ इल्ला नाडुम
      अन्बरम अरशु शेय्य ।
कडिदरुम जाति बेद
      कट्चिगळ इल्ला नाडुम ।।
कुडि कोलै कळविन अच्चम
      कोञ्चमुम इल्ला नाडुम ।
विडिवदुम एप्पो देन्र
      पेच्चैये विरुम्बि पेशुम ।।१६।।

वाय्मैयुम करुणै शेन्र्द
      वाष्क्कैये वगुत्तुक्कूरी ।
तूय्मैये पुगट्रल ओन्रे
      इलक्किय तुरैयाय कोण्डा ।।
तायमोषि तमिषै पोट्रल
      तनियरम एन्रे नल्ल
आय् वुडै अरिञ्जरदम्मै
      अडिक्कडि कूट्रिप्पेशुम ।।१७।।

पुदिय नल एण्णम वेण्डुम;
      वाष्क्कैयिर् पुदुमै वेण्डुम ।
मदिप्पुडन नम्मै कण्डु
      मट्र नाट्टवरगळेल्लाम ।।
तुडिप्पुडन तोडरा एल्ला
      तुरैयिलुम पुदुमै तोन्र ।
विदिप्पयन एन्र पेच्चै
      विट्टिड वेण्डुम एन्बान ।।१८।।

उसके भाषणोंमें उसकी यही इच्छा प्रकट होती कि देशका वह शुभोदय कब होगा कि जब राष्ट्र दासता-मुक्त हो; शासक प्रेम और धर्म युक्त हों, फूट डालनेवाला जाति भेद मिट जाए और मद्यपान, हत्या और चोरीका नामोनिशान भी न रहे। ।।१६।।

समर्थ विद्वानोंका बार बार समावेश कराकर वह कहा करता था कि साहित्यका एक मात्र उद्देश्य यह हो कि वह समर्थता और करुणाका महत्व प्रकट कर पवित्रताका बोध करावे। इस प्रकारके साहित्यसे माता तमिल भाषा की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। ।।१७।।

वह कहा करता था कि आवश्यकता नई विचार-धाराकी है। जीवनमें एक नवीनता आवश्यक है। हमें भाग्यकी बातें करना छोड़कर ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सभी क्षेत्रोंमें नवीनता आ जाए और संसारके सभी देश आतुरता और आदरके साथ हमारा अनुकरण करनेको तैयार हो जायें। ।।१८।।

पिरन्दवर शावदुम्मै
पेट्रपोन्नट्रिर्कागा ।
अरन्दरुम शिन्दै योडे
अन्बुशेर पणिगळ आट्रि ।।
इरन्दवरन्त्रो एन्रुम
इरुप्पवर आवार एन्रु ।
शिरन्दिडुम देश बवित
मुरैगळे शिन्दै शेय्वान ।।१९।।

मादवन अवन पेरागुम
मा पेरुम शेल्वर मैन्दन ।
ओदरुम कल्वि कट्रे
उयर्दरप्पट्रुम पेट्रान ।।
तीदरुम अरिविर्कागा
देश यात्तिरैयुम शेय्दोन ।
एदोरु कुरैयुम इन्त्रि
इरुबत्तु एषाण्डुळ्ळान ।।२०।।

पणत्तिनमेल आशै वैत्तु
पडिप्पैयुम एण्णपार्त्तु ।
गुणत्तैयुम कोञ्चम पोट्रि
कुलत्तैये करुदिडामल ।।
मणत्तिनाल अवनै तंगळ
मरुमगन आक्किक्कोळ्ळ ।
कणक्किला तन्दै तायर
कात्तिरुन्दार्गळ कण्डोर ।।२१।।

वह सदा देश सेवाकी बातोंपर विचार करता हुआ यह मानता था कि हम सभीका मरना तो निश्चित ही है; जो लोग अपनी उत्तम जन्म भूमिकी चिन्ता करते हुअे उसकी सेवा करते मरेंगे वे ही अमर बनेंगे। ॥१९॥

उसका नाम था माधव। बड़े धनी परिवारमें पैदा हुआ था। उत्तम विद्या प्राप्त करके अच्छी उपाधि प्राप्त की। निर्मल ज्ञान प्राप्त करनेके लिए उसने देशकी यात्रा की थी। उसके जीवनमें किसी बातकी कमी नही थी। वह सत्ताईस वर्षका था। ॥२०॥

उसके ऐश्वर्यके लालचमें पड़कर, उसकी विद्यासे प्रभावित होकर, उसके गुणोंकी भी कुछ प्रशंसा करके उसके कुटुम्बका विशेष ध्यान किए बिना, कितने ही माँ-बाप उसको अपना दामाद बनानेको आतुर थे। ॥२१॥

---

१४. ओरु नाळैक्कु ओरुदरम

पल्लवि

ओरु नाळैक्कोरुदरम
    ओरु नोडिप्पोषुदेनुम ।
उन्नैप्पडैत्तवनै
    एण्णिच्चुगित्तदुण्डो मनमे ।। (ओरु)

अनुपल्लवि

तिरु नाळुम तेरुम एन्रु तेडियलैन्दल्ल
शिन्दनै अलैयामल दियानत्तिल निरुत्तिये (ओरु)

चरणङ्गळ

विडियुमुन विषित्तनै
    वेळुक्कुमुन वीट्टै विट्टाय ।
वेव्वेराम इडत्तुक्कु
    वौवालपोल ओट्ट मिट्टाय ।
उडलुम मनमुम शोर्न्दु
    ओय्न्दिडा वीडु वन्दुम ।
उण्णुमपोषुदुम कूडा ।
    एण्णम निलैप्पदिल्लै ।। (ओरु) (१)

१४. एक दिन एक बार

[यह कविका गीत है। तमिलके गीतोंमें पहले 'पल्लवि' नामके चरण होते है। यह 'पल्लवि' हिन्दीकी 'टेक' के समान है।

'पल्लवि' के बाद 'अनुपल्लवि' नामके चरण रहते है। गीतका जो राग होता है उसका एक भाव 'पल्लवि' के गानेमें आता है और दूसरा भाव 'अनुपल्लवि' के गानेमें आता है। 'अनुपल्लवि' के बाद "चरण" नामक पूरे गीत आते है। हर गीतमे रागके दोनों भाव रहते है।]

पल्लवि

हे मन ! जिसने तुम्हें पैदा किया उसका क्या तुमने एक दिन भी, एक क्षण भरके लिए भी स्मरण करके सुख पाया ?

अनुपल्लवि

मेले या पर्वके अवसरपर नहीं, मनको भटकने न दे कर, ध्यान लगाकर (क्या तुमने)..... ।।टेक।।

चरण

(तुम) सूर्योदयके पूर्व जागे, पौ फटनेके पहले घरसे बाहर गए; विभिन्न जगहोंको चमगादड़की तरह उड़ते गए; शरीर और मनसे थककर आराम के लिए घर आए; वहाँ खाते हुए भी तुम्हारा मन स्थिर नहीं हुआ ।।१।। टेक

अरैक्काशुक्कानालुम
      ओरु नाळ मुषुदुम काप्पाय।
आयिरम पेरैयेनुम
      अलुप्पिन्निप्पोय पार्पाय।
उरैप्पार उरैगट् केल्लाम
      उर्यन्दिडुम शोल्वनै।
      उन्नुळ इरुप्पवनै
      एण्णिडा नेरा मिल्लै।।   (ओरु) (२)

शिला नाळैक्कदिकारम
      शेय्युम ओरुवर्कञ्जि।
शेय्या शोल्वदै एल्लाम
      शेय्वाय नी पल्लै केञ्जि।
पलनाळुम जन्म मेल्लाम
      पालिक्कुम अदिकारी।
परमनै निनैक्कवुम
ओरु कणम उनक्किल्लै।।   (ओरु) (३)

'नाळुम किषमै' एन्रु
      नल्लवर उरैत्तालुम।
नाळैक्कु आगट्टुम
      वेलै अदिकम एन्बाय।
पाषुम पणत्तैत्तेडि
      पडुम पाडु कणक्किल्लै।
बगवानै एण्णा मट्टुम
      अवकाशम उनक्किल्लै।।   (ओरु) (४)

एक अधेलीके लिए दिन भर खड़े रहते हो; हजार लोगोंसे मिलना हो तो भी जा जाकर मिलते हो। पर वाग्गेयकारोंकी वाक्‌से भी परे जो है, तुम्हारे अन्दर जो है उसका स्मरण करनेको समय नहीं है ।।२।। टेक

थोड़े दिनोंके लिए अधिकार चलानेवाले एक व्यक्तिसे डरकर वह जो कुछ करनेको कहता है वह तुम दाँत दिखाते हुए करते हो; पर बहुत दिनों तक—जन्म भर—तुम्हारा पालन करने वाले अधिकारी परमात्माका स्मरण करनेके लिए तुम्हें एक क्षणका भी समय नहीं मिलता ।।३।। टेक

यदि कोई सज्जन कहे कि आज तीज है, त्यौहार है (इसलिए भगवानका स्मरण करो) तो तुम कहते हो "आज काम अधिक है, कल कर लेंगे"। तुच्छ धनके लिए जो परिश्रम करते हो उसकी कोई सीमा नहीं, पर भगवानका स्मरण करनेके लिए तुम्हें समय नहीं है ।।४।। टेक

१५. इन्दियत्ताय तोत्तिरम

पल्लवि

ताये वन्दनम—इन्दियत्
ताये वन्दनम ।

अनुपल्लवि

दारणि तन्निल वेरिलै इणैयेनप्
पूरण वळन्दिगष् पुण्णिय बूमियेम— (तायॆ)

चरणङ्गळ

निल वळम नीर वळम निरैन्द दुन्नाडु
नीण्ड उन परप्पिलुम वेरिलै ईडु ।
विलैयिलुम विळैविलुम मलिन्ददुन देशम
वेण्डिय यावुम उन एल्लैयिल वासम ।। (तायॆ) (१)

मुप्पदुम पत्तुमाम कोडि उन मक्कळ
मूवुलगत्तैयुम आण्डिडत्तक्कार ।
अर्पुद मागिय आट्रलगळ निरैन्दाय
अरियात्तनत्ताल अडिमैयिल इरुन्दोम (तायॆ) (२)

पडैयेडुत्तवरुम पशियेडुत्तवरुम
पर्पल नाट्टार उनैयडुत्तवरै
अडैवुडन अत्तनै पेयरैयुम तांगि
आदरित्ताण्ड उन अरुंगुणम ओंगा (तायॆ) (३)

बाषैगळ पर्पला पडित्तवळ नीये
पडित्तदन पयनपेरुम नडत्तैयुळ्ळाये ।
आशैगळ अगट्रिय अरुंगळिरशिरन्दाय
अन्बिन वषिगळै अनैत्तैयुम अरिन्दाय ।। (तायॆ) (४)

१५. भारतमाताका स्तोत्र

पल्लवि

हे माता वन्दे। हे भारतमाता वन्दे।

अनुपल्लवि

तू सम्पूर्ण सम्पन्नता युक्त ऐसी पुण्य भूमि है जिसकी संसार भरमें कोई सानी नहीं है।

चरण

तेरे प्रदेशमें उर्वर भूमि और जीवन प्रद जल भरपूर है। तेरा विस्तार तो असमान है। मूल्यमें और उत्पादनमें तेरा देश उन्नत है। जो कुछ भी आवश्यक हैं उन सब का तेरे अन्दर वास है ।।१।। टेक

तीस और दस करोड़ तेरी सन्तान है जो तीनों लोकोंका शासन करने योग्य हैं। आश्चर्य जनक समर्थतासे तू युक्त है । हम अपनी मूर्खताके कारण दासतामें रहे ।।२।। टेक

तेरे पास आने वाले विभिन्न देशके लोग चाहे चढ़ाई कर आए हों, चाहें भूखके मारे आए हों, उन सबको अपनाकर सबका पालन करनेका तेरा जो गुण है वह बढ़े ।।३।। टेक

तूने कई भाषाएँ सीखीं; जो कुछ सीखा उसके योग्य तेरा चरित्र है; तू इच्छा मात्रको हटानेवाली धार्मिकतामें श्रेष्ठ हैं। प्रेमके सभी मार्गोंसे परिचित है ।।४।। टेक

ज्ञानमुम कलैगळुक्किरुप्पिडमावाय
नागारिगत्तिन पिरप्पिडमावाय ।
दानमुम तवंगळै ताँगिनदुन कै
दरुमम यावैयुम तषैत्तदुमिगे ।। (ताये) (५)

मद वेरि कोडुमैयै माट्रुम उन पोरुमै
मट्रवर मदत्तैयुम पोट्रम उन पेरुमै ।
शदमेनुम सत्तिय शान्तियै युरैप्पाय
सन्मार्गत्तवर शिन्दैयिल इरुप्पाय । (ताये) (६)

———

तू ज्ञान और कलाका वासस्थल है। सभ्यताकी जन्मभूमि है। तेरे हाथने दान और तपका धारण किया है। यहीं पर सब तरहके धर्मकी शोभा हुई ।।५।। टेक

तेरी सहिष्णुता धर्मान्धताका परिवर्तन करती है; तेरी बड़ाई पराए धर्मोंकी प्रशंसा करती है। तेरी वाणी सत्य और शान्ति है। अच्छे सज्जनोंके मनमें तू रहती है ।।६।। टेक

१६. कडवुळै अरिन्दवर

पल्लवि

अवरे कडवुळै अरिन्दवरावर
अनैवरुम मदित्तिड तगुन्दवरावर (अवरे)

अनुपल्लवि

तुन्बप्पडुवोर तुयरम सहियार
तुडितुडित्तोडि तुणै शेयप्पुगुवार
इन्बम तमक्केना एदैयुम वेण्डार
यावरुम सुगप्पडा शेवैगळ पूण्डार ॥ (अवरे)

चरणङ्गळ

पशियाल वाडिन एवरैयुम पार्त्तु
पट्टिनि तमक्केन प्परिदपित्तार्त्तु ।
विशैयाय मुडिन्ददै विरुप्पुडन कोडुप्पार
वीण उपचारम विळम्बुदल विडुप्पार ॥ (अवरे) (१)

नोयाल वरुन्दिडुम यारैयुम कण्डु
नोन्बेनच्चेय्वार एल्लात्तोण्डुम ।
तायाम एनवे तम सुगम एदैयुम
तळ्ळिवैत्तरुगिनिल तानिरुन्दुदवुम ॥ (अवरे) (२)

----

१६. भगवानको जाननेवाले

पल्लवि

वे ही भगवानको जाननेवाले हैं—सबके आदरके योग्य हैं—

अनुपल्लवि

(जो) दु:खी लोगोंका दु:ख न सहकर तड़पते हुए उनकी सहायता करने जाते हैं । अपने लिए कोई आनन्द नहीं चाहते, पर इस उद्देश्यसे सेवा निरत हैं कि सब लोग सुखी हों ।।टेक।।

चरण

(जो) भूखसे पीड़ित किसीको भी देखकर, अपना ही उपवास मानकर कृपा पूर्वक उन्हें सान्त्वना देकर शीघ्र ही अपनी शक्तिभर (अन्न) प्रेम पूर्वक देते हैं और व्यर्थकी औपचारिक बातें छोड़ते हैं ।।१।। टेक

बीमारीसे पीड़ित किसीको देखकर, व्रत मानकर सब तरहकी सुश्रूषा करते हैं । कर्तव्य मानकर अपना तो सब सुख छोड़ते और पास रहकर उसकी सेवा करते हैं ।।२।। टेक

१७. तिरुमुडि शूट्टुवोम

पल्लवि

तिरु मुडि शूट्टिडुवोम—देय्वत्तमिष मोषिक्कु । (तिरु)

अनुपल्लवि

वरु मोषि एवरुक्कुम वारिक्कोडुत्तुदवि
वण्मै मिगुन्द तमिष उण्मै उलगरिय । (तिरु)

चरणङ्गळ

पेट्रवळै इगष्न्दु मट्रवरैत्तोषुदा
पेदैमै शेय्दु विट्टोम आदलि नाल नम अन्नै ।
उट्र अरशिषन्दे उरिमै पेरुमै कुन्रि
उळ्ळम वरुन्दिनदाल पिळ्ळैगळ शोर्कुलैन्दोम— (तिरु) (१)

अन्नैयै मीट्टुम अवळ अरियणै मीदिरुत्ति
अकिलम मुषुदुम अवळ महिमै विळंगच्चेय्वोम ।
मुन्नै पेरुमै वन्दे इन्नुम पुदुमै पेट्रु
मुत्तमिष चेल्वियवळ चित्तम कुळिर्न्दिडवे । (तिरु) (२)

तायिन मनम कुळिर्न्दाल तवम अदुवे नमक्कु
दारणि तन्निल नम्मै यारिनिमेल इगष्वार ।
नोयुम नोडियुम विट्टु नुण्णरिवोडु नल्ल
नूलुम कलैगळ एल्लाम मेलुम मेलुम वळर्प्पोम (तिरु) (३)

———

१७. श्री मुकुट पहनावें

पल्लवि

(हम) श्री मुकुट पहनावें, दैवी तमिल भाषाको (टेक)

अनुपल्लवि

आनेवाली सभी भाषाओंको खूब देकर मदद पहुँचाने वाली दानशील तमिलकी सच्चाई दुनिया जाने (इस उद्देश्यसे) ।।टेक।।

चरण

हमने यह भूल कर डाली कि जननेवाली माँको छोड़कर अन्योंकी सेवा की। इससे हमारी माँ अपना राज्य खोकर अपने अधिकार और अपनी बड़ाईसे वञ्चित होकर दुःखी हुई; इसलिए उसकी सन्तान हम भ्रष्ट हुए ।।१।। टेक

माँका उद्धारकर उसे फिर उसके सिंहासनपर बैठाकर संसार-भरमें उसकी कीर्ति फैलावेंगे। उसका पुराना गौरव प्राप्त हो जाए, और भी नया गौरव प्राप्त करे और त्रितमिल (प्राचीन कालमें चेर, चोल, पाण्डच नामक तीन प्रसिद्ध राजाओंसे आदर प्राप्त अथवा इयल, इशै, नाटक—काव्य, संगीत और नाटक—नामक तीन विभागोंवाली) का चित्त प्रसन्न हो इस उद्देश्यसे ।।२।। टेक

माताका मन प्रसन्न हो तो वह हमारे लिए तपस्या (तुल्य) है। अब फिर इस संसारमें कौन हमारा अपमान करेगा? आधि-व्याधि रहित होकर, सूक्ष्म बुद्धियुक्त होकर हम ग्रन्थों और कलाओंकी अधिकाधिक उन्नति करें ।।३।। टेक

१८. देशत्तोण्डु

पल्लवि

देश त्तोण्डुगळ शेय्दिडुवोम
देय्वम तुणै वरक्कै तोषुवोम । (देशत्)

अनुपल्लवि

नम्मुडै नाट्टै नाम आळ
नन्मैगळ मुन्पोल इनि मीळा ।
एम्मुडैय राज्जियम इदु वेन्रे
इन्दिय मगिषन्दिड चोन्दमेन्राल ।। (देशत्)

चरणङ्गळ

पञ्जक्कोडुमैयै ओषित्तिडवुम
बारत नाडिनिच्चेषित्तिडवुम ।
अञ्जुम अडिमैत्तनम नींगि
अन्बिन आण्मै वेण्डुमेन्राल ।। (देशत्) (१)

शोरुम तुणियुम इल्लामल
शोम्बियिगेवरुम निल्लामल ।
वीरुम पुदुमै पोदुवाषविन
विडुदलै यिन्बम वेण्डुमेन्राल ।। (देशत्) (२)

पट्टिनिकिडप्पवर इल्लामल
पडिक्कादवरेना शोल्लामल ।
एट्टिनमट्टिलुम एल्लारुम
इन्बुरुम राज्जियम तेनपडवे ।। (देशत्) (३)

इन्दियर एल्लाम ओरु जाति
यारुक्कुम इंगे ओरु नीति ।
नोन्दवर ओरुवरुम इल्लाद
नूतन अरशियल उण्डाक्का ।। (देशत्) (४)

१८. देश सेवा

पल्लवि

देशकी सेवा करें; ईशको हाथ जोड़ें कि वह हमारी सहायता करे।

अनुपल्लवि

अपने देशका पालन हम करें, पुरानी भलाइयाँ फिर प्राप्य हों (इन उद्देश्योंसे) यदि भारतीयोंको यह मानकर खुशी मनानेका अधिकार हो कि यह हमारा राज्य है तो ।।टेक।।

चरण

अकाल नामक आफतको हटानेके लिए, भारत देशको अधिक उर्वर बनानेके लिए यदि तुच्छ दासतासे निवृत्त होकर प्रेमका प्रताप पाना हो तो ।।१।। टेक

यदि (हम चाहें कि) कोई भी अन्न और वस्त्र-विहीन होकर सुस्त न रहे और यदि हम गौरवमय नवजीवन युक्त होकर स्वतन्त्रताका आनन्द पाना चाहें तो ।।२।। टेक

भूखा कोई न रहे, अपढ़ कोई न कहलावे, और यथा साध्य सब सुख पावें---ऐसा सुखमय राज्य स्थापित करनेके लिए ।।३।। टेक

भारतके सभी लोग एक जातिके हैं; सभीके लिए यहाँ समान नियम (कानून) है ; दु:खी कोई नहीं है–ऐसी स्थिति जिसमें हो वैसा राज्य स्थापित करनेके लिए ।।४।। टेक

जातिक्कोडुमैगळ नींगिडवुम
समरस उर्णाचिगळ ओंगिडवुम ।
नीदिक्केल्लाम इरुप्पिडमाय
निर्कुमोर अरशियल उरुप्पडवे ।। (देशत्) (५)

वरिगळै एल्लाम कुरैत्तिडवे
वरुम्बडि विळैवुगळ निरैन्दिडवे ।
विरिगिरा पोदुप्पणच्चेलवै येलाम
वेट्टिच्चिक्कनम तोट्टिडवुम ।। (देशत्) (६)

पर्णत्तिन पेरुमैयै पोक्किवैप्पोम
पण्डङ्गळिन विलै तूक्कि वैप्पोम ।
गुर्णत्तिन पेरुमैगळ इल्लाद
कुलमुम पिरिदिनिच्चेल्लादु ।। (देशत्) (७)

मनिदनै मनिदन एय्प्पदैयुम
मक्कळै पोरिल माय्प्पदैयुम ।
तनियोरु वषियिल तडुत्तिड ओर
दरुमम उलगिनिल तषैत्तिडवे ।। (देशत्) (८)

सत्तिय वाषविनै नाडुदर्कुम
शान्दप्पेरुमैगळ कूडुदर्कुम ।
उत्तम गांदियिन उपदेशम
उलगुक्कोदुम नम देशम ।। (देशत्) (९)

ताष्न्दव रेन्बवर इंगिल्लै
दरिद्दिरम नमक्किनि पंगिल्लै ।
वाषन्दिडुम वरैयिलुम पुगष शेय्वोम
वानिलुम उयर्वाय वाषन्दिडुवोम ।। (देशत्) (१०)

————————

जाति-भेद की बुराइयाँ दूर करनेके लिए, समताका भाव फैलानेके लिए और न्यायका निवास स्थल हो ऐसा एक राज्य स्थापित करनेके लिए ॥५॥ टेक

कर कम करनेके लिए, आमदनी और उत्पादन बढ़ानेके लिए, विस्तृत होनेवाले सार्वजनिक खर्चको घटाकर किफायत लानेके लिए ॥६॥ टेक

पैसेके महत्वको हम दूर कर देंगे; वस्तुओंकी कीमत हम बढ़ाकर रखेंगे; गुण सम्पन्न न हो ऐसा कोई घराना अब नहीं रहेगा ॥७॥ टेक

मनुष्यको मनुष्य धोखा दे, लोग युद्धमें मर जाएँ—ऐसी रीतिको एक विशिष्ट रीतिसे रोकनेके लिए और संसारमें धर्मकी व्याप्ति हो इस उद्देश्यसे ॥८॥ टेक

हमारा देश संसार भरको उत्तम मानव गान्धीजीके उपदेशका बोध करायगा कि वह सत्य-जीवन ग्रहण करे और शान्तिका महत्व जाने ॥९॥ टेक

"निम्न" नामका यहाँ कोई नहीं है। दारिद्र्य अब हमारे हिस्सेका नहीं है। जब तक जीवित हों प्रशंसा-योग्य काम करेंगे; आकाशसे भी उन्नत होंगे। (अथवा स्वर्गमें भी उन्नत रहेंगे।) ॥१०॥ टेक